रमल - दिवाकर

की

कुञ्जी

लेखक- **पं.बचान प्रसाद त्रिपाठी**

प्रकाशक
ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुक्सेलर
राजादरवाजा, वाराणसी।

रमल दिवाकर की कुञ्जी

ॐ

रमल दिवाकर
की
कुञ्जी

卐

लेखक—

पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी

तांत्रिक शिरोमणि, 'रमल-सम्राट'

कसमन्डा राज्य (सीतापुर)

卐

-: प्रकाशक :-

ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी-१ फोन-३५५०५८

मूल्य : ५०/-

मुद्रक- सावित्री प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसी।

वेदांगपूजन, तान्त्रिक-शिरोमणि

पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी, रमल-सम्राट्

कसमण्डा राज्य (सीतापुर)

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

रमलका प्रादुर्भाव और विवेचन १
रहस्य ८
तपो हि दुरतिक्रमः १४
प्रथम १६ शक्लों के नाम १७
शक्लों की संज्ञा १८
राशिसंज्ञक रूप (शक्लें) १९
चक्रद्वारा शक्लों को तालिका २०
प्रत्येक शक्लों के रूप गुण आदि का वर्णन २१
जीवित-मृतक शक्लों की जानकारी २३
प्रस्तार बनाने की रीति २४
,, ,, का समय २५
रमलज्ञ को शिक्षा २५
पाँसा का निर्माण २६
पाँसा निर्माण विधि २७
प्रश्नकर्ता २८
प्रस्तार बनाने की दूसरी रीति ३३
,, ,, तीसरी रीति ३५

विषय पृष्ठ

अवदह क्रमानुसार १६ शक्लों का रूप तथा स्वामी ३५
अवदह पंक्ति का निर्माण किस प्रकार हुआ ३६
अवदह चक्र ३७
आवश्यकीय समझने वाली बात ३७
विजदह चक्र का निर्माण ३८
,, ,, की तालिका ३९
अङ्क निकालने की रीति ४१
वीजदह चक्र अवधि निकालने की तालिका ४२
बिन्दु गति प्रणाली ४३
सोपान चक्र ४८
त्रिकाल का ज्ञान प्राप्त करना ४८
गुप्तोद्घाटन ७८
दशमभाव के (ग्रहों)का विवरण १३०
मूक प्रश्न निकालने का तरीका १४६
बिन्दु का हाकिम शक्ल तुला (मिजान) १४८

॥ श्री गणपतये नमः ॥

रमल दिवाकर की कुञ्जी

गजाननम्भूत गणादि सेवितं ।
कपित्थ जम्बूफल चारु-भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

रमल

रमल शब्द संस्कृत भाषा का है । इस की धातु का अर्थ है 'क्रीडा' । खेलना जिस क्रिया में हो, वह 'रमल' है ।

छिति जल पावक गगन समीरा,
पञ्चतत्व यह रचित शरीरा ।

गोस्वामी श्री तुलसीदास के सिद्धान्तानुसार सर्व शक्ति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा अपनी माया शक्ति के साथ जव क्रीड़ा करता है तभी यह संसार उत्पन्न होता है। उसके खेलने की सामग्री 'टेनिस, बाल, वैड मिन्टन इत्यादि न होकर छित जल पावक गगन समीरा, हैं। परब्रह्म की माया शक्ति ही प्रत्येक खेल खेलकर उसे रिझाती है। पञ्च महाभूत ही परब्रह्म परमेश्वर की इच्छा (माया) शक्ति से प्रेरणा प्राप्त

कर परमाणु स्वरूप से चलने फिरने लगते हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु नदी सागर पर्वत वन बनने लगते हैं। आकाश की व्यापकता में वायु की गति, तेज की उष्णता, जल की शीतलता तथा पृथ्वी की कठोरता बन जाती है यही सृष्टि का क्रम है। यही महामाया का खेल है।

एतस्मान्महतः आकाशः सञ्जातः

इस महत्तत्व परब्रह्म परमात्मा की इच्छा शक्ति से आकाश उत्पन्न हुआ है। आकाश कोई दिखाई देने वाली वस्तु नहीं होती परन्तु दिखाई देने वाली और न दिखाई देने वाली वस्तुओं का व्यास आकाश ही माना जाता है।

"आकाशाद्वायुः"

अर्थात आकाश तत्व से वायु उत्पन्न हुआ। वायु में गति है। दृश्य अदृश्य कोई भी उत्पन्न वस्तु गति नहीं पा सकती यदि वायु न हो। वायु की स्तुति में वेद का वाक्य है। 'वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता' वायु ही प्रेरणा (एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने की) शक्ति है। परब्रह्म परमेश्वर की क्रीड़ा में 'गति' प्रमुख स्थान रखती है। इस प्रकार आकाश और वायु इन दो तत्त्वों की उत्पत्ति महा माया द्वारा रचित परमेश्वर की क्रीड़ा में हुई।

'वायोरग्निः'

सृष्टि प्रक्रिया में वायु से अग्नि की उत्पत्ति हुई। (ताप शक्ति अग्नि है) जहाँ कहीं भी ताप हो वहाँ अग्नि है चाहे सूर्य मंडल हो—चाहे समुद्र दोनों स्थलों में आतप और बड़वाग्नि के नाम से ताप शक्ति उपस्थित है। सृष्टि के क्रम में वात्याचक्र (बवँडर) बड़ी तीव्र गति से घूमते हुए अग्नि का गोला बना डालते हैं। जो कि सूर्य मंडल इत्यादि ग्रह पिंड एवं नक्षत्र तथा राशिपिंड के नाम से भारतीय ज्योतिष शास्त्र में मिलते हैं।

अग्ने रापः

अर्थात् अग्नि की सृष्टि जल है—जलतत्व अग्नितत्व से उत्पन्न हुआ इसमें अग्नि तत्व और अग्नि तत्व के पूर्वज वायु तत्व का सम्मिश्रण है। अकाश के विकार तो सभी हैं। अतः वायु तत्व की माध्यमिकता से जल तत्व तथा अग्नि तत्व परस्पर विरोधी है अर्थात अग्नि तत्व और जल तत्व की आपस में शत्रुता है। जिस स्थल पर वायु की प्रेरणा शक्ति, अग्नि की शक्ति (तेज के परमाणुओं) को अधिक मात्रा में इकट्ठा कर देती है वहाँ पर जल तत्व को दबाकर अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। तब जल तथा पृथ्वी तत्व जल कर निश्चेष्ट हो जाने और वायु की गति में उड़कर आकाश में लीन हो जाते हैं। यही विनाश का क्रम पर्वतों तथा समुद्रों के प्रलय में होता है।

अद्भ्यः पृथिवी

अर्थात जल तत्व से पृथ्वी की उत्पत्ति होती है।

पृथ्वी तत्व अपने पूर्वज सभी तत्वों को धारण करता है फलतः यही पलक माना जाता है। कोई भी उत्पन्न पदार्थ संसार में पृथ्वी तत्व की अधिकता के बिना रुक नहीं सकता है। चर तथा अचर की स्थिति पृथ्वी का आश्रय पाकर ही होती है। पृथ्वी में ही बीज उगते हैं। पृथ्वी ही पर जीव रहते हैं—जल के समस्त आधार नदी समुद्र इत्यादि पृथ्वी पर ही हैं—पृथ्वी में स्थान पाकर अनेक धातुएँ उपधातुएँ रत्न इत्यादि की खाने होती है। प्रत्येक पदार्थ को धारण करने की शक्ति होने के कारण ही पृथ्वी "धरा" कहलाती है। पृथ्वी की गुरुता को जल तत्व पिघला देता है। और जल की द्रवता को तेज (अग्नि) सुखा देता है इन शोषण तथा द्रवीकरण क्रियाओं में पवन (वायु) की सहायता होती है फिर सूखी हुई और गली हुई वस्तुयें पवन की गति में पड़ कर सर्व व्यापक आकाश में लीन हो

जाती हैं। पृथ्वी का पोषण जल का द्रवी करण (पिघलाना) तेज का शोषण (सुखाना) और वायु का गमन सभी आकाश में समा जाते हैं। आकाश में जिन का लय हो जाता है वह अत्यन्त सूक्ष्म हो जाते हैं। इसी कारण आकाश अत्यन्त सूक्ष्म माना जाता है। आकाश में सभी कुछ है। इस प्रकार इतनी गूढ महा माया की क्रीड़ा (खेल) है ! इसी क्रीडा को जगदीश्वर देखता है और जगदीश्वर को महामाया दिखाती है—प्रस्तुत रमल शास्त्र इसी क्रीड़ा का एक अंग है।

एक बार खेल खेल में महाशक्ति के अन्तर्ध्यान हो जाने पर सदाशिव शक्ति के वियोग में व्याकुल होने लगे। हजारों वर्ष तक ढूँढने पर भी जब शक्ति कहीं न दिखाई पड़ी और उनका शोक (दु:ख) बढता गया तो उन्हींके दु:ख से बना हुआ तमरूप धारी सदाशिव का मानस पुत्र महाभैरव बन कर उन के समक्ष प्रकट हो गया और उनकी विकलता मिटाने के लिये उनके सामने पृथ्वी पर चारों उँगलियाँ खडी गडा दीं। इस प्रकार (⁞) चार बिन्दु बन गये। लेकिन मोह से घिरे हुये सदाशिव इसको कुछ समझ न पाये। महाभैरव का इशारा था इन्ही चारों बिन्दुओं में महामाया की खोज करो। प्रथम बिन्दु तेज (अग्नि) दूसरा वायु तीसरा विन्दु जल चौथा पृथ्वी का क्रम से ऊपर से नीचे को है। महाभैरव समझाना चाहते थे कि आकाश तो अत्यन्त सूक्ष्म तुम्हारी इच्छा अर्थात् महामाया ही है। उसे स्थूल जगत के मूलभूत चार इन्ही तत्वों में तलाश करो। यदि तुम्हारी इच्छा का अंश (महामाया रूपी तेज़ (अग्नि) में हैं तो प्रथम विन्दु प्रकाश मान होगा। यदि कहीं वह बिन्दु गतिमान (वायु) में है तो द्वितीय बिन्दु वायु में देखो। यदि कहीं महामाया रूपी वही इच्छा स्वरूप आकाश तत्व किसी स्थान पर पुष्ट हो रहा है अन्य तत्वों की सहायता से कोई

रूप या नामधारी बन रहा है तो तृतीय बिन्दु जल तत्व में होगा यदि वह परिपूर्ण हो गया है तो जल से नीचे उतर कर पृथ्वी में पहुँच गया है।

अतः पृथ्वी बिन्दु में उसका होना निश्चत समझो। यही महाशक्ति की क्रीड़ा है। रूप धारी पदार्थ अरूप होकर इन्हीं चारों तत्वों में समाजाता है। अपनी इच्छा शक्ति जिसे आकाश कहा जाता है किसी भी तत्व में लीन उसको प्राप्त करलो। परन्तु यह प्राप्त करना तब संभव था जब सदाशिव मोहके फन्दे में न होते। वह तो महामाया का खेल देखते-देखते स्वयं मोह से घिर गये थे। वह कुछ भी इन बिन्दुओं से समझ न पाये। तब महाभैरव ने उनकी विमूढा अवस्था जानकर पृथ्वी पर इन्ही चार विन्दुओं के आगे उसी प्रकार चार विन्दु [⁞ ⁞] और बना दिये। अब उनकी समझ में आ गया, वह जान गये कि महामाया की प्रेरणा से यह तत्व विन्दु ऊपर नीचे और दायें-बायें दोनों ओर चल सकते हैं। परस्पर विन्दुओं का गुणन होने लगा। बिन्दु के सामने विन्दु अर्थात बिन्दु और बिन्दु मिल कर रेखा बनी ० ० यह रेखा दो बिन्दु का प्रतीक (चिन्ह) हैं चाहे इस प्रकार (० ०) स्पष्ट बिन्दु हों चाहे इस प्रकार (—) अस्पष्ट रूप में। परन्तु वे माने दो बिन्दु ही जायेंगे। इस प्रकार दो तत्वों का रूप (० ०) दो विन्दु और एक तत्व का रूप (०) एक बिन्दु यह दो आकार हो गये।

अब सदाशिव ने समझलिया कि दो बिन्दु गति का अवरोध है अर्थात दोनों विन्दु जब मिल गये तो गति का मार्ग बन्द हो गया और एक विन्दु गति का स्वरूप है। चारों तत्व परस्पर सहायक होकर जब अपनी गति से दाये बायें या ऊपर नीचे की स्थिति में होंगे तो कोई रूप (शक्ल) वन जायेगा। सब से पहले प्रथम तत्व तेज अर्थात अग्नि की स्थापना हुई फिर गति मान रूप में (दो विन्दु

रूप में) स्थापित किया तो विशुद्ध ज्ञान प्रधान बृहस्पति ग्रहका रूप ≡̇ वाग्मी बन गया इसे यवनाचार्य लहियान भी कहते है। यही वाग्मी ≡̇ लहियान) ज्ञान (अग्नि) और गति (वायु) को बन्द कर के जब पालन और प्रतिष्ठा के स्वरूप जल तथा पृथ्वी को खुला रखता है तो सूरिकारूपी ≡̣ हो जाता है। इसे यवनाचार्य नसरतुल दाखिल से सम्बोधन करते हैं) केवल वायु तत्व के खुले रहने पर साहस बल कठोरता का चिन्ह मंगल ग्रह बनता है (≡̣) इसे लोहित तथा यवनाचार्य हुमरा कहते हैं। यही वायुतत्व के बन्द होने पर क्रूरता निर्दयता शठता हिंसा का रूप मंगल ग्रह रूपी (−⁚) बन जाता है।

वायु तत्व के साथ साथ जब अग्नि (तेज) तत्व भी खुला रहता है तब प्रभाव शक्ति से परिपूर्ण राजतत्व का चिन्ह ग्रह राज सूर्य का स्वरूप हो जाता है यानी ⁚̲ बन जाती है इसे उष्णुग ⁚̲ कहते हैं और यवनाचार्य इसे शक्ल नसरतुलखारिज कहते हैं।

पुनः वायु तथा पृथ्वी के खुलने पर पोषण, धारण, कल्याण शुभ का स्वरूप सूर्य ही सकल कार्य साधक हो जाता है यानी −⁚ शक्ल तीक्ष्णांशु बन जाती है यवनाचार्य इस शक्ल को कब्जुल दाखिल कहते हैं। अग्नि बिन्दु का अवरोध तथा शेष बिन्दुओं की मुक्ति कवि ⁝ का रूपी हो जाता है यह शुक्र की शक्ल बन जाती है इस शक्ल को यवनाचार्य अतवेदाखिल कहते हैं।

वाग्मी ≡̇ की तरह यह ज्ञान प्रधान न होकर विलास प्रधान है क्योंकि ज्ञान का सूचक अग्नि बिन्दु ¯⁚ बन्द है इसका दूसरा स्वरूप उद्भट विलासिता तथा सन्तति जल विन्दु के अवरोध से बनता है इस प्रकार −⁚ इसको दैत्य गुरू तथा यवनाचार्य फरह कहते हैं। कवि जब विपरीत हो जाता है अर्थात् पृथ्वी तत्व बन्द तथा शेष ऊपर के तीनों बिन्दु खुले रहते हैं तो पात ⁚̲ रूप (केतु) बन जाता है यवनाचार्य इसे शक्ल अतवे खारिज कहते हैं। प्रत्येक प्रकार की कुटिलता

इसकी मुख्य प्रकृति है। जब तेज वायु जल बिन्दु खुले रहते हैं केवल पृथ्वी तथा वायु बिन्दु बन्द रहता है तो ⁝̲ (वक्र) का रूप बन जाता है इसे यवनाचार्य कब्जुल खारिज के नाम से सम्बोधन करते हैं इसमें दोनों खुले बिन्दु छल प्रपच प्रधान इसकी प्रकृत होती है—यह वक्र शक्ल यानी कब्जुल खारिज ⁝̲ शक्ल अशुभ फल दायक होती है।

जब केवल पृथ्वी तत्व का बिन्दु खुला रहता है तथा अग्नि वायु जल तीनों तत्व बन्द रहते हैं तब शनि ग्रह सौरि की शक्ल ≡̣ बन जाती है इस सौरि ≡ शक्ल को यवनाचार्य अकीस शक्ल कहते हैं। इसकी प्रकृत कठोर कुटिल हैं। जब अग्नि तथा पृथ्वी का बिन्दु खुला रहता है और वायु तथा जल दोनों बन्द होते हैं तो वह रूपी यानी शक्ल मन्दग ≑ बन जाता है। इश मंदग ≑ शक्ल को यवनाचार्य उकलह ≑ कहते हैं यह मन्दग भी शनि का रूप कुटिल स्वभाव की शक्ल है।

जब चारों तत्व खुले रहते हैं तो वह चन्द्रमा का रूप शीतांशु बनता है शीतांशु ⁝ को यवना चार्य शक्ल ⁝ तरीख़ कहते हैं—इसके चारों बिन्दु खुले रहने से यह प्रत्येक प्रकार का सहायक है-प्रकृत से अविश्वासी तथा अस्थिर (चलायमान) है। चन्द्रमा का रूप है।

जब केवल जल तत्व खुला रहता है। और शेष तीन तत्व बन्द रहते हैं तो वह बिधु का रूपी ☰ (चन्द्रमा) बन जाता है यवनाचार्य इस शक्ल को बयाज़ ☰ कहते हैं—यह परम मंगलकारी प्रकृत वाली शक्ल है। जब चारों तत्व बन्द होते हैं तो बुध का रूपी सौम्य (☰) हो जाता है। यवनाचार्य इस सौम्य शक्ल ☰ को जमात कहते हैं प्रत्येक तत्व का बन्धन मृतक का प्रतीक (चिन्ह) है प्रत्येक वस्तु का विध्वंस यह सौम्य यानी जमात ☰ बनाता है—जब तेज यानी अग्नि तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों बन्द होते हैं तो बुध रूपी ⁝̲ यह बोधन शक्ल बन जाती है इस बोधन को यवनाचार्य इजतमा ⁝̲ के नाम से सम्बोधन करते हैं यह शुभ फल देने वाली शकल है।

इस प्रकार महामाया की क्रीडा यानी खेल का रहस्य इन ग्रहों के रूप से चार और चार बिन्दु (⁞ ⁞) बन कर महा भैरव ने सदा शिव को समझाया था। हमारे यवनाचार्य सदाशिव को हजरत आदम के नाम से सम्बोधन करते हैं और महाशक्ति मायाको (हव्वा) कहते हैं तथा महाभैरव को जिबराईल कहते हैं।

रहस्य

सृष्टि में वही है जो उत्पन्न हुआ है। जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन मिटेगा अर्थात् वह नश्वर है आज उत्पन्न हुआ कल्ह नष्ट हुआ। इसका इतिहास काल में धरा रहता है—काल नश्वर नहीं है। समुद्र पर्वत देश इत्यादि भी उत्पन्न पदार्थ काल पाकर नष्ट हो जाते हैं। परन्तु अविनाशी काल तत्व न तो उत्पन्न ही होता है और न नष्ट होता है। आकाश के समान काल भी सत्य स्थिर एवं उत्पत्ति रहित माना गया है ल्वनि मेष यानी घटी पल अहोरात्र सप्ताह पक्ष मास वर्ष इत्यादि काल की मनुष्य कृत संज्ञाये नष्ट हुआ करती है तथा वसन्तादि ऋतुएँ प्रारम्भ होती हैं और समाप्त हो जाती हैं।

परन्तु काल जिसे महाकाल कहा जाता है उत्पत्ति विनाश से शून्य शाश्वत है। अर्थात अविनाशी है। सूर्य की गति से मनुष्य ने उसके इतिहास को जाना है क्योंकि भूमंडल के अत्यन्त समीप सूर्य ग्रह ही है।

भारतीय शास्त्रों में जिस शास्त्र ने इस काल तत्व का विवेचन किया है उसे ज्यौतिप कहा जाता है। भारतीय ज्यौतिप शास्त्र अनेक अङ्गों से परिपूर्ण होता है। इसमें सामुद्रिक शकुन और प्रश्नशास्त्र प्रमुख है। इनकी प्रमुखता के कारण तत्कालिक फल ज्ञान होता है। सामुद्रिक शास्त्र के द्वारा नेत्रों के समक्ष पड़ते ही मनुष्य पशु पक्षी तथा वनस्पति आदिका सारा इतिहास प्रत्यक्ष हो जाता है। इसी

प्रकार शकुन तथा प्रश्न शास्त्र भी है। प्रस्तु पुस्तक प्रश्न शास्त्र की है।

यह तो निश्चित सिद्धान्त है कि पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश इन्ही पञ्च महाभूतों से संसार बना है और इन्हीं के आधार से स्थिर रहता है तथा इन्ही का परम प्रकृति में लय हो जाना प्रलय है। परम प्रकृत को ही इस पुस्तक में अब तक महा माया कहा गया है।

मनुष्य के भी सिर से पैर तक समस्त शरीर में यही पाँचो तत्व व्याप्त हैं। इनमें पृथ्वी सर्वाधिक स्थूल है। उसके कम स्थूल जल है, उससे कम स्थूल वायु है, सबसे कम स्थूल तत्व अग्नि है। और आकाश तत्व केवल सूक्ष्म है। सूक्ष्म होने के ही कारण आकाश सर्व व्यापक है। आकाश में ही यह चारों तत्व अर्थात पृथ्वी जल वायु अग्नि व्याप्त (घुसे हुए) हैं।

प्रश्न शास्त्र में आकाश महातत्व को "मन" कहा जाता है। आकाश के समान ही मन सर्व व्यापक होता है। मन की सर्व व्यापकता को प्रमाण योग शास्त्र देता है। मनुष्य के मन पर चिपके हुए संस्कारों के बन्धनों को यम नियम इत्यादि योग के अष्टाङ्गों द्वारा जब छुटा दिया जाता है तो मानव मन ईश्वर हो जाता है। संस्कारों में बँधे हुए मन में इच्छायें होती हैं। इन इच्छाओं की पूर्ति या आपूर्ति के निर्णायक रमल परिच्छेद में दिखाये गये सूर्यादि ग्रह होते हैं।

जो ग्रह इच्छा पूर्ति के लिए मन को सुख के अनुभव का अवसर देता है वह शुभ ग्रह कहा जाता है और जो मन के सुख के विपरीत दुःख का परिचय देता है वह अशुभ ग्रह माना जाता है। तात्पर्य यह कि मन को इस रमल शास्त्र में आकाश तत्व माना गया है। पाँच महाभूतों से बनी हुई इस पाञ्च भौतिक सृष्टि में मन मानव की इच्छा तथा शेष तत्व मानव का उपयोग है। जल (समुद्र इत्यादि)

पर्वत स्थल आदि पृथ्वी के रूप तथा वृक्ष, पशु, पक्षी इत्यादि पार्थिव विकार समस्त जगत मानव के कर्म करने की सामग्री मानी जाती है।

कर्म करना ही मनुष्य के मन का स्वाभाविक गुण है-कोई क्षण मात्र भी बिना कर्म किये हुये कभी रह ही नहीं सकता है। यह व्याख्या कर्म करने की गीता में कही गई है। किसी इच्छित कर्म के करने में रुकावट पडने से मनुष्य को दुःख का अनुभव होता है। महा माया का खेल न देख पाने के कारण ही सदाशिव को दुःख भोगना पड़ा तभी महा भैरव द्वारा इस अपूर्व शास्त्र की उत्पत्ति हुई। फलतः मन को या इच्छा को ही रमलज्ञों ने आकाश तत्व मानकर प्रश्नकर्ता की इच्छा का रूप दिया और शेष अग्नि वायु जल पृथ्वी तत्वों में प्रत्यक्ष न दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं को ढूँढने लगे।

भारतीय ज्यौयिष शास्त्र में अदृश्य ज्ञान की जितनी भी प्रणालियाँ हैं, वे सभी खगोल विद्या पर निर्भर हैं। ग्रह नक्षत्र तारिकायें तथा राशियों द्वारा विचार किया जाता है। इनके रहस्य का समझना ही ज्यौतिष शास्त्र का अध्ययन होता है। ज्यौतिषशास्त्र बहुत विशाल है—एक मनुष्य की पूरी आयु भी उसके पढ़ने समझने-समझाने तथा अनुभव के लिए अपर्याप्त है। जैसे कोई कह दे कि जल हम देख सकते हैं तो यह सन्देह स्पष्ट है कि भूमण्डल पर स्थित जलतत्व को एक व्यक्ति कैसे देख सकता है। इस अवसर पर आवश्यक हो जाता है कि यदि मन सस्कारों के बन्धनों में न फँसा हो तो क्षण भर में समस्त भूमंडल के जलतत्व का उसे ज्ञान हो जाय।

परिणामतः ज्यौतिष शास्त्र के अध्ययन के साथ साथ कुछ आत्मिक अध्ययन योगाभ्यास विशेष सहकारी होते हैं। सृष्टि के प्रवाह में संस्कारों का प्रवाह भी होता है। खेत में बीज बोया गया. जिस प्रकार उग कर वृक्ष बन कर फूल और फल देकर समाप्त हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के मनमें उठा हुआ एक संस्कार कर्म करके समाप्त हो

जाता है। वृक्ष अपने समाप्त होने के समय जिस प्रकार भविष्य के लिये बीज दे देता है उसी प्रकार मनुष्य के संस्कार कर्म समाप्त के बाद संस्कार दे देता है।

कर्म से ही संस्कार बनते हैं और संस्कार पुनः कर्म का रूप धारण करते हैं। यही सदा चलते रहने वाला संस्कार का चक्र है। हम पहले लिख चुके हैं कि ग्रहराज सूर्य हैं इन्हीं ग्रहराज सूर्य की गति से काल का पता ज्यौतिषशास्त्र में लगाया जाता है। सूर्य ही एक अहोरात्र में आठ प्रहर की साठ मुहूर्त एवं प्रत्येक मुहूर्त में साठ पल तथा प्रत्येक पल में साठ विपल व्यतीत होने की सूचना देता है। १५ अहोरात्र के प्रमाण से पक्ष का ज्ञान होता है। दो पक्ष का मास, दो मास की एक ऋतु तीन ऋतु का एक अयन, दो अयन का एक सम्वतसर होता है।

यही प्रक्रिया ज्यौतिषशास्त्र में काल विज्ञान की है जिसका ज्ञान ग्रह राज सूर्य की गति से होता है।

जिस प्रकार विपल और पल में समाप्त हो जाने वाले कर्मों का ज्ञान कर्ता को नहीं रहता उसी प्रकार उनके संस्कारों का भी ज्ञान नहीं रहता है। परन्तु मुहूर्त, प्रहर, अहोरात्र, पक्ष इत्यादि बढ़ती हुई काल की सीमा में किये गये कर्मों का ज्ञान तथा उनके संस्कार मन में जो कि आकाश तत्व माना गया है तथा जिसमें पृथ्वी जल वायु तेज (अग्नि) चारों महाभूत समाये हुए हैं पड़ ही जाते हैं। जिस प्रकार वह कठिन है कि कोई व्यक्ति यह ज्ञान कर ले कि सृष्टि के आदि काल से अब तक कितने अहोरात्र या कितने मुहूर्त पल विपल व्यतीत हो चुके हैं। उसी प्रकार यह भी जान लेना कठिन है कि सृष्टि के आदि काल से अब तक अपने मन पर कितने संस्कार पड़ चुके है। किन्तु सूर्य की गति के ज्ञान से भूत और भविष्य काल के इन दोनों भागों का ज्ञान सम्भव हो जाता है। और इसी काल ज्ञान से बताया जाता है कि अमुक नगर इतने सहस्र वर्ष पूर्व बसाया गया था। सूर्य की गति के साथ साथ

पृथिव्यादि महाभूतों की गतिका ज्ञान करके बताया जाता है कि इतने सहस्त्र वर्ष बाद अमुक सागर रेतीला मैदान हो जायेगा और अमुक रेतीला मैदान सागर का रूप बन जायेगा। यह तो बड़े परिवर्तन हैं किन्तु छोटे-छोटे परिवर्तन हमारे प्रतिदिन के जीवन में ऋतु चक्र तथा इस में उत्पन्न होने वाले फल धान्यादि के रुप से हमारे कर्म के सहायक हैं। यह जानकर कि चैत्र के मास में जौ, चना, गेहूँ, का खेत पककर अन्न हमारे घर आजायेगा। हम कार्तिक में बुआई करते हैं। जब हम पहले जानते हैं कि ८ या १० वर्ष के वाद हमें इष्ट फलों की प्राप्ति होगी तभी हम हजारों रुपिया खर्च करके बाग लगाते हैं। जिस काल ज्ञान हमें सूर्य ग्रह से प्राप्त होता है इसी प्रकार कर्म के ज्ञानका अधिष्ठाता देवता सूर्य ही हैं। जब कर्म किया जायेगा तव काल भी तो होगा ही कोई भी कर्म देश और काल को अलग करके नहीं किये जा सकते। किसी को हमने कुछ द्रव्य दिया था। अब मांगते हैं तो वह पूछता है कब और कहां दिया था—कबका अर्थ है काल और कहाँ का अर्थ है देश उसे बताना पड़ेगा कि होली के दिन तुमने २०) रु० लखनऊ स्टेशन पर माँगे थे। प्रत्येक कर्म का साक्षी काल है। काल सूर्य ग्रह की गति है। इसलिये सूर्य ही ज्यौतिष शास्त्र का आधारतम्भ है।

संसार वासियों का बन्धु कर्म का साक्षी सूर्य है। क्योंकि कालका साक्षी है। वेदों में कर्म का साक्षी संसारका नेत्र वेदका शरीर सूर्य माना गया है "कर्म साक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धु स्त्रयी तनु :" इस प्रकार सूर्य के नाम कोष में गिनाये गये हैं। इस अखंड ब्रह्माण्ड में भरा हुआ अखण्ड ज्ञान का भंडार सूर्य ग्रह है। ज्ञान की सत्ता कर्म की पूर्वाअवस्था है। पहले ज्ञान है फिर कर्म। पहले ज्ञान से मनुष्य एक नक़शा स्वयं अकेले बना लेता है तत्पश्चात अपार धन व्यय करके असंख्य मनुष्यों की सहायता से उसे नये (मकान) इमारत बन जाती है।

भारतीय शास्त्र कारों ने सूर्य को ज्ञान और कर्म को देवता माना है कर्म करने वालों को और ज्ञान के इच्छुक को सूर्य से शक्ति प्राप्त होती है। शक्ति प्राप्ति का साधन उपासना है। सूर्य की उपासना में मनन का मंत्र गायत्री है। गायत्री में मनन किया जाता है "धियोयोनः प्रचोदयात" हम उस देवता का अपनी बुद्धि से मनन करते हैं जो हमारी बुद्धि को कर्म अथवा ज्ञानको तीव्र करे।

तीव्र करने का अभिप्राय होता है अनेकानेक संस्कारों में बँधी हुई हमारी बुद्धिको निर्मल करे, हम जो कर्म करना चाहते हैं संसारके प्रवाह में निरन्तर पड़े रहने से उस कर्म के विरुद्ध, हमारी बुद्धि पर पड़े हुये समस्त संस्कारों को जागृत कर दे। उपासना भी संस्कार है। एक बार किये गये कर्म का प्रभाव संस्कार रूप में मन पर पड़ता है, उसी संस्कार के प्रभाव से दुवारा कर्म होता है। इसी क्रम को अनेक बार करने वाली क्रिया अभ्यास कही जाती है। वाल्य काल का अभ्यास जीवन पर्य्यन्त चलता है। पुनर्जन्म मानने वाले भारतीय शास्त्रकार महर्षियों के मतानुसार एक जन्म के संस्कार सर्वदा चलते हैं।

अभ्यास के साथ की गई उपासना संस्कारों का विनाश करती है। रजो गुणी तथा तमोगुणी संस्कारों का विनाश करने के लिये जो सतो गुण प्रधान उपासना एक वर्ष पर्य्यन्त की जाती है। वह रजो गुणी तथा तमो गुणी प्रवृत्तियों को (आदतों को) मन्द कर देती है। अभ्यास बढ़ता रहा। उपासना चलती रही तो मन्द हुई प्रवृत्तियाँ बिल्कुल शान्त हो जाती है फिर क्रमशः शनैः शनैः नष्ट हो जाती हैं।

यह करना चाहिये यह न करना चाहिये, मन में उठते हुये इस संकल्प विकल्प को बुद्धि कहा जाता है। बुद्धि में जिस प्रकार की भावना जितनी अधिक समयतक भरती रहेगी वही स्वरूप बुद्धि ले लेती है। शिकार खेलने वाले व्यक्तियों के मनमें दया के अनुरूप भावना नहीं होती। वह व्यक्ति सुखी पशु पक्षी की मृत्यु को बुरा नहीं मानते हैं।

गोली लगने के बाद पशु या पक्षी को जो वेदना होती है जिस कष्ट से उसके प्राण निकलते हैं, उसकी तड़पन उसका घिसटना चीखना चिल्लाना उन्हें अपने परिश्रम का सुफल जान पड़ता है। वह अपने निशाने को अचूक मान कर अभिमान में भर जाते हैं। शनैः शनैः बढती हुई उनकी यह भावना समस्त कोमल भावनाओ को निगल जाती है।

ठीक इसके विपरीत जब अहिंसा की भावना मनमें स्थान पाने लगती है तो हिंसा की समस्त भावनाओं को निगल लेती है। वह समझ ही नहीं पाता है कि कोई जीव किसी भी जीव के विपरीति किस प्रकार होता है। सतो गुण की भावना को प्रबलता देने में तथा रजो गुण और तमोगुण को दबाने में मन के जितने सतोगुण से अतरिक्त भाव हैं सभी दब जाते है। दबने से निश्चेष्ट हो जाते हैं और निश्चेष्ट होकर कभी न कभी सत्व गुण में लीन होकर ही रहते हैं। किसी भी प्रकार की भावना को बार बार मन में आना अभ्यास है। इस अभ्यास के बल से अभ्यास की जाने वाली भावना प्रबल होगी तथा उसके विरुद्ध भावना निर्बल होगी इसी अभ्यास का नाम 'तप' है। त्याग वैराग्य तपस्या इत्यादि शब्दों से इसका व्यवहार किया जाता है। देश और काल की सहायता से जब साधक इस प्रकार से तपश्चर्य्या में प्रवृत्त होता है तो संस्कार विजय हो जाता है।

इस भारतवर्ष में पूर्व काल में यह तपश्चर्या या संस्कार विजय साधारण दैनिक जीवन का अङ्ग था। एक उदाहरण इसी प्रकार का प्रस्तुत किया जाता है।

तपो हि दुरतिक्रमः

तपस्या का उल्लङ्घन नहीं हो सकता। मनुस्मृति का वचन है कि "जो दुष्कर होता है, जो नहीं मिल सकता, जो भी कुछ असम्भव है। वह सब तपोबल से मिल जाता हैं।

‘तपो हि दुरतिक्रमः ।”

बात अब से सात सौ साल की प्राचीन है। एक ऋषि कमलापति हुए थे। वे विष्णु के परम भक्त तथा वैष्णवी माया बुद्धि स्वरूपा गायत्री के उपासक थे। वह समय आजकल के समय से बहुत भिन्न था। ब्राह्मणों के शरीर का ब्रह्मतेज तथा ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) ही सर्वश्रेष्ठ धन माना जाता था। धन का ऐश्वर्य तुच्छ समझा जाता था। ऋषि कमलापति ९० वर्ष तक अपना सरा जल पीते रहे। इसके बाद वह नश्वर शरीर के बन्धन से मुक्त हो गये।

ऋषि कमलापति के पुत्र पं० भोलानाथ जी हुए। पिता के सकल गुणों से युक्त महातपस्वी शैव सिद्ध हुए। इन्होंने योगाभ्यास से ८५ वर्ष की अवस्था में अपने कलेवर का विसर्जन किया।

पं० भोलानाथ जी ने अपने पुत्र पं० बलदेव प्रसाद जी को बताया कि अब संसार में परिवर्तन अधिक हो गया है। शरीर पालन तथा परिवार पालन के साथ ब्राह्मणों को तपश्चर्य्या करनी पड़ती है। अत एव तुम अपने जीवन में तपश्चर्य्या के साथ साथ लोकोपकारको भी स्थान देते रहना। पिता की आज्ञा के अनुसार चलने के कारण वह बहुत ही विख्यात हो गये। जीवन पर्य्यन्त लोकोपकार करते रहे। रोगी, दरिद्र शत्रु पीडित अनेक प्रकार के आर्त प्राणियों को शान्ति देते हुए उनका जीवन काल ८५ वर्ष तपस्या पूर्ण रहा।

श्री पं० बलदेव प्रसाद के पुत्र पं० क्षमाधर जी ने भी बहुत तप किया। वह अपने घर के समीप श्री नैमिष क्षेत्र के निवासी रहे। श्री नैमिष क्षेत्र में तप करते उन्हे जगदीश्वरी जगदम्बा के प्रताप से अतुल शक्ति प्राप्त हुई। उनसे एक चुटकी भस्म प्राप्त करने के लिये बड़े बड़े राजे महराजे सालों तक उनके स्थान पर पड़े रहते थे। पूरे ८८ वर्ष की आयु में आपका शरीर शान्त हुआ।

पं० क्षमाधरजी के पुत्र श्री पं० हीरालाल जी त्रिपाठी ने अपने जीवन में केवल तप किया तथा उनकी दीर्घायु १०५ वर्ष की रही।

श्री पं० हीरालाल जी ने अपने पुत्र पं० नन्दकिशोर जी त्रिपाठीको समस्त वेदवेदाङ्गों में भली भाँति शिक्षित करके चिन्ता हरण सिद्ध यंत्र का परिचय दिया और आज्ञा दी कि दीन अनाथों का इससे कल्याण किया जाय। पं० नन्दकिशोर जो ने जीवन ८८ वर्ष श्री हनुमान देव के पूजन में और यंत्र द्वारा लोकोपकार में बिता दिये। इस प्रकार चिम्ता हरण सिद्ध यंत्र त्रिपाठी कुल में अवतरित हुआ था।

पं० नन्दकिशोर त्रिपाठी के पुत्र पं० मिश्रीलाल जी ने इस यंत्र से खूब लोकोपकार किया तथा उन्हे धन सम्मान आदि भी अतुल प्राप्त हुआ। भारतवर्ष के लुप्त प्राप्त रमल शास्त्र को विशेष श्री मिश्रीलाल जी ने किया।

इस प्रकार ज्यौतिष, कर्मकाण्ड, तंत्र तथा रमल शास्त्र के वह अगाध सागर हुए।

प्रस्तुत ग्रन्थकार के रचयिता के पितामह पं० मिश्रीलाल जी के पुत्र हुए। तंत्र शास्त्रों का प्रगाढ अध्ययन तथा देश विदेश में मिलने वाले सिद्ध ज कात्रों सत्संग इनका जीवन लक्ष्य रहा। ज्यौतिप तथा रमल विद्या तो यह अपने कुल की परम्परानुसार प्राप्त ही किये हुये थे। इनका प्रातः स्मरणीय नाम था श्री पं० लालताप्रसाद जी त्रिपाठी था। इनके रचित रमल शास्त्र के अनेक हस्तलिखित ग्रंथ अब भी तंत्रालय में मौजूद हैं।

इनके प्रिय पुत्र श्री पं० मनसुखराम जी तथा पं० दुर्गा प्रसाद जी दोनों विख्यात भविष्यद् वक्ता हुए। तान्त्रिक कर्म सीखने इन दोनों के पास बड़ी वड़ी दूर से विद्वान आते थे। पं० मनसुख राम जी के पुत्र श्री पं० हरिनन्दन प्रसाद जी त्रिपाठी हुए जो कि अपने जीवन काल में रजवाडों के सहायक तथा विजय यात्रा के भविष्यद् वक्ता के रूप में देव तुल्य पूजे गये। पं० मनसुख राम जी के पुत्र पं० हरिनन्दन प्रसाद जी जन्म भर श्री हनुमान देवता की उपासना तथा अतिथ सत्कार

करते रहे। मैंने अपने बाल्यकाल में इन के प्रभाव को देखा है। मनुष्य का आकार देखकर उसके भूत भविष्य वर्तमानका हाल वह बताया करते थे। यह महान आत्मा प्रस्तुत पुस्तक के रचयिता त्रिपाठी रमल रहस्य के जनक है। इनका परिचय पुस्तक के अन्त में दिया गया है।

अब हम प्रस्तु रमल रहस्यका श्री गणेश करते हैं—जिस प्रकार किसी विद्याके श्री गणेश में सर्वप्रथम वर्णमाला का रूप याद किया जाता है फिर स्वर व्यंजन का ज्ञान कराके संयुक्त अक्षरों को बताया जाता है फिर क्रमशः सरल शब्द का अभ्यास कराके आगे पढ़ने का अभ्यास कराया जाता है। इसी तरह रमल शास्त्र में सर्व प्रथम शक्लों के नाम रूप का ज्ञान करना बहुत ही आवश्यकार्य है इस विद्या में केवल १६ शक्लों का याद करना तथा उनके रूपों को कठस्थ करना जरूरी है वह यह है:—

प्रथम १६ शक्लों के नाम यह हैं

शुभ या अशुभ	हिन्दी भाषामें नाम	फारसीभाषा में नाम	नामरूप
शुभ	वाग्मी	लहियान	
शुभ	तीक्ष्णांशु	कब्जुल दाखिल	
अशुभ	पात	कब्जुल खारिज	
नपुंसक	सौम्य	जमात	
शुभ	दैत्य गुरू	फरह	
अशुभ	मन्दग	उक़ला	
अशुभ	सौरि	अंकीस	
अशुभ	लोहित	हुमरा	
शुभ	विधु	बयाज	
शुभ	उष्णुग	नसर तुल खारिज	
शुभ	सूरि	नसर तुल दाखिल	

अशुभ	धक्क	अतवे खारिज	
अशुभ	आर	नकी	
शुभ	कवि	अतवे दाखिल	
नपुंसक	बोधन	इजतमा	
शुभ	शीतांशु	तरीक	

जरूरी शक्ल ≡ तथा ⫶ नपुंसक इस कारण से हैं शुभ के साथ मिलने से शुभफल देती हैं तथा अशुभ के साथ मिलने से अशुभ फल देगी।

रमल प्रेमियों को चाहिये कि रमल की वर्णमाला की शक्लों के नाम तथा रूप जबानी याद कर लें जब १६ शक्लें कंठाग्र हो जावे और उनके बिन्दु पाई के क्रमशः रखने की रीत याद हो जावें तब देखें कि प्रत्येक शक्ल किस तत्व की है तत्व चार माने गये हैं (१) अग्नि (२) वायु (३) जल (४) पृथ्वी सोलह शक्लों में चार शक्लें अग्नि की चार वायु की चार जल की चार पृथ्वी की होती है। चोरों तत्वओं के भिन्न-भिन्न रूप इस प्रकार है।

चित्र नं० (१)

अग्नि (पूर्वदिशा) वायु (पच्छिम) जल (उत्तर) पृथ्वी (दक्खिन)

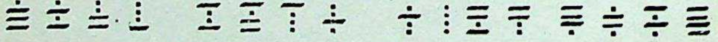

अग्नि वायु जल पृथ्वी क्रमशः पूर्व पच्छिम उत्तर दक्खिन दिशा से सम्बन्ध रखती हैं।

शक्लों की संज्ञा

इन १६ शक्लों में चार शक्लें दाखिल तथा चार खारिज है चार मुनकलिब चार साबित है दाखिल को आगम खारिज को निर्गम मुनकलिब को चर साबित को स्थिर कहते हैं।

चित्र नं० (२)

दाखिल के रूप **खारिज के रूप** **चर के रूप** **स्थिर के रूप**

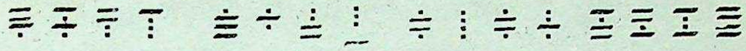

जानने की विधि—जिन शक्लों में ऊपर पाई (—) नीचे बिन्दु है (·) वह दाखिल है तथा जिनके ऊपर बिन्दु (·) तथा नीचे पाई है वह खारिज या निर्गम कहलाती हैं जिन शक्लों में ऊपर तथा नीचे बिन्दु होता है उनको मुनकलिब या "चर" कहते हैं जिन शक्लों में ऊपर तथा नीचे दोनों पाई हों वह शक्ल साबित या स्थिर कही जाती है देखो चित्र नं० (२)

राशि संज्ञक रूप (शक्लें)

बारह राशियाँ होती है ≐ ⩦ यह धन और मीन राशि की शक्लें हैं इनके स्वामी बृहस्पति हैं तथा ≐ व ⩦ इन के स्वामी सूर्य हैं सिंह राशि हैं तथा ≡ व ⩦ यह मिथुन राशि की शक्ल है इन के स्वामी बुध हैं। और शक्ल ⩦ तथा ⋮ कर्क राशि है स्वामी चन्द्रमा हैं तथा शक्ल ÷ और ⩦ यह तुला राशि से सम्बन्ध रखती हैं इनका स्वामी शुक्र है और ≐ और ≐ कुम्भ राशि है स्वामी राहु केतु हैं तथा ≡ और ÷ यह मकर राशि है इनके स्वामी शनि हैं और ≐ व : वृश्चिक राशि हैं इनके स्वामी मंगल देव हैं।

चक्र द्वारा प्रत्येक शक्लों की संज्ञादि तालिका

नं०	नामशक्ल		स्वामीग्रह	स्वामीआकाश	दिन में	रात में
१	≐	÷	सूर्य	चौथे	इतवार	बृहस्पतिवार
२	÷	⊥	शुक्र	दूसरे	शुक्र	मंगलवार
३	≣	⌶	बुध	तीसरे	बुध	रविवार
४	≡	⋮	चन्द्रमा	प्रथम	सोमवार	शुक्रवार
५	÷	≡	शनि	सातवें	शनिवार	बुधवार
६	≐	≑	बृहस्पति	छठे	बृहस्पति	सोमवार
७	≡	÷	मंगल	पाँचवे	मंगल	रविवार
८	÷	⊥	राहुकेतु	×	शनिवार	मंगलवार

नोट—प्रत्येक शक्ल के सामने दिन रात का जो निर्णय लिखा गया है। यह पुत्र अथवा कन्या दिन में होगा या रात में यदि दिन में होगा तो शक्लों के आगे जो दिन लिखा गया है। उसी दिन बालक होगा। यदि रातको जन्म होगा तो शक्ल के आगे रात की तालिका दी गई है। प्रश्नकर्ता को उसी रात में जन्म होना बताया जायगा। जिसका तरीका प्रश्नोत्तर निकालते समय आगे दिया जायेगा।

पुत्र अथवा कन्या की शक्लें

पुरुष संज्ञक शक्लें	स्त्री संज्ञक शक्लें	नपुंसक संज्ञक शक्लें
(≐ ≐ ÷ ≡ ≐ ⊥ ÷ ÷)	(÷ ≡ ≑ ⊤ ⋮ ≡)	(≣ ⌶)

प्रत्येक शक्लों के रूप गुण आदि का वर्णन

$\substack{\cdot \\ - \\ - \\ -}$ यह ब्राह्मण है गोरा वदन है धर्म में आसक्त हो पढ़ा-लिखा चतुर विद्वान पण्डित मधुर भाषण मीठी वाणी बोलने वाला छोटी ग्रीवा वाला श्याम नेत्र वाला लम्बा शरीर एक दाँत नीचे का टूटा या कीड़ा खाया हो सिर पर जख्म या निशान जलने का अथवा सिर के बीच बाल गिरे हों या गंजा हो ।

$\substack{- \\ \cdot \\ - \\ \cdot}$ श्रेष्ट क्षत्रिय, गेहुँआ रंग नम्रता से बात करने वाला श्याम नेत्र वाला शिल्प विद्या (कारीगरी में निपुण) चतुर मध्यम डील वाला, बड़ा सिर, लम्बी गर्दन, भौंहें मिली हुई, पेट बड़ा जिसमें बल पड़े हों, हाजिर जवाब वाला हो

$\substack{\cdot \\ - \\ \cdot \\ -}$ नीच जात का (म्लेच्छ) हो झगडालू बकवादी । फोड़े फुँसी से घिरा हुआ उसका शरीर हो बिल्ली की भाँति नेत्र वाला—कड़ी आवाज बोलने वाला—काला तथा पीला अथवा सावला रंग हो—चुगुलखोर । निन्दक हो मुख पर चेंचक के दाग पान मोटे दाँत छोटे छाती पर बाल हों ।

$\substack{- \\ - \\ - \\ -}$ गेहुँआ रंग वाला शूद्र जाति के (कर्म) करने वाला चित्रकारी में रुचि रखने वाला तथा गुणवान भी हो बडी नाक चौडा मस्तक-बदन में फोड़े फुंसी के चिन्ह दाढी बडी पक्के रंग वाला मुख काले नेत्र बड़ा मुख वाला हो ।

$\substack{\cdot \\ \cdot \\ - \\ \cdot}$ दीर्घ शरीरवाला लिखने पढ़ने में निपुण हँस मुख हो भृकुटी कटी हुई हो काले तथा सूक्ष्म नेत्र वाला-मीठा भोजन की रुचि रखने वाला मँझोला डील हो सुन्दर स्वरूप वान बिना दाढ़ी के हो पतली नाक गोल चेहरे पर चिन्ह या तिल हो तथा कान के नीचे दाग जख्म या फोड़े का हो ।

$\substack{\cdot \\ - \\ - \\ \cdot}$ काले वर्ण वाला लम्बा मुख नीच जात वाला मोटा तथा ऊँची नाक हो ठगना डील हो 'छोटा सिर हो चौड़ा मुख हो, छोटे दाँत हों,

बड़ा पेट हो लम्बी दाढ़ी हो, छोटे पैर, लम्बी पिंडुली चहरे के बाईं ओर या सिर पर निशान लहसुन या तिल हो दाहिनी आँख अथवा दाहिने पैर में दोष हो।

≡ कृष्णवर्णकाश्तकारी करने वाला काले नेत्र वाला, कुरूप शरीर वाला गृह कार्य में कुशल गोल चेहरा-मोटे होंठ-सिर बड़ा, दाँत बड़े-बड़े आधे नीचे के लम्बे आधे बड़े यह स्त्री का हुलिया है पुरुष हो तो काला रंग लम्बा डील आँखों तथा दाँतों में कोई रोग हो।

≡ यह क्षत्री जात से सम्बन्ध हो शूर वीर हो शास्त्रों का ज्ञाता, जीर्णोद्धार करने में निपुण-चोरी करने वाला लम्बा डील दाढ़ी में चिन्ह लहसुन या तिल हो मुख पर दाग चेचक के हो—लड़ाकू प्रकृत का हो।

≡ गौर वर्ण हो ब्राह्मण जात हो सुखी हो देवता का पुजारी हो, रूपवान हो शरीर सुडौल हो मँझोला डील वाला हो भौंहें मिली हुई हों, छोटा मुख वाला बड़ी-बड़ी स्याह आँखें, लम्बे बाल चौड़ी छाती, दाँत खुले हुये—दाहिनी छाती पर तिल हो पेट पर जले का चिन्ह हो तथा बगल में तिल हो।

≡ उत्तम कुल का क्षत्रिय, राज कर्म में रत, धर्म युत, दीर्घ शरीर वाला गौर वर्ण सुन्दर नेत्र वाला, जल के समीप निवास करने वाला: नाक ऊँची, छोटा सिर, छोटी दाढ़ी चौड़ी छाती—आवाज भारी बारीक उँगलियाँ गोल मुख पर चिन्ह तिल आदि का हो।

≡ गोरे वर्ण का ब्राह्मण तपस्वी। लम्बा डील गोल मुख हो तिल चिन्ह से युक्त—बड़े नेत्र वाला यदि यह शक्ल प्रस्तार के सातवें घर में हों तो पुरुष—यदि अन्य स्थान पर हो तो स्त्री संज्ञक समझें, बड़ी नाक, बड़ा सिर, बड़े पैर तथा पैर में निशान चोट या जले का हो।

(≡) म्लेच्छ वर्ण शरीर में घाव के चिन्ह हों दुबला शरीर-काला रंग-निर्धनी मुख में बदबू आती हों लम्बा डील बड़ा पैर, छोटा सिर, पतली गर्दन नीचे का दाँत टूटा या कीड़ा खाया हुआ हो—गरीबी दशा में हो।

(÷) गोरा शरीर क्षत्रिय जाति दुबला शरीर, पीले नेत्रोंवाला, मझौला डील, छोटी गर्दन छोटा मुख, बड़ी नाक, होंठ बड़े, दाँत छिदेर, नीचे का दान्त कुछ टूटा, मांसाहारी तथा निडर स्वभाव वाला होवे।

(⍑) गेहुआ रंग, लम्बा शरीर, दुबला, पतला, शूर, वीर, सुन्दर मुख कटी हुई भृकुटी वाला, बड़ी जाँघ, काले नेत्र, तिल के निशान शरीर में अधिक हों गोल चेहरा, छोटे पैर, छोटी नाक, मुख छोटा, कान बड़े, पिंडली तथा पैरों पर चिन्ह तिल या लहसुन या दाग हों।

(⌶) शूद्र बर्ण हों राजकर्मचारी या ज्यौतिषी का कार्य करनेवाला, गुणों से युक्त गुण बात हो। सुन्दर दाढ़ी वाला। गेहूँआ रंग हो, भौंहे खुली हों, मुँहफट बोलनेवाला चतुर-मुख पर दाहिनी तरफ चिन्ह या दाग या बगल के नीचे चिन्ह जख्म का होगा, छोटी नाक चौड़े दाँत का हो।

(⁝) गौर वर्ण, वैश्य जात का, दीर्घ देह वाला। स्त्री संज्ञक हो पतला व दुबला शरीर, बारीक आवाज, छोटा सिर, नाक और कान पर या छाती के बाईं तरफ निशान या तिल हो।

जीवित या मृतक शक्लों की जानकारी

नाम	≡̇	⩦	÷̲	≡̣	÷̱	⌶	⊥̇	≡̣	⩨	∓̣	∔	≡̣	÷	⍑	⁝	≣	रूप
जीवित-मृतक	जीवित	मृतक	जीवित	जीवित	मृतक	सन्देह युक्त	मृतक	मृतक	मृतक	जीवित	जीवित	जीवित	मृतक	जीवित	जीवित	सन्देह युक्त	

नोट—जीवित या मृतक का ज्ञान— अमुक प्राणी जीवित है या मर गया इस प्रकार से प्रस्तार बनाकर प्रस्तार का सप्तम घर देखना चाहिये यदि शक्ल जीवित की है तो उत्तर दें वह प्राणी जीवित है या उस घर

में मृतक शक्ल पड़ी है तो कहना चाहिये वह प्राणी मर गया है इस में शक्ल ⁝ व ≣ सन्देह युक्त लिखा है यदि प्रस्तार में अधिक शक्लैं जीवित की पड़ी है वहाँ ⁝ और ≣ को जीवित माने यदि प्रस्तार में मृतक की शक्लैं अधिक है वहाँ ⁝ व ≣ लो मृतक मानै-प्रस्तार बनाने का तरीका आगे लिखा जावेगा।

प्रस्तार बनाने की रीति

सर्व प्रथम जब किसी प्रकार के प्रश्न का उत्तर निकालने की आवश्यकता पड़े तो पहिले अपने इष्ट देवता का ध्यान कर लें। इष्ट देवता का तात्पर्य्य यह है जो प्राणी जिस देवता का उपासक हो वही उसका इष्टदेवता माना जाता है कोई राम के उपासक होते हैं उनको चाहिये कि ॐ रां रामाय नमः का ध्यान कर लें। जो भगवान कृष्ण के उपासक हों उनको चाहिये (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) यह द्वादश अक्षर मंत्र का जप या ध्यान कर लें। अथवा जो शिव के उपासक हों वह (ॐ नमः शिवाय) का जप या ध्यान कर ले जो जगत जननी जगदम्बा के उपासक हों वह (ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) का जप कर ले। अथवा जो हनुमान जी के उपासक हों उनको चाहिये (ॐ अंजनी कुमाराय नमः) का जप अथवा ध्यान कर लें।

पर रमल के शास्त्रकारों ने यह मंत्र लिखा है। रमल का प्रस्तार बनाने के पूर्व यह मंत्र पढ़ कर तब प्रस्तार बनायें चाहै पाँसा के द्वारा प्रस्तार बनाये अथवा अन्य प्रकार से जनको हम आगे लिखने जा रहे हैं बनाये उस समय यह मंत्र पढ़कर तभी प्रस्तार बनायें। मंत्र यह है। ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्व कार्य प्रसाधिन सर्व निमित्त प्रकाशिन एहि एहि त्वर त्वर वरं वरं देहि लिहि मातङ्गिनि सत्यंब्रूहि ब्रूहि स्वाहा। परन्तु हमारे ब्राह्मण भाइयों के प्रति अपनी राय है वह गायत्री मंत्र का ध्यान करके तब प्रस्तार बनाने की चेष्टा करैं।

यदि हमारे यवन भाई प्रस्तार बनाकर प्रश्नोत्तर निकालना चाहें तो उनको चाहिये कि तीन बार दरूद शरीफ अथवा कुल्ल शरीफ का मंत्र पढ़कर तब पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाये अथवा यदि पाँसा का अभाव हो तो निम्न रीति से पाँसा बनाकर तब प्रस्तार बनावें।

प्रस्तार बनाने का समय

प्रस्तार बनाने का समय प्रातः काल सूर्योदय से १० बजे दिन तक शुभ होता है यह ध्यान रहे उस समय बादल न हो तेज वायु का प्रकोप न हो पानी बरसते समय पाँसा न फेकें न प्रस्तर बनाये। रेल में यात्रा करते समय अथवा पलंग पर बैठकर प्रस्तार न बनाये। रमलज्ञ को चाहिये जब विचार करने वाले का दाहिना स्वर चल रहा हो तभी विचार का श्री गणेश करें। जिस समय नाक से दोनों स्वर चल रहे हो जिनको सुखमना स्वर कहते हैं। यह सुखमनास्वर दो या ३ मिनट उसी समय चलता है जब स्वर दाहिने से बायें स्वर से दाहिना स्वर बदलेगा। तभी ३ मिनट अथवा ४ मिनट तक सुखमना स्वर चला करता है फिर स्वर अपने मार्ग पर आ जाता है चाहे दाहिना चलने लगे चाहे बाँया स्वर चलने लगे इतना और ध्यान रक्खे जब दाहिना स्वर तीव्र गति से चल रहा हो तो उसको सूर्य स्वर अथवा इड़ा स्वर कहेंगे, जब बाँया स्वर तीव्र गति से चलने लगता है उसको चन्द्र स्वर अथवा पिंगला कहते हैं इडा दाहिना स्वर है पिंगला वायु स्वर है अस्तु सूर्य स्वर जब रमलज्ञ का चल रहा हो तभी विचार के लिये प्रस्तार आदि बनायें। स्वर १ घंटा तक चला करे तब दूसरा स्वर चलने लगता है स्वर बदलते समय ही सुखमना स्वर ३ से ४ मिनट के भीतर बदला करता है। सुखमना में विचार न करना चाहिये।

रमलज्ञ को शिक्षा

कभी कभी ऐसे लोग भी आ जाया करते हैं। रमलज्ञ के पास शासक रूप में आकर कहने लगते हैं। अजी हमारे प्रश्न का उत्तर

शीघ्र निकाल दें। कारण हम एक आवश्यक काम को छोड़ कर आपके पास आये हैं। ऐसे लोगों से नम्रतापूर्वक समझा दें। श्रीमान् जी प्रथम आप घर जाकर अपने आवश्यकीय कार्य को करके तभी हमारे पास प्रश्न पूँछने आवें। शीघ्रता में कोई काम नहीं हुआ करता है।

पाँसा का निर्माण

सब से शुद्ध और पवित्र मार्ग प्रश्नोत्तर निकालने का सुगम मार्ग पाँसा द्वारा ही है। जब सूर्य मेष राशि में आता है उस रोज से १९ दिन तक सूर्य की कला बढ़ती रहती है २. अंश के बाद ३. अंश तक सूर्य की शक्ति कुछ न्यून होती जाती है। अस्तु, मेष की संक्रान्त सदैव १४ अप्रैल ही को लगेगी। अस्तु १४ अप्रैल से २ मई के भीतर ही पाँसा का निर्माण होता है। पाँसा अष्ट धातु के संयुक्त से ही बनाया जाता है। अर्थात् चाँदी सोना लोहा सीसा-पीतल-ताँबा जस्ता तथा पारा को एक में मिलाया जाता है। पीतल की मात्रा विशेष रूप में रक्खी जाती है। पीतल का स्वरूप बृहस्पति अथवा गुरू ग्रह का है। पीला रंग गुरू का शास्त्रकारों ने माना है बिना गुरु के शरण में आये कोई कार्य पूरा हो ही नहीं सकता है। अस्तु, पासा बनाने वाले का धर्म है कि पवित्र होकर प्रातः काल से १७ बजे के भीतर पूर्व मुख बैठ कर गूगुल की धूनी देकर तभी आठों धातुओं को संयुक्त कर पाँसा बनाना आरम्भ करे। यदि गूगुल न मिले तो अगर की बत्ती कर जलावें।

पाँसा का वजन सात तोला से १२ तोला तक के मध्य रहना चाहिये आठों धातुओं को मिलाना जरूरी है। कारण परमात्मा सर्वशक्ति मान ने प्रत्येक ग्रह का प्रभाव प्रत्येक धातुपर प्राकृतिक रूप में डाल रखा है—जैसे सूर्य सोना का रूप है तथा मंगल ताँबा से सम्बन्धित है, चन्द्र शुक्र चाँदी से, गुरु पीतल से, शनि राहु लोहा से, बुध पारा जस्ता से सम्बन्धित है। कोई कोई आचार्य सोनासूर्य से, चाँदी चन्द्रमा से, लोहा मंगल से—सीसा शनि से, पीतल गरु से, ताँबा शुक्र से,

तथा जस्ता बुध से। इस में सोना चांदी केवल एक एक रत्ती, शेष इच्छानुसार मिलायें। गुरु से सम्बन्ध रखने वाली पीतल धातु अधिक मात्रा में होनी चाहिये।

अथवा

२१ मार्च तथा २३ सितम्बर को भी पाँसा बनाये जा सकते है। इसी दिन, दिन रात बराबर हुआ करता है।

पाँसा निर्माण विधि

किसी चतुर स्वर्णकार को समझावें कि उपरोक्त आठों धातुओं को ढाल कर एक ही मात्रा तथा आकार प्रकार के आठ चौकोर टुकड़े बनालें, उन्हीं चौकोर टुकुडों के बीच में छेद करके चार चार टुकड़ो को ताँबे या लोहे के तारों में इस प्रकार पिरौये कि वह सरलता पूर्वक इधर उधर मुड सकें। फिर इन टुकड़ों के ऊपर एक ओर दो बिन्दु बराबर तथा एक बिन्दु नीचे इस प्रकार (ₒ°ₒ) बनाये फिर दूसरी ओर दो बिन्दु ऊपर नीचे इस प्रकार (°ₒ) बनावे फिर तीसरी ओर ऊपर एक बिन्दु नीचे दो बिन्दु इस प्रकार बनावे (ₒ°ₒ) फिर उसी टुकड़े के नीचे चौथी ओर चार बिन्दु इस प्रकार (°ₒ °ₒ) बनावे।

इसी प्रकार से आठों टुकड़ों पर बिन्दु बनाना चाहिये। चारों तरफ के चारों पहलों का इस प्रकार चित्र हो गा।

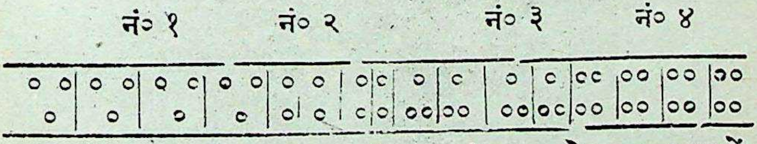

उपरोक्त रीत्यानुसार चतुर कारीगर इसी प्रकार से बनाकर आठों टुकड़ों पर बिन्दु बनाकर प्रत्येक चारों टुकड़ों को एक तार में पिरोकर ठीक कर देगा। बस पाँसा तैयार हो गया।

प्रश्नकर्ता

पाँसा तैय्यार हो जाने के बाद यदि कोई प्रश्नकर्ता आ जाये पीछे लिखे हुये समय का ध्यान करके सूर्य स्वर में ही पासा छोड़े समय सुहावना हो अब रमलज्ञ को चाहिये अपने इष्ट देव के लिखे हुये मन्त्रका ध्यान करके पाँसा किसी चौकोर समतल भूमि पर पाँसा छोड़े अथवा सिलेट व कागज की दफ्ती पर पाँसा छोड़े।

पाँसा छोड़ते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि पाँसा के ऊपर के चारों टुकड़े बराबर सतह पर रहें। कोई टुकड़ा तिरछा न रहने पावे न एक दूसरे पर चढ़ जावे वर्ना प्रस्तार में त्रुटी हो जावे गी और प्रश्नोत्तर भी अशुद्ध हो जावेगा। जब पाँसा समतल भूमि पर अथवा सिलेट पर या लकड़ी के टुकड़े पर गिरे। तब आपको उस पासाँ में पहले प्रथम चार रूप ऊपर मिलेंगे, उन चार रूपों का क्रम दाहिनी तरफ से रक्खें—इन्हें मातृ पंक्ति या उमहात कहेंगे।

मान लो आपका पाँसा इस प्रकार पड़ गया—

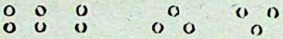

दूसरा नीचे टुकड़े पर इस प्रकार के रूप पड़े—

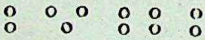

अब दोनो टुकडों को पास पास रक्खा तो— १-२-३-४

इस प्रकार रूप बन गया—

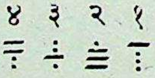

इस प्रकार आपके पाँसा की सहायता द्वारा यह चार रूप यानी शक्लें इस प्रकार बन गई—

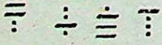 (मातृपंक्ति)

अब इन्ही चार शक्लों के सहयोग से हम १६ शक्लें बनायेंगे।

ध्यान रक्खें ! प्रत्येक शक्ल में चार पंक्तियाँ हैं। इसमें प्रथम पंक्तिको अग्नि दूसरी पंक्तिको वायु तीसरी पंक्तिको जल चौथी पंक्तिको पृथ्वी तत्व कहेंगे।

— अग्नि देखोशक्ल नं० १ में। इसी प्रकार प्रत्येक
इस प्रकार ० वायु शक्ल में, अग्नि वायु के तत्त्व हुआ करेंगे।
० जल इन्हीं चारों को फारसी भाषा में उमहात
जल-पृथ्वी ० पृथ्वी तथा हिन्दी भाषा में मातृ पंक्ति कहते हैं।

अब आगे हम को ५ व ६ व ७ व ८ शक्लों का निर्माण करना है—अत्र पाँचवी शक्ल इस प्रकार बनावें शक्ल घर नं० १-२-३-४ की ऊपर सतर में यानी अग्नि तत्व में जो भी विन्दु या पाई मिलै क्रमशः रख कर पाँचवी शक्ल बनायें जैसे ध्यान दो प्रथम घर में (—) है दूसरे घर में (०) है तीसरे घर में भी बिन्दु (०) है चौथे घर में पाई (—) है। अब क्रमश: १-२-३-४ के अग्नि तत्व को रक्खा तो यह (⋮) बन गई यह पाचवाँ घर बन गया। इसी प्रकार उपरोक्त चारों घरों की दूसरी पंक्ति वायु तत्व को लिया तो क्रमशः ÷ शक्ल बन गई। यह छठे में आई इसी प्रकार उपरोक्त चारों शक्लों की तीसरी सतर जिसे जलतत्व कहते हैं क्रमशः दाहिने से बाईं ओर के विन्दु तथा पाई को लिया तो सातवी शक्ल यह बन गई (÷) सातवें घर की शक्ल बन गई। इसी प्रकार उपरोक्त मातृ पंक्ति की १-२-३-४ घरों की चौथी सतर पृथ्वी तत्व के बिन्दु या पाई जो मिले इस प्रकार रख कर आठवाँ रूप यानी आठवें घर की शक्ल बन गई—इन ५ से ८ घरों को दुहित पंक्ति कहते हैं यवनाचार्य इन चारों घरों "वनात" कहते हैं इस प्रकार से प्रस्तार की ८ शक्लैं बन गई। अब नेव घर से १६ वें घर तक की शक्लैं परस्पर गुणा करने से बनाई जावेंगी— ध्यान दो खाना १ व २ घर की शक्ल को परस्पर गुणा करने से नवें घर की शक्ल बनेगी इसी प्रकार खाना ३ व ४

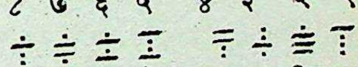

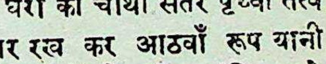

घर के रूपों को गुणा करने से खाना १० की शक्ल बनेगी। और खाना ५×६ के गुणा से खाना ११ की शक्ल बन जावेगी तथा खाना ७×८ की गुणा से खाना १२ की शक्ल बन जावेगी।

फिर खाना ९×१० घर की गुणा से तेरहवीं शक्ल बनेगी तथा खाना ११ व १२ घरों की शक्लों को परस्पर गुणा करने से खाना १४वीं शक्ल बनेगी इसी प्रकार खाना १३×१४ घरों की गुणा से खाना १५ घर की शक्ल बन जायेगा तथा खाना १५×१ घर की शक्ल को गुणा करने से खाना १६ की शक्ल बन जायेगी। इस प्रकार मातृ पंक्ति से दुहित पंक्ति यानी खाना ५ से खाना ८ की शक्ल बनी। आगे १×२ से ९ वीं ३×४ से दसवीं तथा ५×६ से ११हवीं तथा ७×८ से १२वीं शक्ल जो बनी इन चार ९-१०-११-१२ घरों को दौहित्र पँक्ति कहा जाता है। यवनाचार्य इन घरों को मुतवल्लिदात कहते हैं तथा १३ व १४ व १५ इन घरों को साक्षीगृह कहते हैं तथा १६वाँ घर फलादेश का साक्षी माना जाता है। पन्द्रवें घर की शक्ल का नाम यवनाचार्य "मीजान" नाम से सम्बोधन करते हैं तथा हिन्दी भाषा में मीजान को "तुला" कहते हैं।

अब गुणा करने की सरल रीति यह है खाना १×२ की गुणा से नवी शक्ल बनेगी जैसा हम ऊपर लिख आये हैं। जब पाई के सामने बिन्दु होगा तो हासिल बिन्दु होगा इस प्रकार (·–̣) अथवा जब बिन्दु के सामने पाई होगी तब भी हासिल बिन्दु होगा इस प्रकार (–̣·) जब बिन्दु के सामने विन्दु होगा तो हासिल पाई होगी इस प्रकार (·–̣·)अथवा जब पाई के सामने पाई होवे तो हासिल पाई होगी इस प्रकार (–̣–) यह चार तरीके गुरु गुणा के हैं—

अब हम उदाहरण रूप में एक प्रस्ताव बनाकर पाठकों के सन्मुख रखते हैं, ताकि सरलता पूर्वक समझ में आजावें।

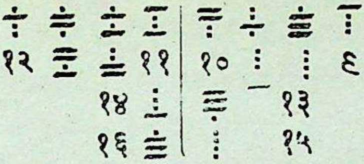

मान लो आप ने प्रस्तार की चार शक्लै बनाली है जैसा हम लिख चुके हैं प्रस्तार की ४ शक्लैं मातृ पंक्ति १—२—३—४ के चारों तत्वों के योग से खाना ५ व. ६ व ७ व ८ घरों को बनाया गया हैं, जैसा ऊपर चित्र से ज्ञात करेंगे।

अब खाना १× २ को गुणा से नवीं शक्ल इस प्रकार बनाया है खाना १ में अग्नि तत्व अर्थात प्रथम सतह में रेखा (—) है और खाना २ में प्रथम सतर में (बिन्दु) (०) है अब रेखा तथा बिन्दु को गुणा किया तो हासिल बिन्दु पाया इस प्रकार (·–) इसी प्रकार उसी १ व २ के दूसरी, तीसरी चौथी सतर अर्थात् वायु जल पृथ्वी में शून्य (०) तथा रेखा सब में मौजूद है अस्तु बिन्दु के सामने रेखा होने से हासिल बिन्दु (–·) पाया अस्तु नवी शक्ल यह ⋮ बन गई इसी प्रकार खाना ३ व ४ घरों की शक्लों में अग्नि और वायु दोनों घरो में बिन्दु के सामने रेखा मौजूद है अस्तु हासिल बिन्दु पाया इस प्रकार (–·) फिर इसी ३×४ के जल तत्व यानी तीसरी लाइन में रेखा के सामने बिन्दु है (·–) अस्तु हासिल बिन्दु पाया फिर उसी ३ व ४ घर की चौथी लाइन पृथ्वी तत्व में दोनों में बिन्दु मौजूद है अस्तु बिन्दु के सामने बिन्दु होने से पाई बन गई इस प्रकार (∸) अब उपरोक्त ३×४ घरों की गुणा को क्रमशः रक्खा ⩧ ∸ तो शक्ल ⋮ आई इसको खाना १० में स्थान दिया इसी प्रकार खाना ५ × ६ की गुणा से (∸ ⫶) से शकल ⩦ पैदा हुई इसको खाना ११ में रक्खा क्योंकि प्रथम रेखा के सामने शून्य है फिर शून्य के सामने पाई है अस्तु दोना के गुणा में हासिल बिन्दु पाया इसी प्रकार ५×६ में तीसरी तथा चौथी पंक्ति में जिसे

जल तथा पृथ्वी की लाइन कहते हैं दोनों में बिन्दु के सामने बिन्दु तथा रेखा के सामने रेखा है अस्तु हासिल पाई आई इस प्रकार (⁖) तथा (⁻⁼⁻) अस्तु चारों को मिलाया तो यह शक्ल (≐) आई इसको खाना ११ में रक्खा इसी प्रकार खाना ७ व ८ की गुणा से (÷ ≑) यह रूप ≡ बन गया इसको खाना १२ में रक्खा (नोट) गुणा का गुणन फल उसी रूप के नीचे रखते हैं इसी प्रकार उपरोक्त रीत्या नुसार खान ९×१० की गुणा से यह शक्ल ⁝×⁝ यह ≡ मिली इसको खाना १३ में स्थान दिया इसी प्रकार खाना ११×१२ से यह ⁝ शक्ल पैदा हुई इसको खाना १४ में स्थान दिया—इसी प्रकार खाना १३ व १४ की गुणा से शक्ल १५ यह (⁝) पैदा हुई अब खाना १५ तथा खाना १ की शक्ल को क्रमानुसार गुणा किया तो यह शक्ल ⁝ × ⁝ = ≐ हुई इसको खाना १६ में स्थान दिया इस प्रकार हमारा पूरा प्रस्तार बन गया। इसी प्रकार पाँसा के द्वारा प्रथम चार शक्लें पैदा हुई फिर खाना ५ से ८ घर तक उसी मातृ पंक्ति के चारों तत्वों को क्रमशः लेकर खाना ८ तक बनाया— फिर नवी शक्ल खाना १×२ का गुणन फल हुआ इसी प्रकार ३×४ का गुणन फल खाना १० हुआ और खाना ५ × ६ का गुणनफल खाना ११ हुआ तथा खाना ७×८ का गुणफल खाना १२ हुआ फिर ९×१० का गुणन फल खाना १३ तथा ११×१२ का गुणन फल खाना १४ हुआ तथा १३×१४ का गुणन फल खाना १५ हुआ इसी खाना १५ को मीजानं अथवा (तुला) के नाम से आगे सम्बोधन करेंगे—अब १५×१ घर की गुणा से खाना १६ बना लिया इसी प्रकार सम्पूर्ण प्रस्तार बनाया जाता है।

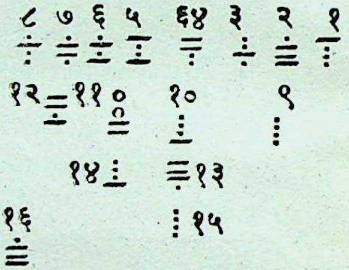

पाठक वृन्द फिर समझलें विन्दु के सामने रेखा होगी अथवारेखा के सामने विन्दु होगा तो हासिल विन्दु होगा इस प्रकार (–·) अथवा (·–) इसी प्रकार विन्दु के सामने विन्दु अथवा पाई के सामने पाई इस प्रकार (∴) (–—–) होगी तो हासिल पाई होगी यही चार क्रम पूरे रम्ल के प्रस्तार बनाने के हैं। आशा है हमारे रमलज्ञ भाई अब भली प्रकार समझ गये होंगे।

(नोट) (प्रस्तार सही बनाया अशुद्ध बना इसका समझना भी जरूरी होगा)।

ध्यान रक्खो खाना १५ में केवल यही रूप शक्लों के आवेंगे जैसे (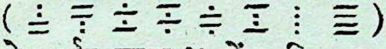) यही आठ रूप खाना १५ में आवेंगे अर्थात खाना १५ में २ बिन्दु २ पाई अथवा चारों बिन्दु या चारों पाई आवेंगी सम शक्ल आवेगी विशम शक्लें न आवेगी विशम शक्लें यह हैं 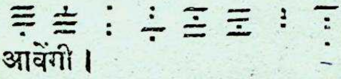 यह ८ शक्लें खाना १५ में कभी न आवेंगी।

प्रस्तार बनाने की दूसरी रीति

जब आपके पास पाँसा न हो—तब आप को चाहिये—यदि कोई प्रश्न कर्ता आकर किसी प्रकार का प्रश्न आकर करै—तो सर्व प्रथम एकाग्र चित्त होकर अपने इष्ट देवता का ध्यान करके जैसा हम लिख आये हैं उसी प्रकार ध्यान धर कर दाहिना स्वर जब आप का चल रहा हो तो एक ही स्वांस में चार सतरें बिन्दु की बिना गिने हुये बना लें—फिर उन बिन्दुओं को परस्पर दो दो मिलाते जाओ यदि १ बिन्दु बचे तो बिन्दु इस प्रकार (·) रक्खै यदि पूरी बँट जावे तो पाई इस प्रकार (—) १ रक्खैं इसी प्रकार चारों बिन्दुओं को मिलाने में आपकी एक शक्ल बन जावेगी। इस प्रकार

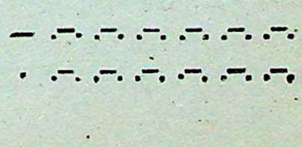

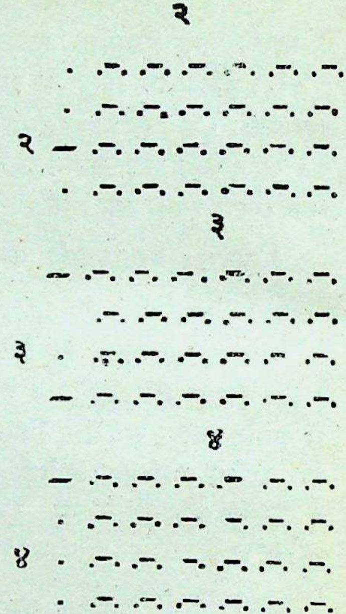

इसी प्रकार पुनः एक स्वाँस में चार बिन्दु असंख्य रक्खें इतना ध्यान रहे अन्दाज से बिन्दु १२ से कम न हो और २० से अधिक न हो—अस्तु पुनः दो दो बिन्दु मिलाते जावें यदि पूरी बँट जावें तो रेखा या पाई (—) रक्खे यदि एक बिन्दु रह जावे तो बिन्दु रक्खें इस प्रकार दूसरी साँस में आप दो शक्लें बना लेंगे इसी प्रकार तीसरी तथा चौथी में बिन्दु रखते जावें और दो दो को मिलाते जावें इस प्रकार से आप चार शक्लें बना लेंगे इन्हीं चार शक्लों का मातृ पंक्ति या उमहात बनाकर आगे पूरा प्रस्तार बना लें जैसा हम लिख आये हैं।

उदाहरण। हमने १६ सतरे बिन्दुओं की चार स्वाँस में बनाया सब को दो-दो को संयुक्त करके यदि बिन्दु बचा तो बिन्दु रक्खा यदि पूरी तकसीम हो गई तो रेखा रक्खा इसप्रकार चार शक्लै हमने पैदा कर ली अब चार शक्लों की उमहात या मातृ पंक्ति बना कर पूरा प्रस्तार ऊपर लिखे हुये नियम के अनुसार पूरा प्रस्तार बना लिया।

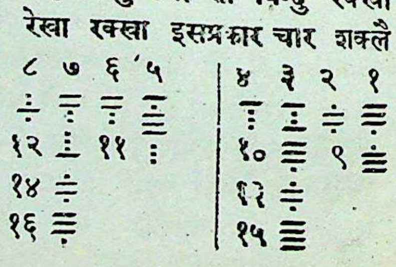

(प्रस्तार बनाने की तीसरी रीति)

रमल विद्या में वर्ण माला रूप में केवल १६ रूप (शक्लैं) हुआ करती हैं—इन्हीं १६ शक्लों के द्वारा विश्व भर के प्राणी मात्र के दुख सुख का हाल बताया जाता है।

अस्तु इन १६ शक्लों का क्रम हम नीचे लिखते हैं जो जो शक्ल जिस नम्बर पर रक्खी गई हैं वही उस घर की मालिक मानी गई हैं। शक्लों का क्रम इस प्रकार है।

अवद० कृमानुसार १६ शक्लों का रूप तथा स्वामी

शक्ल	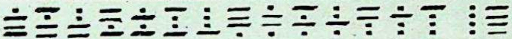	नाम
मालिक घर	१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६	स्वामी गृह

तीसरे प्रकार से प्रस्तार बनाने की रीति यह हैं—यदि कोई प्रश्न कर्ता आप के पास प्रश्न करने आवे सर्व प्रथम ध्यान रक्खो कि वह दक्षिण दिशा की ओर मुख करके प्रश्न न करैं प्रकृत का नियम है यदि कोई प्राणी दक्षिण तरफ बैठ कर प्रश्न कर बैठे तो रमलज्ञ को जान लेना चाहिये इसका मनोरथ पूरा न होगा यदि वह रोगी के आरोग्यता प्राप्त के प्रति भविष्य जानना चाहता है तो रमलज्ञ समझ ले रोगीका रोग दूर होना दुर्लभ है। जब प्रश्न कर्ता की बैठक ठीक हो जावे तब उसका पूरा नाम पता लिखैं—फिर उससे कहैं भगवान का स्मरण करके १ से १०० के भीतर चार गिन्ती बोल दें यदि वह प्रश्न कर्ता १६ के भीतर अंक बोलता है तो उसी नम्बर की शक्ल अलग रक्खैं। यदि १६ से अधिक की गिन्ती (अंक) बोला है तो रमलज्ञ को चाहिये। उस अंक को १६ का भाग देकर शेष जो बचे उसी नम्बर की शक्ल ऊपर लिखे चक्र के अनुसार बनाकर चार शक्लैं बनाले—प्रश्न कर्ता भिन्न-भिन्न ४ अंक बोलेगा। उसी चार अंक की शक्लैं लेकर मातृ पंक्त बनाकर पूरा प्रस्तार बनाले जिसकी रीति हम लिख चुके हैं।

उदाहरण—मान लो प्रश्न कर्ता ने १५-८४-१६-४२ इस प्रकार ४ अंक बोला तो १५ की मालिक शक्ल ⋮ है अब ८४ को १६ से भाग दिया तो चार बचे चौथे घर की स्वामी शक्ल ≡ है इसको दूसरा रूप लिया फिर १६ अंक से ≡ लिया फिर ४२ अंक को १६ से भाग देने पर १० अंक बाकी रहा अस्तु दसवीं शक्ल ÷ लिया इस प्रकार हमारी ४ शक्लें १० ÷ १६ ≡ ८४ ≡ १५ ⋮ बन गई। इनको मातृ पंक्ति अथवा उम्हात मानकर पहले लिखे हुये रीति के अनुसार पूरा प्रस्तार बना लिया।

अब रमलज्ञ को चाहिये कि ३ प्रकार से प्रस्तार बनाने का जो क्रम दिया गया हैं उसमें जो सुगम हो उसी द्वारा प्रस्तार बना कर भविष्य फल कहै—भविष्य फल निकालने की रीति हम आगे लिखेंगे।

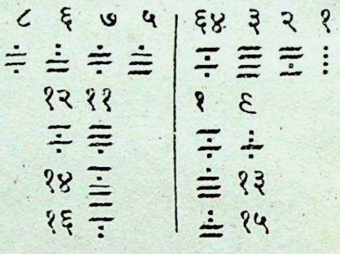

अवदह पंक्ति का निर्माण किस प्रकार हुआ

इस अवदह चक्र का निर्माण ज्यौतिष तथा रमल शास्त्र का प्रकाण्ड विद्वान रमलाचार्य यवन भाई श्री सुर्खाव ने किया था अवदह क्रम का प्रवर्तक यही आचार्य श्री सुर्खाव जी हुए हैं। इसका निर्माण इस प्रकार है अवदह में चार अक्षर हैं। चारों अग्नि वायु जल से क्रमशः संबंधित हैं इस प्रकार अ—अग्नितत्व व—वायु तत्व तथा द जल तत्व तथा "ह,, पृथ्वी तत्व से सम्बन्धित है।

इस प्रकार अ—अग्नि
व—वायु
द—जल
ह—पृथ्वी

अ का अंक १ है तथा व के अंक २ हैं और द के अंक ४ हैं और "ह,, के ८ अंक है यही इनका ध्रुवा है इस प्रकार प्रत्येक शक्ल (रूप) में अवदह मौजूद है प्रत्येक शक्ल में जहाँ बिन्दु खुला होगा

उसी सतर का वही अंक माना जायेगा जैसे शक्ल ≡ को देखा। इसमें अ ब द लाइनों में पाई यानी रेखा है रेखा मृत्यु रूप की सूचक हैं केवल ह विन्दु जीवित माना गया है। अब शक्ल ⩧ में द यानी जल विन्दु खुला है द के ४ अंक है इसी कारण ⩧ चौथे घर की मालिक मानी गई। हम अवदह चक्र पुनः बनाते हैं ताकि रमलज्ञ भाई भली प्रकार समझ जावें।

अवदह चक्र

रूप	≐	⩦	⩷	⩧	÷	⫠	⊥	≡	≑	⩨	∔	⊤	∻	⫟	⁞	≣	शक्ल
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	सं०

अब देखो शक्ल ≐ में अ विन्दु खुला है अ का १ अंक है इसी कारण यह खाना १ की मालिक है फिर खाना २ में शक्ल ⩦ का वायु विन्दु खुला है व के २ अंक है इसी कारण शक्ल ⩦ खाना २ की मालिक हुई। अब खाना ३ में शक्ल ⩷ है इसमें अ तथा व विन्दु खुला है अ का १ अंक तथा व के २ विन्दु है अस्तु १ + २=३ हुआ इसी कारण तीसरे घर की मालिक ⩷ शक्ल हुई इसी प्रकार खाना १० को देखो उसमें ⩨ इसमें व तथा ह विन्दु खुला है अब व के २ अंक है और ह के ८ अंक हैं दोनों का जोड़ १० हुआ इसलिये शक्ल ⩨ खाना १० की मालिक मानी गई है। इसी क्रम से खाना १५ में चारों विन्दु खुले हैं अस्त, १+२+४+८=१५ हुआ इसी कारण रूपी ⁞ खाना १५ की मालिक मानी गई अब चूँकि रमल में केवल १६ शक्लें हैं १५ तक तो विन्दु मिलते गये उसी क्रम से उसी घर की मालिक वही शक्ल करार दी गई बकी एक शक्ल ≣ यह १६ में मान ली गई है इसी प्रकार से अवदह क्रम का निर्माण हुआ।

आवश्यकीय समझने वाली बात

समस्त विश्व में पाँच तत्व काम कर रहे हैं प्रथम आकाश दूसरा अग्नि तीसरा वायु चौथा जल पाँचवा पृथ्वी है इस प्रकार [⁞] इस में प्रथम

बिन्दु आकाश जो सारे ब्रह्माण्ड को घेरे हुये है। यही सबको पैदा करता है। यही सब को नाश भी करता है। अर्थात आकाश को प्रत्येक वस्तु की मृत्यु और सब के जीवन का कारण है। अस्तु यदि आकाश को अलग कर दें तो आकाश के बाद अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी—इसी कारण शास्त्रज्ञ इन को चर्तुमुखी कहते हैं। शास्त्र कारों ने इन का नाम ब्रह्मा रक्खा है। जो समस्त विश्व को पैदा करता है—सारी सृष्टि इन्हीं ब्रह्मा की रची हुई है। अस्तु ब्रह्मा सब के पिता है। परन्तु ब्रह्मा का कोई रूप साकार नहीं दिखाई दे रहा है। केवल यही चार बिन्दु अग्नि वायु जल पृथ्वी के योग को ब्रह्मा कहते हैं।

आकाश "ब्रह्म" है अथवा ईश्वर सर्व व्यापक है। ब्रह्मा जीव है। ब्रह्मा का योग [⋮ ⋮] यह (≡) होता है। यही प्रकृत है और ईश्वर जीव है इसी प्रकृत का नाम संसार अथवा दुनिया है। जिन की सूरत इस प्रकार है।

अकाश (⋮ +) ब्रह्मा योग (≡) प्रकृत
ईश्वर जीव

रमल शास्त्र का सारा कार्य इसी उपरोक्त अवदह चक्र पर है जिस का उल्लेख हम ऊपर लिख चुके हैं। यही चक्र सर्वमान्य है।

विजदह चक्र का निर्माण

विजदह चक्र की सहायता से प्रत्येक काम की अवधि निकाली जाती है। जिस प्रकार अवदह क्रम में चारों तत्व दिखाये गये हैं। इसी प्रकार विजदह चक्र में चारों तत्व मौजूद हैं।

जिस प्रकार अवदह•चक्र में क्रमश १+२+४+८ अङ्क माने गये हैं। इसी प्रकार विजदह चक्र में (वि.) के २ अङ्क तथा (ज़) के ७ अङ्क तथा (द) के ४ अङ्क और (ह) के ८ अङ्क है अर्थात् २+७+४+८=२१ जोड़ है।

पूर्वोक्त रीत्यानुसार प्रगट विन्दु (०) तत्व की संख्या को जोड़ें। उसी घर में उस रूप को मालिक मानै यदि ८ जोड़ के अङ्क १६ से अधिक हों तो १६ के भाग से जो शेष रहे उसे उसी घर में उस शक्ल की मालिक माने जैसे मान लो हम रूपी ÷ को लेते हैं। इस में अग्नि तथा वायु तथा ह खुला है केवल (द) अथवा जल तत्व में रेखा होने से बन्द माना गया है। अब विजदह चक्र के अनुसार वि के २ अङ्क तथा ज के ७ अङ्क तथा ह के ८ अङ्क है। तीनों को जोड़ा २+७+८= तो १७ हुये अब चूँकि १६ से अधिक संख्या है। अस्तु (१७) को १६ से भाग दिया जाय तो १ बचा। इसी कारण शक्ल ÷ को प्रथम घर में स्थान दिया।

इसी प्रकार शक्ल ≐ को देखा तो इस में केवल वि. विन्दु खुला है शेष ज द. ह सभी में रेखा है। अस्तु वि का अङ्क २ है। इसी कारण शक्ल ≐ को दूसरे घर में रक्खा अब शक्ल ⊤ को देखा तो इस में ज-द-ह तीनों विन्दु खुले हैं। इन तीनों का जोड़ ७+४+८= १९ हुआ १६ से भाग दिया तो ३ बचे। अस्तु खाना ३ मे इस को माना। अब हम शक्ल ≡̣ को देखते हैं तो इस में केवल जल तत्व जिसे (द) सम्बोधन करते है। "द" का अङ्क ४ है। अस्तु शक्ल ≡̣ चौथे घर की अधिकारी मानी गई। इसी प्रकार शक्ल ⁞ में चारों विन्दु खुले है। विजदह चक्र के अनुसार २+७+४+८ २१ पाते है। इस २१ में १६ का भाग दिया तो शेष ५ बचे। इसी कारण शक्ल ⁞ को पाचव घर की अधिकारी मानी गई। इसी प्रकार शक्ल ÷̲ तथा ≡̇ व ⩸ व ⩦ व ⨩ व ⫪ व ⫧ व ⊥ व ⫩ व ∓ को क्रमशः उपरोक्त रीत्यानुसार खाना ६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५ के अधिकारी मान कर उसी स्थान का अधिकारी माना। विजदह चक्र इस प्रकार है।

विजदह चक्र की तालिका

शक्ल	÷	≐	⊤	≡̣	⁞	÷̲	≡̇	⩸	⩦	⨩	⫪	⫧	⊥	⫩	∓	≣
संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

इसी विजदह चक्र के द्वारा प्रत्येक कार्य की अवधि निकाली जाती है—इस चक्र से अवधि निकालेन की रीति इस प्रकार है इस चक्र में प्रत्येक शक्लको अपना ध्येय मान लो। अर्थात आपका जो प्रश्न हो उस घर का सातवाँ घर देखो—जैसे मान लो हमारा प्रश्न है अमुक माल कब मिलेगा। माल का प्रश्न प्रस्तार के खाना २ से देखा जाता है कौन प्रश्न किस घर से निकाला जायेगा—इसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या हम आगे लिखेंगे।

अतः माल के प्रश्न पर उपरोक्त रीत्या नुसार प्रस्तार अथवा जायचा चाहे पाँसा के द्वारा अथवा विन्दु रखकर अथवा गिन्ती प्रश्न कर्ता से कहलवाकर पूरा प्रस्तार बनालें—

अब खाना २ को देखो। फिर उपरोक्त विजदह चक्र के खाना २ शक्ल ≡ को लो—खाना २ शक्ल ≐ से आगे सातवाँ घर आपको शक्ल ≡̣ मिला। इस ≡̣ शक्लको अपने प्रश्नोत्तर के प्रस्तार में देखो कि यह ≡̣ किस जगह पड़ी है। उस घर में कौन अंक रखती है जो अंक हो उसी अंक के अनुसार उत्तर दो। इतना ध्यान रहे यदि वह शक्ल मातृपंक्ति में अर्थात एक से ४ खाना तक में पड़े तो उतने दिन की मियाद बतावें यदि दुहित पंक्ति में वह शक्ल आवें तो उसी अक के सप्ताह कहें ध्यान रहे दुहित पंक्ति ५ से ८ घर तक होती है इसी ५–६–७–८ घर को यवना चार्य बनात भी कहते हैं। अथवा वह शक्ल दौहितृ पंक्ति पंक्ति अर्थात ९ से १२ घर के भीतर पड़े तो उसी अंक के अनुसार उतने मास की अवधि बतलाना चाहिये यदि वह शक्ल जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं खाना १३ से १६ घर के मध्य पड़े तो उसी अंक की अवधि वर्षों में बतलाना चाहिये।

मगर ध्यान रहे जब प्रश्न कर्ता ने उपरोक्त प्रश्न जो किया है कि माल कब मिलेगा—अस्तु प्रथम मालूम कर लो कि माल मिलने की आशा है या नहीं। यदि ऐसा उत्तर निकले कि माल मिलने की आशा

नहीं है तो अवधि निकालना बेकार है। जब ज्ञात हो जावे हाँ माल मिलेगा तभी उपरोक्त रीत्या नुसार अवधि निकालो।

अंक निकालने की रीति

विजदह चक्र को सामने रक्खो। खाना १ में ÷ है यह १ अंक माना जायेगा फिर खाना २ में शक्ल ≐ विजदह चक्र में है अस्तु १+२=३ अंक शक्ल ≐ का माना जावेगा फिर उसी चक्र में खाना ३ में शक्ल ⫶ है अस्तु ⫶ का अंक १+२+३=६ माना जायेगा। इसी प्रकार मान लों विजदह चक्र में खाना ९ में शक्ल ≐ है अस्तु खाना १ से ९ तक जोड़ा इस प्रकार १+२+३+४+५+६+७+८+९=४५ हुये अस्तु शक्ल ≐ के ४५ अंक माने जावेंगे।

संयोग वश यदि वह शक्ल प्रस्तार में आप के न हो। तब आप को चाहिये अपने प्रस्तार के जिसे आप ने बनाया है देखा कितने अंक हैं। इस बात का ध्यान रक्खें कि विन्दु (०) का १ अंक यदि रेखा पड़ी है ता रेखा के २ अंक लेना चाहिये

जैसे आप ने प्रस्तार बनाया यह
प्रस्तार बना इस प्रस्तार में ३१
विन्दु है और पाई ३३ हैं अब
३३ को दूना कर लो तो ६६ हुए

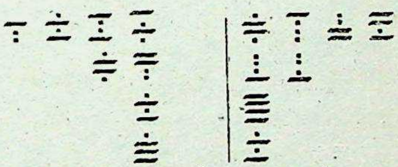

क्योंकि पाई अथवा रेखा (००) दो विन्दु के योग से बनती है अस्तु ३१+६६=९७ विन्दु माने गये अब ९७ को १६ से भाग दिया तो १ बाकी बचा अब खाना १ प्रस्तार में ⫶ पाया अब ⫶ के ४ अंक है और यह ⫶ मातृ पक्ति में है इसी प्रकार प्रश्न कर्ता से कह दो चार दिन पर माल मिलेगा।

ध्यान देने की बात। इस बात का भी ध्यान रक्खें कि वह शक्ल अपने प्रस्तार में आप के नियमित घर से आगे है या पीछे यदि आगे है तो देखना चाहिये कि अपने घर से कितने घर छोड़कर प्रथम आई उतने ही अंक उसमें जोड़ना चाहिये है।

विजदह चक्र अवधि निकालने की तालिका

अङ्क	··|·	·|||	|···	||·|	····	·|·|	|·||	|||·	··||	·||·	|··|	··	···|	·|··	|·|·	||||	
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१
२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	२
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	३
४	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	४
५	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	५
६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	६
७	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	७
८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	८
९	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	९
१०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	१०
११	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	११
१२	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	१२
१३	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	१३
१४	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१८३	१०४	१०५	१०६	१०७	१४
१५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१५
१६	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१६

अब हम एक प्रश्न हल करके आप को दिखाते हैं ताकि आप के समझने में कसर बाकी न रहे—एक सज्जन ने प्रश्न किया हमारा पुत्र जो चला गया है कब आयेगा इसी नियत से पाँसा डाला प्रस्तार बनाया यह जायचा बना।

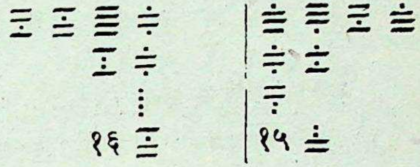

प्रस्तार में २५ बिन्दु है ३९ पाई हैं ३९ को दूना किया ७८ बिन्दु आये अस्तु २५×७८ दोनों को जोड़ा १०३ हुये १६ पर भाग दिया शेष ७ मिले अब प्रस्तार में सातवें घर को देखा शक्ल (≐) पाया अब विजदह क्रम में ≐ के सातवें घर में २८ पाया मगर प्रस्तार में ≐ खाना १६ में भी मौजूद हैं अस्तु २८+१२७=१५५ दिन हुये प्रश्न कर्ता से कहो १५५ दिन यानी ४ मास २५ दिन पर आयेगा—

नोट—परन्तु प्रथम इस बात का विचार भी करना जरूरी है वह जीवित है या नहीं किस दिशा आदि में है तभी अवधि निकालने की चेष्टा करें इसका नियम आगे लिखा जावेगा—

बिन्दु गति प्रणाली

रमल शास्त्र में —सर्व प्रथम प्रस्तार बनाकर शक्लों के शुभा शुभ द्वारा प्रश्नों के फल बतलाने का विधान वर्जित है। इस प्रकार से बतलाये हुये प्रश्न फल पचास प्रतिशत तो सही बैठते हैं शेष में त्रुटी रह जा सकती है। लेकिन बिन्दु चाल द्वारा निकाला प्रश्न सौ फीसदी (शत प्रतिशत) ठीक बैठता है। हमारे सर्वोत्तम 'रमल दिवाकर' में बिन्दु चालन का पूरा पूरा क्रम दिया गया है। वह कुछ रमलज्ञ प्रेमियों को कठिन जान पड़ा, असंख्य पत्र जनता के हमारे पास आये—कि वह क्रिया सरल रूपमें बनाकर विस्तार पूर्वक समझाने की कृपा करें।

इसी कारण उसकी यह कुञ्जी सरल भाषा में तैयार करनी पड़ी।

इस के द्वारा प्रश्नों के उत्तर निकालने की रीति अवदह क्रम पर ही निर्भर है। अबदह क्रम तथा चक्र हम प्रथम लिख आये हैं। पुनः यहाँ लिखते हैं—

नाम शक्ल—

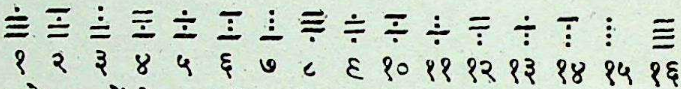

प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर निकालने का यही तरीका है। आप को जो प्रश्न करना हो उसको ध्यान में धर कर भगवान का स्मरण करे कि पाँसा सिलेट पटरा या दफ्ती या समतल स्थान पर छोडो और पूरा प्रस्तार बना लो जैसा हम पिछे लिख आये हैं। प्रस्तार बनाकर खाना १५ की शक्ल को देखो। हम लिख चुके हैं प्रस्तार की खाना १५ में सदैव सम शक्ल आवेगी अर्थात् २ विन्दु और २ पाई आवेगी अथवा चारों विन्दु या चारो पाई ही आवेगी। यदि संयोग वश खाना १५ में शक्ल ⁞ या ☰ आजावे तो प्रथम रूपी ⁞ का बिन्दु चलकर यदि उस स्थान पर पहुँचता है। जिस में सम शक्ल हो अर्थात् उस घर में २ बिन्दु और २ पाई से शक्ल बनी बैठी है तो समझ लो उत्तर सन्तोष जनक निकल आवेगा। यदि ऐसा नही है तो प्रस्तार का परिवर्त नकरना पड़ेगा अथवा खाना १५ में यदि शक्ल ☰ आजावे तो समझ लो प्रस्तार वद्ध हो गया है। उस प्रस्तार को परिवर्तन करना पड़ेगा। परिवर्तन को इन क्लाव भी कहते हैं। परिवर्तन की रीती यह है - प्रस्तार के खाना १ की शक्ल और खाना १३ की शक्ल से गुणा करके एक शक्ल बनावें, फिर खाना ४ को खाना १४ में वैठी हुई शक्ल से गुणा करें फिर खाना ७ की शक्ल को खाना १५ की शक्ल से गुणा करके तीसरी शक्ल बनालें फिर खाना १० की शक्ल का १६ घर की शक्ल से गुणा करके चार शक्लें प्राप्त करे। पुनः दुसरा प्रस्तार बनायें। तब उस के द्वारा फल कहें।

प्रस्तार बनाकर खाना १५ को देखो उस में कौन सी शक्ल आई है—खाना १५ की शक्ल में सदैव दो बिन्दू ही हुआ करते हैं। अस्तु

प्रथम ऊपर का विन्दू जो होता है उससे ज़मीर अर्थात् मूक प्रश्न निकाला जाता है तथा उस के नीचे का जो विन्दू होता है उससे प्रश्न का शुभाशुभ फल निकाला जाता है।

अस्तु यदि मूक प्रश्न मालूम करना हो तो खाना १५ के ऊपर वाले विन्दू को सैर (चालन) देवें। यदि प्रश्न कर्ता द्वारा प्रश्न मालूम हो तो प्रस्तार के दूसरे विन्दू को सैर देकर देखें। बिन्दू कहाँ जाकर रुकता है। जहाँ विन्दु रुके उसी को भाग्य स्थान माने—खाना १५ से दूसरा विन्दू ऊपर को चलेगा तो देखना चाहिये विन्दू किस तरफ जाता है दाहिने तरफ जाता है या बाईं तरफ जाता है। यदि दाहिनी तरफ विन्दु ऊपर को चलेगा तो खाना १३ में जावेगा फिर खाना १३ से या तो खाना ९ में या १० में जावेगा। यदि खाना ९ में जायगा तो खाना १ या २ जाकर रुकेगा यदि खाना १० में जावेगा तो खाना ३ या ४ में जाकर विश्रान्ति पायेगा। विश्रान्ति को उर्दू भाषा में "मुन्तही" भी कहते हैं। मुन्तही के माने हैं इन्तिहा पाना अन्त में रुकने को भी मुन्तही कहते हैं। इसी को विश्रान्त पाना भी कहते हैं।

यदि खाना १५ से विन्दु बाईं तरफ जाता है तो खाना १४ में जायेगा—फिर खाना १४ से या तो खाना ११ में या खाना १२ में जावेगा—यदि खाना १४ से ११ में बिन्दु गया तो वह खाना ५ या ६ में जाकर विश्रान्त पायेगा या विन्दु खाना १२ में जाता है तो वह या तो खाना ७ में मुन्तही होगा या खाना ८ में विश्रान्त पायेगा यही विन्दु चलाने का नियम है।

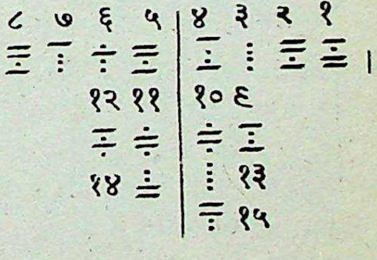

अस्तु हम प्रस्तार बनाकर आप को समझाये देते हैं। एक प्रश्नकर्ता ने आकर प्रश्न किया प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना। खाना १५ में शक्ल आई प्रथम विन्दू जल तत्व की है दूसरा विन्दू पृथ्वी तत्व का है अब खाना १५ के

अन्तिम विन्दु पृथ्वी को सैर दिया तो विन्दु खाना १३ में गया—कारण खाना १४ के पृथ्वी तत्व में (—) है। इस तरफ विन्दु जा नहीं सकता विन्दु जहाँ अपनी लाइन में विन्दु पायेगा वहीं जाकर रुकेगा। अस्तु खाना १५ का आखिरी पृथ्वीतत्व का विन्दु दहिनी तरफ खाना १३ में रुका। फिर खाना १३ से खाना १० शक्ल में जाकर रुका क्योंकि १० की शक्ल के अन्तिम यानी पृथ्वी तत्व की जगह बिन्दु है। चूंकि खाना ९ में पृथ्वी तत्व की जगह ⋮ पाइ – मिलती है, अस्तु विन्दु खाना १० के खाना ३ में जाकर विश्रान्ति पाता है अस्तु कहा गया कि खाना १५ का पृथ्वी तत्व का विन्दु चल कर खाना ३ में विश्रान्त पाता है—हम लिख चुके हैं कोष्ठ १ व॰ २ व॰ ३ व ४ को उमहात या मातृ पंक्ति कहते हैं—और खाना ५ व ६ व ७ व ८ को दुहितृ पंक्ति कहते हैं यवनाचार्य इस दुहितृ पंक्ति को "वनात" कहते हैं—और खाना ९ से १२ खाने के घरों को दौहितृ पंक्ति कहते हैं यवनाचार्य इनको ज़वायदात भी कहते हैं।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है खाना १५ से। दूसरा बिन्दु चलकर मातृ पंक्ति में जाकर रुकता है या दुहितृ पंक्ति में जाकर रुकता है। वहाँ यह भी देखना चाहिये कि विश्रान्तिक बिन्दु जहाँ रुकता है उससे दाहिने या बायें भी उसी तत्व में जाने को मिलता है या नहीं। जहाँ जाकर बिन्दु रुकेगा वहीं भाग्य स्थान उसका माना जायेगा—जहाँ पर विन्दु जाकर विश्रान्ति पाता है वहाँ यह भी देखना चाहिये कि जिस शक्ल में विन्दु रुका है वह शक्ल सम शक्ल है या नहीं। सम शक्ल वही कही जायेगी जिस शक्ल में २ बिन्दु अथवा २ पाई हों सम शक्ल यही होती है जैसे ⋮ ÷ ÷ ÷ ∓ ≐ यदि विषम शक्लों में बिन्दु रुक गया है तो देखना चाहिये जहाँ तक बिन्दु मातृ पंक्ति या बनात दुहित पंक्ति में कोई शक्ल ऊपर लिखे हुये अनुसार सम शक्ल हैं तो जो बलवान शक्ल होगी उसीको भाग्य स्थान माना जायेगा यदि तुला चालित बिन्दु मातृ पंक्ति या दुहित पंक्ति के

किसी खाने में रुका और वह शक्ल विषम शक्ल है अर्थात या या या या या या या है तो यह शक्लें अप्रमाणित मानी जायेंगी विषम शक्ल का मतलब ३ बिन्दु १ पाई अथवा ३ पाई १ बिन्दु इन शक्लों में किसी भी शक्ल में जाकर बिन्दु रुकेगा तो उसको भाग्य स्थान न मानकर खाना १५ की शक्ल को ही भाग्य स्थान माना जायेगा यदि तुला चालित बिन्दु मातृ या दुहितृ पंक्ति के किसी घर में जाकर विश्रान्ति पाता है यानी मुन्तही होता है और वह शक्ल सम शक्ल है तो वही भाग्य स्थान माना जायेगा—

इसके बाद आपको एक सोपान चक्र भी बनाना आवश्यकीय होगा। सोपान चक्र को यवनाचार्य (मरातिब हस्त गाना) कहते हैं। यह सोपान चक्र अवदह चक्र के सहयोग से बनाया जाता है।

(देखो अवदह चक्र)

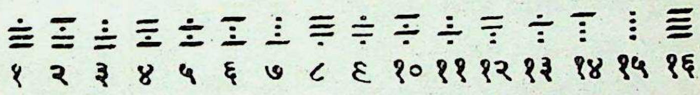

सोपान चक्र बनाने की रीति यह है—आपको ज्ञात हो चुका है कि प्रत्येक शक्ल में चार तत्व होते हैं। अग्नि वायु जल पृथ्वी जैसे शक्ल है पहली लाइन अग्नि की होती है दूसरी वायु तीसरी जल की चौथी पृथ्वी की होती है इसी प्रकार १६ शक्लों के रूप में चारों तत्व मौजूद हैं।

इन्हीं अवदह पंक्ति की शक्लों में ८ शक्लें ऐसी हैं जिनके अग्नि तत्व में बिन्दु है—तथा ८ शक्लें ऐसी हैं जिनके वायु तत्व में ८ बिन्दु मौजूद हैं तथा जल तत्व में भी ८ बिन्दु हैं। फिर इसी अवदह चक्र में ८ बिन्दु आपको ऐसे मिलेंगे जो पृथ्वी तत्व में मौजूद है अस्तु चारों तत्वों को क्रमानुसार इस प्रकार स्थान दिया।

सोपान चक्र या मरातिब दस्त माना

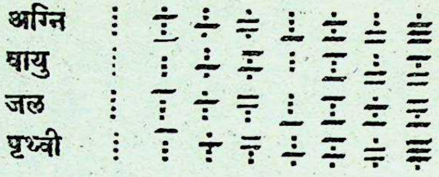

इस प्रकार अवदह चक्र के द्वारा चारों तत्वों बिन्दुओं के क्रम को लेकर सोपान चक्र बना लिया अब रमलज्ञ को चाहिये कि इस सोपान चक्र को अलग एक शुद्ध मोटे कागज पर बना कर अलग अपने पास रखै संसार के जितने प्रश्न भूत भविष्य वर्तमान के निकाले जायेंगे इसी चक्र से निकाले जाया करैंगे।

भूत भविष्य वर्तमान का ज्ञान प्राप्त करना।

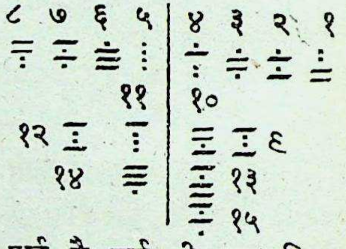

एक सज्जन ने कोई प्रश्न किया आपने पाँसा डाला प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना—मीजान या तुला में शकल ÷ पड़ी इसके दूसरे बिन्दु को जो पृथ्वी तत्व का है चलाया प्रथम १४ में गया क्योंकि १३ में पृथ्वी तत्व में ≡ की पाई है पाई की तरफ बिन्दु जाता नहीं १४ में पाया फिर १४ से खाना ११ की शक्ल ⁝ की पृथ्वी तत्व में गया फिर खाना ११ से खाना ५ की शकल ⁝ में पृथ्वी तत्व में विश्रान्त हुआ अब देखा कि यह बिन्दु अपने से दाहिने या बायें जाता है या नहीं अस्तु बाई और खाना ६ में शकल ≡ है पृथ्वी तत्व में पाई (—) है अस्तु बाई तरफ तो जाता नहीं अलबत्ता दाहिनी तरफ खाना ४ में ÷ शक्ल के पृथ्वी तत्व में गया फिर दाहिनी तरफ खाना ३ शक्ल ∸ में आकर रुका कारण आगे खाना २ में पृथ्वी तत्व में शक्ल ≑ में पाई है अस्तु यह बिन्दु तुला चालित खाना १५ से

१४-११-५ में होता हुआ खाना ३ में आकर रुका खाना ३ में शकल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ सम है अर्थात २ बिन्दु २ पाई हैं इसीको अपना भाग्य स्थान माना खाना ३ जल तत्व का है—क्योंकि हम प्रथम लिख आये हैं जो प्रस्तार बनाया जावेगा उस में मातृ पंक्ति में १ घर अग्नि का २ घर वायु का ३ तीसरा घर जल का है चौथा घर पृथ्वी का है इसी प्रकार ५ से ८ तक क्रमानुसार चारों घरों में चार तत्व मिलेंगे फिर ६ से १२ तक इसी प्रकार जाने फिर खाना १३ अग्नि का होगा १४ वायु का १५ जल का १६ पृथ्वी का होगा अब पूरे प्रस्तार में खाना १-५-६-१३ तो अग्नि तत्व के घर पाये और खाना २-६-१०-१४ घर वायु तत्व के पाये फिर खाना ३-७-११-१५ यह जल तत्व के बने इसी प्रकार ४-८-१२-१६ खानों की शकलें पृथ्वी तत्व मानी गई।

अब इन्ही शकलों में जो घर चारों तत्वुओं के है उनमें मित्र शत्रु भी है--वह इस प्रकार है-अग्नि तथा वायु की मित्रता है तथा जल और पृथ्वी की मित्रता है। इसी प्रकार अग्नि और जल की शत्रुता है और वायु तत्व और पृथ्वी तत्व की शत्रुता है।

चूँकि इस प्रस्तार में तुला चालित पृथ्वी तत्व का विन्दु सैर करता हुआ खाना ३ जल तत्व में आकर विश्रान्त पाता है जल की पृथ्वी से मित्रता भी है अस्तु विन्दु अपने मित्र के क्षेत्र में आकर शुभ भी है तथा बलवान भी है कारण, मित्र के नाते। रमलज्ञको यह भी समझ लेना चाहिये जो विन्दु जिस तत्व से चलकर अपने ही तत्व के घर पहुँचता है जैसे पृथ्वी तत्व का विन्दु प्रस्तार के खाना १५ से चला तो खाना ४ में भी स्वक्षेत्री था क्योंकि खाना ४ भी पृथ्वी तत्व है। अस्तु खाना ४ में स्वक्षेत्री बन गया मगर खाना ४ में शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ बैठी है विषम शक्ल यानी ३ बिन्दु एक पाई है विषम शकल अप्रमाणित्र मानी गई है इसी कारण खाना ३ को लिया सम शक्ल भी है मित्र क्षेत्री है बलवान हो गई यह भाग्य स्थान शक्ल $\begin{smallmatrix}\cdot\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ को लिया। चूँकि बिन्दु हमारा पृथ्वी तत्व

का है जो चला है। अस्तु खाना ३ की शक्ल ÷ का पृथ्वी तत्व जो है उसको सोपान चक्र में देखा तो दूसरे नम्बर पर है। अस्तु शक्ल ÷ भाग्य स्थान बना अब इसी शक्ल ÷ की भूत काल वर्तमान काल भविष्य काल का ज्ञान प्राप्त करना हैं भूत भविष्य वर्तमान के अतरिक्त एक आकस्मिक काल भी रमलज्ञों ने माना है। अब आपको चारों काल की शक्लों को समझना है जरा ध्यानदें शक्ल ÷ के प्रथम सोपान चक्र में शकल ≡ है. इसको भूतकाल कहेंगे और शकल ÷ के आगे सोपान चक्र में शकल ÷ है यह वर्तमान काल कहा जायेगा। भविष्य काल शकल ÷ के आगे जो तत्व मिले उसी के ऊपर उसी नम्बर की शकल भविष्य काल की मानी जायेगी चूँकि पृथ्वी तत्व तो अन्तिम तत्व है इसके आगे फिर अग्नि तत्व की दूसरी शकल खोजा तो अग्नि तत्व को सोपान चक्र में शकल ≐ को पाया यह भविष्य काल का हाल बतायेगी अब आपको आकस्मिक बिन्दु का ज्ञान प्राप्त करना है। अस्तु अपने तत्व से चौथा तत्व जो क्रम से पड़ेगा वही आकस्मिक बिन्दु माना जावेगा। अब पृथ्वी तत्व शक्ल ÷ का दूसरा बिन्दु अग्नि तत्व है तीसरा वायु तत्व है चौथा जल तत्व का है अस्तु शकल ÷ पृथ्वी तत्व का चौथा बिन्दु जल तत्व की शकल ≐ को पाया—इसी प्रकार वर्तमान बिन्दु ÷ भूत काल बिन्दु ≡ भविष्य बिन्दु ≐ और आकस्मिक बिन्दुचौथा ≐ है।

आकस्मिक बिन्दु का अभिप्राय है जिस विषय की घटना की कोई चर्चा भी न हो अनायास घटना हो जावे उसको चौथा बिन्दु आकस्मिक कहते हैं इसका विस्तार पूर्वक लेख रमल दिवाकर के पृष्ठ २६ से ४३ पृष्ठ तक दिया गया है उसीको पढ़ कर समझलें।

बिन्दु चाल के नियम तथा बिन्दु के बलाबल का विचार पृष्ठ ३८ तथा ३६ में रमल दिवाकर में देखें। त्रिविधा मैत्री तथा त्रिविधा शत्रुता मित्रता आदि से लाभ तथा दृष्टि विचार आदि का पृष्ठ ४२-४३-४४

को देखें तथा बिन्दु के जीवन मरण का भी हाल ४४ से ४६ पृष्ठ तक समझें।

अब प्रश्नों के उत्तर निकालने का हाल समझें।

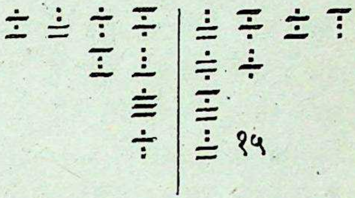

(१) इस समय भाग्य उन्नति पर है या अवनति पर है। रमलज्ञ ने पाँसा भगवान का ध्यान धर कर छोड़ा प्रस्तार यह बना देखो रमल दिवाकर पृष्ठ ४६। चूँकि खाना १५ से वायु तत्व का (तुला चाल्ति) बिन्दु चल कर खाना १३ में पहुँचा फिर खाना १३ से खाना ९ में जाकर खाना शक्ल ⁝ के वायु तत्व में जाकर रुकता है—भाग्य स्थान इसी को माना यद्यपि यह शक्ल विषम है पर बिन्दु अग्नि तत्व में रुका है मित्र क्षेत्री है। अब सोपान चक्र को सामने रक्खा तो वायु तत्व में शक्ल ⁝ सातवें घर में पाया भाग्य स्थान ⁝ है इसके आगे वायु तत्व की शक्ल ⁝ है जो प्रस्ताव में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १-५-१३ में अग्नि तथा वायु तत्व में मौजूद है—दशम विन्दु जीवका का है जो जल तत्व में शत्रु क्षेत्री मौजूद है दशम बिन्दु का भविष्य भी पृथ्वी तत्व की शक्ल ⁝ मित्र क्षेत्री है अस्तु हुक्म होता है कि यद्यपि इस समय प्रश्न कर्ता की दशा साधारण रूप में डाँवाडोल है पर भविष्य मित्र क्षेत्र में हो रहा है अस्तु भविष्य प्रश्न कर्ता का सन्तोष जनक होगा—विचार करने का कायदा यह है तुला चाल्ति बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसके बलाबल को देख कर फल

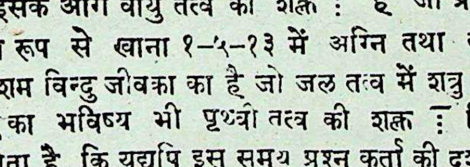

कहो बर्तमान दशा भविष्य दशा के बिन्दु को देख कर बिन्दु के बलाबल से फल कहो बलाबल की बावत रमल दिवाकर के ३९ पृष्ठ से ज्ञात करें।

(२) यदि कोई पूँछे कि मुझको उच्च पद मिलेगा या नहीं।

इसी नियत से पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बना लो। फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे। प्रथम उसको देखो बिन्दु वहीं रुका है या दहिने बायें चल कर रुका है फिर उसी विन्दु को भाग्य स्थान मान कर उसी विन्दु से सोपान चक्र के एक तथा ५ तथा १० तथा ११ व १४ बिन्दुओं के बलाबल से फल कहो। जैसे प्रस्तार बनाया तथा गुप्तोद्‌घाटन कया देखो पृष्ट ५० दूसरा प्रश्न—तुला चालित विन्दु खाना ३ शक्ल =: में मित्र क्षेत्र में जाकर रुका है यही भाग्य स्थान माना। भाग्य सन्तोषजनक है इसका वर्तमानकाल जल तत्व की शक्ल ÷ है जो गुप्त रूप से खाना ५ में उत्सकृष्ट मित्र क्षेत्री तथा खाना १४ में शत्रु क्षेत्री है। साधारण श्रेणी में बिन्दु है। इसी प्रकार ५,७,१० व ११ तथा १४ के बलावल से फल कह दो। रमलज्ञ को बुद्धि से काम लेना चाहिये विस्तारपूर्वक हाल इस प्रश्न का पृष्ठ ५०-५१ तथा आधा पृष्ट ५२ का पढ़ो।

(३) यदि कोई पूँछे क्या मुझे प्रसन्नता प्राप्त होगी।

प्रस्तार बनाकर सोपान चक्र को सामने रखकर—तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावे। उसको लग्न या भाग्य स्थान मान कर। प्रथम तथा पाँचवा तथा ११ वें विन्दु के बलाबल से फल कहो। तुला चालित विन्दु खाना ५ में रुका देखो पृष्ट ५३ चूँकि १-५-११ विन्दु के रूप सन्तोषजनक है इसी कारण जवाब दिया कि प्रश्नकर्ता को प्रसन्नता होगी मगर चिन्ता व्यथा के साथ रहेगी। खास कर खाना ५ तथा ११ बिन्दु के बराबर से फला देश कहना चाहिये।

(४) यदि कोई पूँछे मेरा स्वास्थ्य कैसा रहेगा।

इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित

विन्दु जहाँ विश्रान्त पावें उसी को लग्न या भाग्य स्थान मानकर उसके आगे १, ५ व ६, ८ व ९ व ११ विन्दु के घरों से बलाबल को देख कर फल कहना चाहिये जैसे आपने पाँसा डाला प्रस्तार बनाया। तो खाना १५ तुला चालित विन्दु चल कर खाना ८ शत्रु क्षेत्र में रुका इसका वर्तमान विन्दु सोपान चक्र में शक्ल ⁝ है यह प्रस्तार में है नहीं गुप्त रूप से भी नहीं पाया जाता है अस्तु भाग्य दशा सन्तोषजनक नहीं है। यह ⁝ शक्ल अ ब द ह पंक्ति की छठे घर की मालिक है और आपके प्रस्तार में छठे घर में शक्ल ⁝ मौजूद है। दोनों को गुणा किया ⁝ ⁝ तो यह शक्ल बनी ⁝ हमारा वायु विन्दु था सो गुणा करने से वायु विन्दु मिट गया। चूँकि प्रश्न स्वास्थ्य का है तो कहना पड़ा स्वास्थ्य की दशा अच्छी नहीं दिखाई देती है। इसी प्रकार १-५-६-११ आदि के बिन्दु के बलाबल को देखकर जवाब दिया स्वास्थ्य खराब है शान्ती करावें।

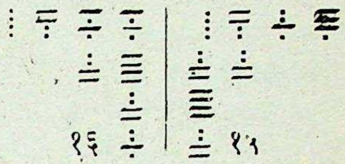

(५) यदि कोई पूँछे मेरे व्यापार की दशा सुधरी रहेगी या नहीं तथा मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

इसी नियत से भगवान का स्मरण करके पाँसा डाला प्रस्तार बनाया। मान लो आपका प्रस्तार यह बना। इस प्रकार के प्रश्न के उत्तर निकालने में लग्न का विन्दु यानी प्रथम विन्दु की वर्तमान दशा भविष्य दशा इसी प्रथम विन्दु तथा दशम विन्दु को देखो उसकी भी वर्तमान तथा भविष्य दशा पर उसके बलाबल को देखो और अपनी बुद्धि से अनुमान दोनों बिन्दुओं का बलाबल कैसा है। देखो फिर ११ वाँ विन्दु जो लाभ का है उसको भी सोपान चक्र की सहायता से देखो

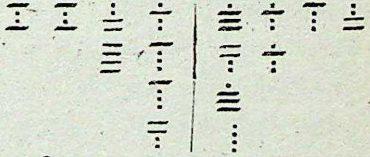

तभी अपनी बुद्धी से फल कहो। यदि उस विन्दु की शक्ल आपके प्रस्तार में न हो तब आप गुप्तोद्घाटन करके देखें कि गुप्त रूप से वह शक्ल कहाँ बैठी है उसके बलाबल से फल कहो गुप्तोद्घाटन की बाबत रमल दिवाकर के पृष्ट ४७ से मालूम करें—एक बार गुप्तोद्घाटन को हम पुनः समझा देना उचित समझते हैं। गुप्तोद्घाटन कब करना चाहिये। जब तुला चालित विन्दु चलकर जहाँ विश्राम्त पावें। फिर अपने विन्दुओं को देखें जिनसे विचार करके आपको सन्तोषजनक उत्तर देना यदि वह विन्दु आपके प्रस्तार में है नहीं तब आप गुप्तोद्घाटन करें गुप्तोद्घाटन की रीति यह है प्रथम अ ब द ह क्रम के चक्र को सामने रक्खे इस प्रकार।

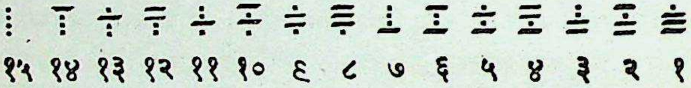

अब प्रस्तार की प्रथम शक्ल तथा अ ब द ह की प्रथम शक्ल को आपस में गुणा करो इस प्रकार अ ब द ह क्रम में शक्ल ⩧ है और प्रस्तार में शक्ल ≐ है दोनों को गुणा करो ⩧ × ≐ गुणन फल यह ⩦ हुवा इसी प्रकार १६ वों घरों की अ ब द ह पंक्ति की क्रमानुसार तथा प्रस्तार की उसी खाना की शक्ल को गुणा करते जावें अब आपको अपने इच्छित बिन्दु को तलाश करना है जो आपके इच्छित विन्दु की शक्ल प्रस्तार में नहीं मिली थी गुप्त रूप से निकाली हुई शक्ल जिस घर में मिल जावे उसी के बलाबल से फल कहो जैसे रमल दिवाकर में बिस्तारपूर्वक फल लिख दिया है इसी प्रकार आप जो प्रस्तार बनाये तो उसी प्रस्तार से सोपान को सामने रखकर इसके १-४-१०+१३-१४ विन्दुओं के बलाबल पर विचार करके फल कहना चाहिये।

(६) यदि कोई पूँछे मेरे पूर्वजों की सम्पत्ति बनी रहेगी तथा सट्टा व लाटरी से लाभ होगा या नहीं।

इस नियत से भगवान या अपने इष्टदेव का ध्यान पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनायें प्रस्तार यह बना।

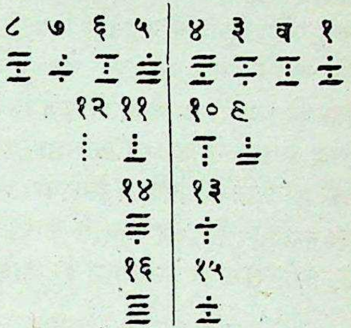

खाना १५ में शक्ल ÷ पाया तुला चालित बिन्दु जल तत्व का चलकर खाना ४ शक्ल ≡ में रुका वहाँ से दाहिने बायें जा नहीं सकता कारण दोनों तरफ पाई की रेखायें है, यद्यपि यह शक्ल विषम है या एक विन्दु ३ पाई है अप्रमाणिक रूप है पर जलत तत्व का विन्दु खाना ४ मित्र क्षेत्री है अस्तु इसी को लग्नस्थान माना पैतृक सम्पत्ति (मौरुसी जायदाद) को भी कहते है अर्थात पिता, पितामह की सम्पत्ति है इस प्रकार के विचारणीय घर विन्दु ४ तथा ८ वां विन्दु है—सोपान चक्र में इसका वर्तमान विन्दु शक्ल ≡ के आगे का विन्दु ÷ है यह खाना १ अग्नितत्व अर्थात शत्रु के घर बैठा है फिर खाना १५ स्वक्षेत्री में भी बैंठी है दोनों के योग से निर्णय किया साधारण दशा बल की है।

अब लग्न से चौथा लिया तो शक्ल ≡ जल तत्व का चौथा विन्दु शक्ल ⁝ पाया जो खाना ११ जल तत्व में स्वक्षेत्रीय बलवान है तथा ८ वाँ विन्दु शक्ल ⁝ को देखा तो यह विन्दु खाना १२ मित्र क्षेत्र में बलवान पाया चौथे विन्दु का वर्तमान विन्दु ≡ है जो गुप्त रूप से खाना ७ और दोनों स्वक्षेत्री बलवान है शक्ल ≡ प्रकट में तो प्रस्तार में है नही अब गुप्त रूप से इस प्रकार जाना सातवें घर में शक्ल ÷ है और अवदह क्रम में शक्ल सात ⁝ यह है दोनों को यानी ÷ ⁝ को गुणा किया तो यह शक्ल ≡ मिला जिसकी हमको जरूरत थी। इसी प्रकार ११ वें घर के अवदह क्रम की शक्ल ⁝ ÷ को गुणा किया तो शक्ल ≡ स्वक्षेत्री दोनों में पाया। ८ वाँ विन्दु भी मय वर्तमान विन्दुके भिन्न क्षेत्री होने से बलवान होकर बैठा है अस्तु उसका फल यह निकला कि पैतृक सम्पत्ति मिलेगी गुप्त रूप के कारण कुछ परिश्रम करना पड़ेगा।

अब लाटरी या सट्टा के विन्दु को जानने का यह नियम है विन्दु सोपान चक्र १ व ११ व १४ वाँ विन्दु प्रश्न कर्ता की ओर का है तथा विन्दु चौथा पाँचवाँ सातवाँ विपक्षी दल का है। अब देखो यदि प्रश्न कर्ता के विन्दुमय वर्तमान तथा भविष्य विन्दु के बली विन्दु हैं तो प्रश्न कर्ता को लाटरी या सट्टा में पूर्ण विजय प्राप्त होगी। यदि विपक्षीदल के विन्दु ४-५-७ विन्दु मय वर्तमान तथा भविष्य विन्दु के बली हैं तो प्रश्नकर्ता को लाटरी आदि न मिलेगी इस चक्र के मतानुसार प्रश्नकर्ता का बल कमजोर है और विपक्षी के विन्दु बलीं हैं। देखो रमल दिवाकर पृष्ठ ५८ इसी से शंका समाधान हो जावेगी

(७) यदि कोई पूँछे हमारा नसीबा किस ग्रह के कारण खराब हो रहा है अथवा व्यापार में हानि क्यों उठानी पड़ रही है लाभ कैसे होगा।

इसी नियत से प्रस्तार बनावें। फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावें उसी को लग्न मानकर उसके वर्तमान काल के विन्दु को देखें जो शक्ल वर्तमान में होगी वही ग्रह माना जावेगा यदि वर्तमान विन्दु में शक्ल ≐ या ≑ होवे तो सूर्य ग्रह यदि ≓ या ⁝ हो तो चन्द्रमा यदि ≓ या ÷ हो तो मंगल यदि ≡ या ⫶ हो तो बुध यदि ≐ या ≑ हो तो वृहस्पति यदि ÷ या ⁝ हो शुक्र यदि ÷ या ≑ हो तो शनि यदि ≐ हो तो राहु यदि ⁝ हो तो केतु ग्रह अशुभ बतलायें। इसी प्रकार अन्य प्रश्नोत्तर इसी प्रकार निकालें।

(८) आजकल भाग्य कैसा है।

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई व्यक्ति करें तो प्रस्तार पाँसा के द्वारा जैसा बता चुके बना लो मान लो आप का प्रस्तार इस प्रकार बना—

इस प्रस्तार में खाना १५ में ≑ आई अस्तु पृथ्वी तत्व का तुला चालित विन्दु खाना ४ ≑ में स्वक्षेत्री में विश्रान्त पाता है भाग्य

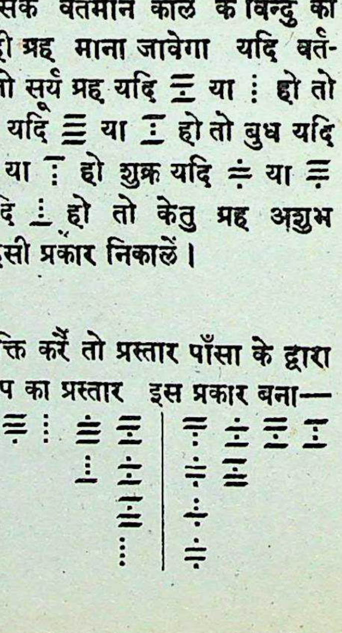

सन्तोषजनक है कारण विन्दु स्वक्षेत्री पहुँचता है इसका वर्तमान विन्दु शक्ल ÷ पृथ्वी तत्व का है जो प्रस्तार में है अब देखा शक्ल ÷ गुप्त

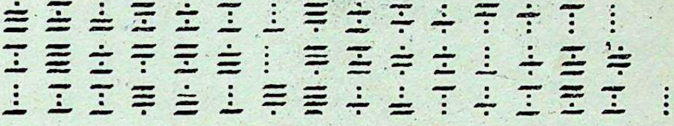

रूप से किस घर में बैठी है। गुप्तोद्घाटन में अवदह चक्र बनाया गुप्त रूप से भी शक्ल ÷ नहीं आई प्रस्तार के रूप हासिल रूप यह शक्ल ÷ अवदह घर के १३ वें घर की मालिक है अब ÷ को प्रस्तार के १३ घर में बैठी हुई शक्ल को गुणा किया ÷ ÷ तो ⁝ आई गोया पृथ्वी तत्व का विन्दु मिट गया अब इसके भविष्य रूप को देखा तो अग्नितत्व की ÷ मिली यह प्रस्तार में खाना १० मित्र क्षेत्री भी बैठी है तथा खाना १५ में जल तत्व में शत्रु क्षेत्री भी है अस्तु भविष्य फल भी साधारण रहा।

अस्तु कहाँ भाग्य प्रकट रूप में तो सन्तोषजनक है मगर वर्तमान में तथा भविष्य में मंगल तथा शनि दोनों बाधक होंगे मंगल तथा शनि की शान्ती कराये शक्ल ÷ जहाँ विन्दु विश्रान्त पाता है उसकी वर्तमान शक्ल ÷ है जो मंगल से सम्बन्ध रखती हैं और भविष्य शक्ल ÷ शनि से सम्बन्ध रखती है इसी कारण मंगल तथा शनि को शान्ती के लिए कहा गया।

अब दशम भाव को देखा तो शक्ल ÷ अग्नि का पाया जो खाना १० व १५ में मित्र क्षेत्री तथा शत्रु क्षेत्री के नाते से साधारण बल रह गया ११ वां विन्दु अग्नि का ÷ है जो प्रस्तार में खाना १३ स्वक्षेत्री बलवान बैठा है अस्तु यदि प्रश्नकर्ता मंगल तथा शनि की शांती करा दें तोआगे भाग्य बलवान होगा।

(नोट—रमल दिवाकर पृष्ठ ५६ का प्रस्तार अशुद्ध छपा है दूसरी बार शुद्ध छपेगा आप लोग इसी कुंजी का सहारा लेकर भविष्य फल कहें)

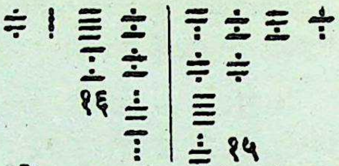

(६) यदि कोई पूँछे जो कार्य करना चाहते है वह पूरा होगा क्या ? २ भगवान का ध्यान धर कर पाँसा डाल कर प्रस्तार बनालें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर तुला चालित बिन्दु चलाकर जहाँ रुके वहाँ लग्न माने यदि विश्रान्त गृह आपकी अप्रमाणिक शक्ल हैं और उस जगह पर कमजोर भी है तो खान १५ को ही लग्न माने जैसे ऊपरोक्त प्रस्तार बना खाना १५ का वायुतत्व बिन्दु चलकर खाना ७ शक्ल ⋮ पर रुका यह अप्रमाणिक शक्ल है अस्तु लग्न खाना १५ ÷ का वायु विन्दु माना इसके विचारणीय गृह १-२-१३ हैं सोपान चक्रके अनुसार बलाबल का ध्यान करके फल कह दो-परिणाम में जो रमल दिवाकर ने पृष्ट ६०-६१ पर दिया है फल ठीक दिया है आप भी जो प्रस्तार बनावें बिन्दु १-२-१३ के बराबर से फल कहें ।

दूसरे घर से प्रश्नोत्तर निकालने का तरीका

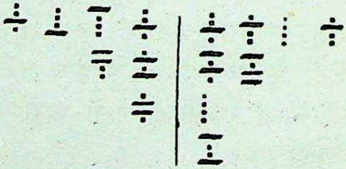

(१) यदि कोई पूँछे मेरे पास धन बना रहेगा या नहीं आप पूर्वोक्त रीत्या नुसार पाँसा डालकर प्रस्तार बनाले फिर सोपान चक्रको सामने रक्खें-तुला चालित विन्दुं जहाँ विश्राम पावें उस शक्ल तथा घर को देख कर उसके बलाबल को अपनी बुद्धी से उसीको लग्न माने यदि चालित बिन्दु अप्रमाणिक स्थान में आता है तो खाना १५ को ही लग्न मानकर सोपान चक्र के द्वारा १-४-५ विन्दु के बलाबल से फल कहो जैसे उपरोक्त प्रस्तार बना अब रमलदिवाकर ने पृष्ठ ६१ पर जो नियम दिया है उसी अनुसार अपने प्रस्तार का फल कहो ।

कोई आचार्य बिन्दु १-४-५-६ तथा ३-६-८-१० से फल कहा करते हैं दोनों तरीकों को देखकर अपनी बुद्धी के अनुसार फल कहें ।

(२) यदि कोई पूँछे मेरे व्यापार में उन्नति होगी—धन लाभ होगा—अथवा किस प्रकार से लाभ होगा ?

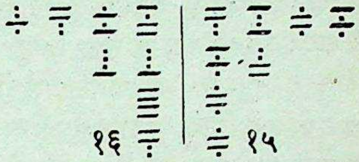

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा डाले प्रस्तार बनाये तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी शक्ल तथा खाना के बलाबल को देखकर लग्न कायम करलें—फिर सोपान चक्रको सामने रखकर बिन्दु १–२–४–६–१०–१४ के वर्तमान तथा भविष्य शक्लों के बलाबल को देखकर अपनी बुद्धी के अनुसार रमलज्ञ को फल कहना चाहिये जैसे तुला चालित बिन्दु पृथ्वी तत्व का खाना ४ स्वक्षेत्री में विश्रान्त पाता है यही लग्न माना १–२–४–६–१४ विन्दु रमल दिवाकर पृष्ट ६२ के अनुसार नतीजा यह निकला मौजूदा दशा तो सन्तोष जनक है पर आगे अशुभ फल होगा ।

(३) यदि कोई पूँछे आमुक व्यक्ति को धन किस उपाय से मिलेगा ।

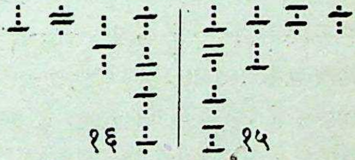

इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालों तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी के बलाबल से सोपान चक्र को सामने रखकर २–४–६–१४ विन्दु के बलाबल वर्तमान तथा भविष्य का ध्यान रखते हुये अपनी बुद्धी अनुसार शुभाशुभ फल कहो जैसे प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना—तुला चालित जल का बिन्दु चलकर खाना ८ मित्र क्षेत्र में आकर रुकता है – चूँकि अमुक व्यक्ति से तात्पर्य दूसरे व्यक्ति की बाबत प्रश्न पूछा जा रहा है जो विपक्षी रूप में है। अस्तु लग्न विन्दु का सातवा विन्दु सोपान चक्रके अनुसार सातवाँ विन्दु शक्ल ÷ का जलतत्व है—अस्तु इसी रूप शक्ल ÷ के २-४-६-१४ वे विन्दु के वलाबल से विपक्षी का फल कहो—दूसरा विन्दु ⁝ खाना १५ में

स्वक्षेत्री है इसका वर्तमान विन्दु ⁝ खाना ८ में स्वक्षेत्री तथा ९ में शत्रु क्षेत्री है सम शक्ति रहे गई है अब चौथा बिन्दु ÷ खाना १० में समबल पा रहा है वर्तमान विन्दु ÷ खाना १,५ शत्रु क्षेत्री है तथा १४ में समबल मिल रहा है छठा विन्दु ÷ भी समबल पर रहा है वर्तमान बिन्दु ⁝ गुप्त रूप से खाना ८ में मित्र क्षेत्री है बल पा रहा है १४ वाँ विन्दु विपक्षी विन्दु ÷ शक्र पृथ्वी तत्व का खाना १,५ में उत्कृष्ट मित्र क्षेत्री के नाते साधारण वल मिल रहा है तथा खाना १४ में शत्रु क्षेत्री होकर कमजोर होकर बैठा है । अस्तु २-४-६-१४ सभी विन्दु सन्तोष जनक नहीं मिल रहे है—साधारण दशा बनी रहेगी—इसी प्रकार रमलज्ञ को अपनी बुद्धी के अनुसार उपरोक्त बिन्दुओं के बलाबल के अनुसार फल फल कहना चाहिये ।

(४) अमुक व्यक्ति धनवान है या निर्धन है ।

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर—तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावें उसी के बलावल का ध्यान रखते हुये उसके सातवें बिन्दु का जो विपक्षी का होता है लग्न मानकर उसके २-१०-११-१३-१४ बिन्दु के बलाबल के अनुसार फल कहना चाहिये रमल दिवाकर के पृष्ठ ६५ पर सतर ५ में विन्दु ३ जो छिपा है अस्तु ३ के बजाय १० वाँ बिन्दु लेना चाहिये। शेष रमल दिवाकर का नियम शुद्ध है उसी का फल मान्य है पृष्ठ ६६ पढ़ें ।

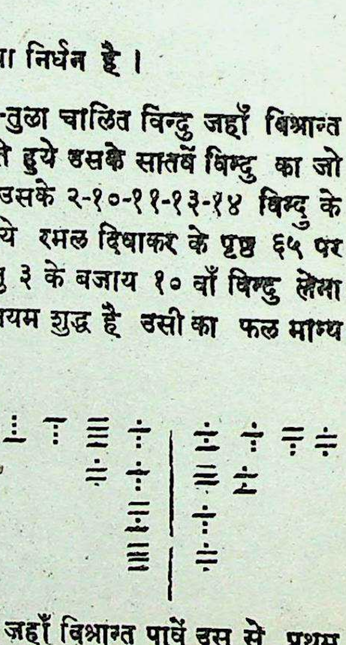

(५) यदि कोई पूछे अमुक व्यक्ति से धन प्राप्त होगा या नहीं। इसी नीयत से पाँसा फेंककर प्रस्तार बनाना चाहिये । इस प्रकार के प्रश्न में तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावें उस से प्रथम

तथा २-८-१४ बिन्दु के बलाबल से रमलज्ञ को फल देश कहना चाहिये जैसे आपने यह प्रस्तार बनाया इस में तुला चालित बिन्दु खाना ३ में होकर खाना १ अग्नि के घर में शक्ल ÷ पर जाकर रुका चूँकि खाना ३ की शक्ल अप्रमाणित है और खाना २ शत्रु क्षेत्री है अस्तु खाना १ उत्कृष्ट मित्र क्षेत्री में बिन्दु का रुकना समबल पा रहा है इसीलिये शक्ल ÷ को लग्न बिन्दु माना यदि खाना ३ का बिन्दु भी दाहिने न पहुँचता तब तो मजबूरी दर्जा पर हम खाना ३ कोही मित्रक्षेत्री के नाते लग्न मान कर उसी के १-२-८-१४ बिन्दु के बलाबल से फल कहते—पर हमने खाना १ की शक्ल को उससे उपयुक्त पाया अतः यही लग्न माना अब रमल दिवाकर के पृष्ठ ६६-६७ के अनुसार जो नियम समझाया है उसी रीति से आप अपने प्रस्तार द्वारा उपरोक्त बिन्दुओं के बलाबल से फल कहैं ।

(६) अमुक व्यक्ति से धन प्राप्त के विषय में झगड़ा होगा या आसानी से मिलेगा ?

इसी नियत से भगवान इष्टदेव का ध्यान कर पाँसा छोड़कर अपना प्रस्तार बनायें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ रुके उसी के बलाबल को देख कर अपनी बुद्धि के अनुसार लग्न कायम करें फिर सोपान चक्र को सामने रक्खें फिर तुला चालित बिन्दु अर्थात लग्न से सोपान चक्र द्वारा १-२-१५ बिन्दुओं के बलाबल को देखकर फल कहैं जैसे मान लो यह प्रस्तार आप का बना तुला चालित बिन्दु खाना ३ स्वक्षेत्री में पहुँचा यही लग्न माना इस प्रथम बिन्दु यही ⋮ खाना ३-११-१५ में स्वक्षेत्री बलवान होकर बैठा है वर्तमान बिन्दु जल ⋮ का दूसरा बिन्दु ⋮ है जो प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १० व १४ में उत्कृष्ट मित्र क्षेत्र में बैठा है सम बल (साधारण) बल पा रहा है खाना १० में गुप्त इसलिये कहा खाना १०

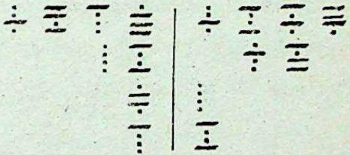

में शक्ल ÷ है और अवदह कम खाना १० की मालिक शक्ल ÷ है अस्तु ÷ × ÷ से शक्ल ⁝ आई इसी प्रकार खाना १४ में ÷ तथा अवदह की १४वीं शक्ल ⁝ है अस्तु ÷ × ⁝ को गुणा किया तो ⁝ आई जिसकी हमको खोज थी अन्य घरों में गुणा करने से पायेंगे नहीं आप इसी प्रश्न के गुप्तोद्घाटन के पृष्ठ ६७ की अन्तिम लाइन देखें इसी प्रकार खाना २–१५ के बिन्दु की वर्तमान दशा तथा उनके बलाबल से रमल प्रदीप का पृष्ठ ६८ का फल कहा माल मिलेगा पर टिकेगा नहीं इसी प्रकार आप अपनी बुद्धी से फल निकालें।

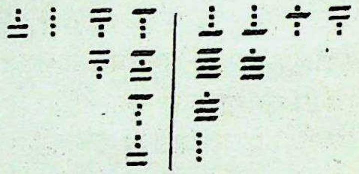

(७) यदि कोई पूँछे मेरी भाग्य में धन पाने का योग है या नहीं ? इसी नियत से प्रस्तार बनावें। फिर प्रस्तार से तुला चालित बिन्दु को जहाँ विश्रान्ति पावें अपनी बुद्धि से बलाबल का विचार कर वही लग्न माने फिर लग्न बिन्दु से १–२–४–१० बिन्दुओं के बलाबल तथा वर्तमान बिन्दु तथा भविष्य बिन्दु के बलाबल से रमलज्ञ फलादेश कहैं जैसे प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना—चूँकि वायु तत्व का तुला चालित (खाना १५) से चल कर खाना ५ में विश्रान्ति पाया फिर दाहिनी तरफ खाना ३ में जाकर रुका चूँकि पाँचवा घर जिस में बिन्दु रुका है मित्र क्षेत्री के नाते से बलवान पाते हैं अस्तु इसी को लग्न माना ⁝ वायु तत्व सोपान चक्र में देखा इसका वर्तमान तथा दूसरा बिन्दु ⁝ है जो खाना ७ और १५ में सम बल पा रहा है। अब खाना २ यानी लग्न से दूसरे बिन्दू को देखा तो वही ⁝ मिली जिस को हम सम बल लिख चुके हैं चाहे वर्तमान बिन्दू कहैं या दूसरा बिन्दू अब दूसरे बिन्दू का वर्तमान बिन्दू ☰ है जो खाना ११ में है समबल पा रहा है। शुभ है अब बिन्दू ४ को देखा तो ⁝ पाया यह खाना ८ में शत्रु क्षेत्री है तथा १६ में भी शत्रु क्षेत्री है। अस्तु यह

चौथा बिन्दू कमजोर पड़ गया। इसका वर्तमान बिन्दु ⁝ है जो गुप्त प्रकट दोनों में नहीं पाया जाया इसका पाँचवा बिन्दू भी यही ⁝ है जो मौजूद नहीं है। अलबता पाँचवें बिन्दू का बर्तमान बिन्दू ⁝ ३ में समबल पा रहा है। चूँकि ४, ५ बिन्दु जो मुख्य हैं कमजोर है अस्तु जवाब दिया कोई आशा नहीं इसी प्रकार रमलज्ञ को भी अपनी बुद्धी के अनुसार १-२-४-५ बिन्दू के बलाबल से फल कहना चाहिये।

(८) यदि कोई पूँछे किस के द्वारा धन प्राप्त होगा ?

इसी नियत से प्रस्तार रमलज्ञ को बनाना चाहिये। इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर बिन्दू १ व २ के बलाबल से बताया जाता है। तथा २ का बिन्दू अथवा उसका वर्तमान बिन्दू प्रस्तार के जिस घर में पाया जावे उसी के सम्बन्ध से उसी द्वारा धन मिलने का योग रमलज्ञ बतावें। मान लो कि आप का यह प्रस्तार बना तुला चालित बिन्दू खाना ४ स्वक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है यही लग्न है इसका दूसरा बिन्दू पृथ्वी तत्व का बिन्दू शक्त ÷ है। जो गुप्त रूप से खाना १२ व १४ में मौजूद है। स्वक्षेत्री तथा शत्रु क्षेत्री है समबल हो गया इसका वर्तमान बिन्दू ⁝ खाना १६ में बलवान स्वक्षेत्री है। अस्तु धन मिलेगा जरूर अब किस के द्वारा मिलेगा। दूसरा बिन्दू ÷ खाना १२ व १४ में है। बारहवाँ घर तथा ११वाँ शत्रु का होता है। अस्तु विपक्षी के विजय द्वारा धन मिलेगा। यदि प्रथम घर में बिन्दू आवे तो अपने ही भुज बल से धन मिलेगा।

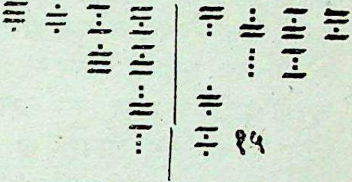

यदि दूसरे घर में हो तो मित्र द्वारा यदि २ में हो तो अपने सगे सम्बन्धी से यदि ४ में हो तो ससुर या सास से यदि ५ में हो तो पुत्र या भतीजा आदि से यदि ६ में हो तो नौकर द्वारा यदि ७ में हो तो

किसी शत्रु या स्त्री द्वारा यदि ८ में हो तो शत्रु द्वारा यदि ६ में हो तो किसी पर देसी द्वारा यदि १० में हो तो मित्र द्वारा यदि ११ या १२ में हो तो विपक्षी द्वारा धन मिलेगा।

शेष नियम रमल दिवाकर पृष्ट ७१ से देखकर अपनी बुद्धी के अनुसार फल कहो।

(६) अमुक व्यक्ति कृपण है या उदार है ?

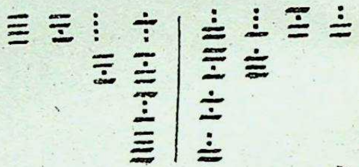

इस नियत से प्रस्तार बना लो। फिर तुला चालित विन्दु से लग्न अपनी बुद्धी के अनुसार कायम करलों जैसा नियम अनेकए बार बताया जा चुका है लग्न से १-२-८-तथा १२ विन्दु के बलाबल से अपनी बुद्धी अनुसार फल कहो मानलिया आपका यह प्रस्तार बना। खाना १५ का विन्द् खाना ६ में रुका अप्रमाणित है। अस्तु ⋮ ही को लग्न माना अस्तु रमल दिवाकर के पृष्ठ ७२ के नियम के अनुसार फल बयान किया कि वह कृपण है इसी विन्दु के बलाबल से रमलज्ञ के भी फल अपनी बुद्धी के अनुसार कहना चाहिये।

(१०) मुझे क्रय विक्रय (खरीदने बेचने में) लाभ होगा या हानि होगी।

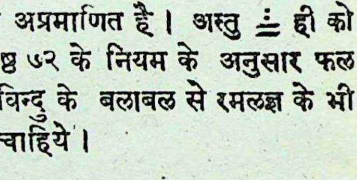

रमलज्ञ को चाहिये अपने इष्ट-देव का ध्यान धरकर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसके १-२-८ विन्दु के बलाबल से रमलज्ञ को फल कहना चाहिये मिसाल के तौर पर देखो यह प्रस्तार बना खाना १५ का वायु विन्दु खाना ८ शत्रु क्षेत्री में बिश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना इसका वर्तमान या दूसरा बिन्द ⋮ है सोपान चक्र से देखो यह खाना १४ स्वक्षेत्री बलवान

होकर बैठा है—दूसरे विन्दु का वर्तमान विन्दु ÷ है यह खाना ६ में मित्र चेत्री है—इसी प्रकार आठवाँ बिन्दु को देखा-सम्बल पा रहा है—जवाब दिया साधारण लाभ रहेगा—१-२-८ के बलाबल से फल रमलज्ञ को कहना चाहिये दूसरी तीसरी विधि का निर्णय रमल दिवाकरके पृष्ठ ७४ से करो।

(११) अमुक व्यक्ति से लेन देन का सौदा हो जायेगा या नहीं।

इस प्रकार का प्रश्न यदि कोई करै तो रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान देकर पाँसा छोड़ कर अपना प्रस्तार बनाये-फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे। उसके बलाबल को अपनी बुद्धी से निर्णय करके लग्न कायम करै। फिर सोपान चक्र को सामने रख कर उसके १-२-११-१३-१४-१५ विन्दुओं के बलाबल को तथा उन विन्दुओं के वर्तमान विन्दुओं के शुभाशुभ अथवा बलाबल को विचार कर तब बड़ी सावधानी से रमलज्ञ को सन्तोषजनक उत्तर देना चाहिये। मान लिया कि हम ने प्रस्तार बनाया। यह प्रस्तार बना—अब तुला चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का चल कर खाना ७ में पहुँचा फिर दाहिनी तरफ खाना ६ में जाकर खाना ५ में पहुँचा! इसमें खाना सात वाला विन्दु ÷ मित्र चेत्री के नाते से बलवान है इसी कारण इसी को लग्न ÷ माना गया अन्य उदाहरण विन्दु १-२-११-१३-१४-१५ को दिये गये हैं और समझाया गया है तो रमल-दिवाकर के पृष्ठ ७५ को देखकर समझें इसी प्रकार रमलज्ञ को उपरोक्त विन्दु विन्दुओं के बलाबल से जो प्रस्तार बनायें उसका परिणाम जो आवे अपनी बुद्धि के अनुसार प्रश्न कर्ता को बतावें।

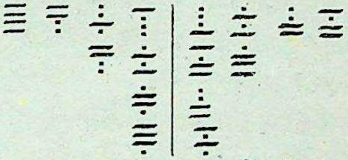

दूसरा सुन्दर तरीका भी पढ़कर समझ कर काम लें।

अर्थात् २-१४ विन्दु जो सौदा खरीदता है उसका है तथा १-१३ वाँ

बिन्दु बेचने वाले के तथा १५ वाँ बिन्दु न्यायाधीश (दलाल) का है और ११ वाँ बिन्दु आमदनी का है अस्तु रमलज्ञ अपने बुद्धी के अनुसार सभी बिन्दुओं के बलाबल को देखकर समझ कर फला देश करें ।

(१२) आज कल सौदा खरीदने अथवा बेचने से लाभ होगा या नहीं ।

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई करे तो रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बनाये फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसके बलाबल को अपनी बुद्धी के अनुसार लग्न कायम करें फिर १-१० बिन्दुओं के बलाबल को देख कर तथा वर्तमान बिन्दु के बलाबल को देख कर रमलज्ञ को हुक्म सुनाना चाहिये । मान लो आप का प्रस्तार यह बना तुला चालित बिन्दु खाना १ में रुका इसी को लग्न माना अस्तु १-११ बिन्दु के बलाबल को विचार किया जैसा रमल दिवाकर में सफा ७६ पर लिखा है जवाब दो कि लाभ हो जायेगा मगर कुछ रुक कर कारण लग्न बिन्दु [illegible] पा रहा है ।

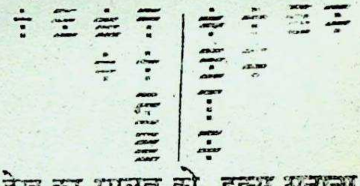

(१३) अन्न की खरीद तथा बेचने में कैसा सौदा रहेगा क्या लाभ होगा ।

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान करके पाँसा छोडकर प्रस्तार बनालें—फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें उसके बला को समझ कर लग्न कायम कर ले फिर सोपान्द चक्र को सामने रख कर लग्न से छठे व ११ वें बिन्दु को देखें यदि वह अग्नि या वायु के घर पड़े अर्थात निर्गम घर में बिन्दु हो तो इसी के बलाबल से फल कहो यदि अग्नि वायु में हुये तो बेचने से लाभ होगा यदि १-१३वाँ बिन्दु बली रहा अर्थात जल पृथ्वी घरों में पड़े तो खरीदे १५-१६ बिन्दु को देखना चाहिये लाभ का निर्णय यही १५-१६ बिन्दु देंगे ।

(१४) इस अन्न का व्यापार स्वयं करें या साझीदार बनावें कैसे लाभ होगा।

इसी नियत से रमलज्ञ को पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बनाना चाहिये। अब तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसीके बलाबल को देख कर लग्न कायम करें इसमें १३वाँ बिन्दु अपने बल का है तथा प्रथम बिन्दु भी अपने बल का है यानी १-१३ बिन्दु के बलाबल पर विचार करो। वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु पर भी विचार करो—फिर २-१४वाँ बिन्दु साझीदार का है उसके बलाबल को भी देखो यदि १-१३ बलवान है तो आप स्वयं भगवान का भरोसा करके व्यापार करें लाभ होगा यदि २ व १४ बिन्दु तगड़े हो तो साझीदार बना लो लाभ होगा—कोई आचार्य १५ वें बिन्दु को केवल प्रश्न कर्ता का और १६वाँ बिन्दु साझीदार का मानते हैं यदि १५वाँ बिन्दु बली हो तो खुद काम करो लाभ होगा यदि १६वाँ बिन्दु बली हो तो साझीदार बना कर काम करो लाभ होगा।

(१५) अमुक खाने वाली चीज या औषधि लाभदायक होगी या नहीं?

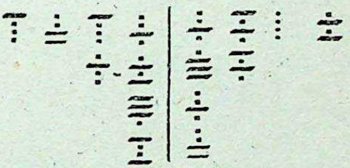

इसी नियत से रमलज्ञ को इष्टदेव का ध्यान धर कर प्रस्तार पाँसा छोड़ कर बनाना चाहिये—फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें—उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें—फिर सोपान चक्र द्वारा उसके ६-८ बिन्दुओं के बलाबल को देखना चाहिये—मान लो प्रस्तार आप का यह बना। अब तुला चालित बिन्दु चल कर खाना २ में पहुँचा वहाँ से बाईं तरफ स्थान पाता हुआ खाना ८ तक पहुँचा इसमें खाना ३ तथा खाना ७ के घर समरूप है यानी २ बिन्दु २ पाई है शेष नियम अप्रमाणित है अब दोनों में ÷ को अधिक बली माना क्योंकि चलकर प्रथम मातृ पंक्ति (उम्महात) में रुका है अस्तु ÷ खाना ३ में बैठे बिन्दु को लग्न माना

÷ लग्न का वर्तमान बिन्दु शक्ल ÷ है जो खाना ५ व १३ में मित्र-क्षेत्री है। तथा खाना ४ में शत्रुक्षेत्री भी है लग्न का रूप ÷ यह भी सम बल पा रहा है। इसका छठा बिन्दु वायु तत्व का ⁝ है जो खाना ७ व १५ में सम बल पा रहा है इसका वर्तमान बिन्दु ⁝ है जो खाना १६ में शत्रुक्षेत्री हो कर बैठा है छठे बिन्द का भविष्य बिन्दु ÷ जल तत्व का है यह खाना १ में शत्रुक्षेत्री है। तथा ८वाँ बिन्दु वायु तत्व का ⁝ है जो प्रस्तार में है नहीं न गुप्त रूप से ही पाया जाता है। इसका वर्तमान बिन्दु ÷ है जो खाना ३ में सम बल पा रहा है अस्तु २ व ८ बिन्दु साधारण रूप में हैं बल नहीं पा रहे है। अस्तु लाभ दायक न होगी रमलदिवाकर में पृष्ठ ७८ का परिणाम विचारणीय है ठीक नहीं आगामी संशोधन में सुधारा जायेगा।

(१६) आज मैं खाकर आया हूँ या भूका हूँ ? यदि कोई सज्जन इस प्रकार का प्रश्न करें तो इसी नियत से पाँसा डाल कर प्रस्तार रमलज्ञ

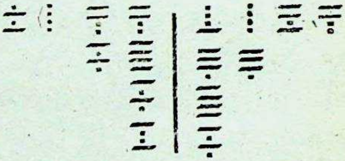

को सर्व प्रथम इष्टदेव का ध्यान करके प्रस्तार बनाना चाहिये—इसके विचारणीय बिन्दु १–२–६ हैं यदि सभी बिन्दु बलवान हो तो खूब डट कर खाया है यदि सभी निर्बल हो तो कहना चाहिये भूखे हैं खाया नहीं है यदि बिन्दु २–६ में से एक बली हो एक निर्बल हो तो कहना चाहिये कुछ खाया है यदि १–२–६ बली खाना जल या पृथ्वी में हो तो खाया है यदि कमजोर हों यानी अग्नि वायु के घरों में (निर्गम) हो तो कहना चाहिये नहीं खाया है यदि दोनों प्रकार के बली व निर्बल हो तो कम खाया है—सभी अशुभ निर्बल क्रूर हों तो पूर्ण रूप से भूखे हैं भोजन करते झगड़े की नौबत आ गई है - मान लिया आपका उपरोक्त प्रस्तार बना—चूँकि तुला चालित बिन्दु सप्तम स्थान में विश्रान्ति पाकर पंचम भाव में जाकर रुका है ⁝ अप्रमाणित है अस्तु

⩷ को लग्न माना अब सोपान चक्र को सामने रक्खा लग्न का दूसरा बिन्दु ÷ है यह प्रस्तार में है नहीं पर गुप्त रूप से खाना १ तथा १३ में मौजूद है इस प्रकार प्रस्तार में खाना १ में ⩷ है अवदह क्रम में प्रथम घर की ≡̇ है अस्तु शक्ल ⩷ × ≡̇ को गुणा किया तो ÷ पाया इसी प्रकार खाना १३ की शक्ल ≣ को अवदह क्रम की शक्ल ÷ से गुणा किया तो ≣ × ÷ = ÷ पाया—दोनो समक्षेत्री हैं इस ÷ का वर्तमान बिन्दु ⫟ है यह भी प्रस्तार में कही नहीं है—अब छठा बिन्दु देखा ≑ पाया यह भी प्रस्तार में नहीं है मगर गुप्तरूप से खाना ५ में है—दोनों बिन्दु प्रस्तार में नहीं बस कहा साधारण भोजन शाक फल खाया है शेष अपनी बुद्धी के अनुसार रमलज्ञ फल कहैं।

(१७) आज बादल घिरा है वर्षा होगी या नहीं ?

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई सज्जन करै तो रमलज्ञ को चाहिये अपने इष्ट देवता का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—फिर प्रस्तार में शक्ल ≑ को देखें कारण यही जल की शक्ल है—यदि यह शक्ल जल या पृथ्वी के घर में हो तो वर्षा होगी यदि अग्नि या वायु के घरों में होगा तो वर्षा न होगी हम प्रथम लिख चुके हैं प्रस्तार के १–५–९–१३ घर अग्नि के है तथा २–६–१०–१४ बायु के घर माने गये है और ३–७–११–१५ जल के घर माने गये है तथा ४–८–१२–१६ घर पृथ्वी के माने गये है—अस्तु ≑ जल या पृथ्वी के घरों में होगी तो वर्षा खूब होगी इस प्रश्न का उत्तर रमलदिवाकर के पृष्ठ ७९ पर विस्तार रूप से किया गया है रमलज्ञको चाहिये उसे समझकर उसी नियम से अपना प्रस्तार बनाकर उसी के बलाबल पर हुक्म लगावें।

दूसरा सुगम उपाय—इस प्रकार का प्रश्न जब कोई प्राणी कर बैठे—तो रमलज्ञ को ध्यान देना चाहिये कौन स्वर तीव्र गति से चल रहा है—स्वर प्रत्येक प्राणी का सदैव एक चला करता है एक बन्द रहता है—यदि आप का दाहिना स्वर चल रहा है (दाहिने को सूर्य स्वर

कहते हैं) यदि सूर्य स्वर चल रहा है तो रमलज्ञको फौरन जवाब देना चाहिये कि वर्षा न होगी चाहें घन घोर घटा छाई हो तब भी वर्षा न होगी- यदि रमलज्ञ का बायाँ स्वर तीव्र गति से चल रहा है तो चाहे कम भी बादल हो वर्षा काफी होगी यदि संयोग वश रमलज्ञ के दोनों स्वर चल रहे हैं जिसे सुखमना स्वर भी कहते हैं तो कहना चाहिये बादल जो घिरा है वायु के झकोरे से उड़ जायेगा वर्षा न होगी चन्द्र स्वर जब बाँया स्वर तीव्र गति से चला करता हैं उसे चन्द्र स्वर कहते हैं—सूर्य चन्द्र दोनों स्वरों को याद कर लेना चाहिये।

अथ तृतीय ग्रहों के प्रश्नों का विवरण

(१) क्या मुझे शिल्प विद्या (सिलाई, कताई, बुनाई इत्यादि) का ज्ञान प्राप्त होगा या नहीं ?

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई करे तो रमलज्ञ को चाहिये इष्ट देवता का ध्यान धरकर पाँसा डालकर प्रस्तार बनायें—फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी के बलाबल को अपनी बुद्धी के अनुसार लग्न कायम करें फिर सोपान चक्र से लग्न से २–३–घरों के बलाबल को देखकर अपनी बुद्धी के अनुसार उसका फल कहें।

मान लो रमलज्ञ ने इस प्रकार का प्रश्न सोचकर पाँसा डाला प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना।

खाना १५ से जल तत्व का विन्दु चल कर खाना २ में पहुँचा फिर वहाँ से बाई तरफ को चलकर खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। अब इसमें खाना २ का विन्दु स्वक्षेत्री होकर बलवान होकर बैठा है अस्तु इसी तृतीय ग्रह ⋮ को लग्न माना अब सोपान चक्र को सामने रखकर ⋮ के दूसरे विन्दु को देखा तो ⋮ पाया वह प्रस्तार

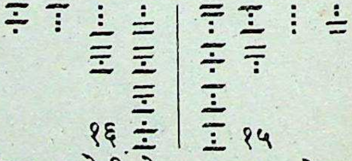

में छठे घर में स्वक्षेत्री होकर बैठा है इसका वर्तमान बिन्दु ÷ मित्रक्षेत्री बलवान है। अब ≡ के तीसरे बिन्दु को तलाश किया तो ÷ पाया यह तो खाना ४ में मित्रक्षेत्री बलवान है वर्तमान बिन्दु इसका ÷ है जो प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त से खाना २ में बैठा है कारण खाना २ में शक्ल ⁝ है और अबदह क्रम में दूसरे घर की शक्ल ≡ है अस्तु ⁝ ५ ≡ से शक्ल ÷ आ जाती है और तीसरी दृष्टि भी शुभ है। अस्तु जवाब दिया कि यह विद्या प्राप्त होगी इसी प्रकार रमलज्ञ को चाहिये कि अपना प्रस्तार बनाकर खाना २-३ बिन्दु के बलाबल से फल कहें। नोट—कोई कोई आचार्य बिन्दु ३-६-११ के बलाबल से फल कहते हैं।

(२) अमुक व्यक्ति यथार्थ में विद्वान है या केवल दिखावा है ?

इस प्रकार का यदि कोई प्रश्न करें इसी नियत से प्रस्तार बनायें— फिर तुला चालित बिन्दु के विश्रान्ति से लग्न कायम करके सोपान चक्रको पास रक्खें—फिर लग्न से बिन्दु ५-९-तथा १० बिन्दु के बला बल से रमलज्ञ को फला देश कहना चाहिये।

जैसे आपने प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना तुला चालित बिन्दु खाना २ में पहुँच कर खाना ४ में पहुँचा स्वक्षेत्री के नाते इसी को लग्न माना—अब रमल दिवा करके पृष्ठ ८१ के अनुसार बिन्दु ५-९-१० के बलाबल से फल कहा पूर्ण विद्वान है।

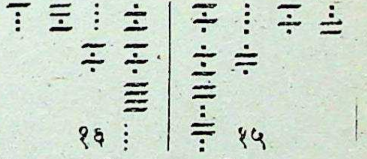

पृष्ठ ८१ पर रमल दिवाकर का प्रस्तार गलत छप गया है रमलज्ञ इसी प्रस्तार को ठीक माने।

नोट—कोई कोई आचार्य बिन्दु १०-१५ के बलाबल से फल कहते है। दोनों को देखकर अपनी बुद्धी के अनुसार फला देश कहें।

(३) अमुक व्यक्ति से शास्त्रार्थ करना चाहते है हम जीतेंगे या नहीं—

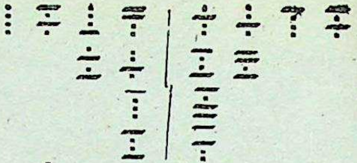

इस प्रकार का यदि कोई प्राणी प्रश्न करें तो प्रस्तार बना· कर विन्दु चाल को चलाकर विश्रान्ति गृह ही को लग्न मानें। फिर विन्दु १७३ के बलाबल से प्रश्नकर्ता का फल कहें तथा ७ ६ के बलाबल से विपसी का फल कहें जिधर विन्दु बलवान होंगे वहीं जीतेगा—जैसे प्रस्तार बनाया यह बना अब रमलदिवाकर के पृष्ठ ८२ के अनुसार-१-३ के विन्दुको देखा फिर विपक्षी के ७ वा ६ बिन्दु देखा बिपक्षी के विन्दु बलवान हैं अतः जवाब दिया आप जीतेंगे नहीं— कोई आचार्य—१-३-६ प्रश्न कर्ता के तथा ७-९-११ विपक्षी के कहते हैं दोनों के बलाबल से फल कहना चाहिये।

(४) हमारा इष्ट सिद्ध होगा या नहीं अथवा हमारा तन्त्र सिद्ध होगा या नही ?

यदि कोई इस प्रकार का प्रश्न करे तो इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाना चाहिये—अस्तु तुला चालित विन्दु के विश्रान्ति को लग्न मानकर सोपान चक्र को सामने रख कर उसके १-३-६ बिन्दु के बलाबल से रमलज्ञ को फल कहना चाहिये। जैसे आपने प्रस्तार बनाया।

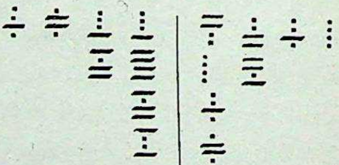

यह प्रस्तार आपका बना चूँकि तुला चालित विन्दु खाना ४ में स्वक्षेत्री होकर विश्रान्ति पाया है दायें बायें जा नही सकता अस्तु इसी ⚍ को लग्न माना-अब रमलदिवाकर के पृष्ठ ६६ के लिखित रीति के अनुसार फलादेश कह दिया विन्दु पूर्ण बलवान नहीं पर भविष्य सन्तोष जनक है। इसी प्रकार रमलज्ञ को अपना प्रस्तार बनाकर १-२-९ विन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये।

(५) टोना टोटका या मनौती या देव पूजा कामना अनुसार करना चाहता हूँ क्या सफलता होगी ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करै इसी नियत से इष्ट देव भगवान का स्मरण करके पाँसा डाल कर प्रस्तार बनालें—फिर विन्दु चाल द्वारा विश्रान्तिक विन्दु को लग्न मान कर फिर सोपान चक्र को सामने रखकर अवदह क्रम तथा प्रस्तार की शक्लों को गुणा करके गुप्तोद्घाटन भी कर लेना चाहिये ताकि आपको सुगमता पूर्वक मालूम हो सके कि हमारा इच्छित विन्दु यदि प्रस्तार में प्रकट रूप में नहीं मिल रहा है तो वह विन्दु गुप्तरूप से किस घर में बैठा है उसी के बलाबल को देखना चाहिये फिर खाना ३-६-११-१५ के विन्दुओं के बलाबल से रमलज्ञ को उसी मतानुसार शुभाशुभ तथा बलाबल पर विचार कर तब अपना निर्णय सुनाना चाहिये। मान लो आपने प्रस्तार यह बनाया—तुला चालित विन्दु खाना ३ में होकर खाना १ में विश्रान्ति पाया है इसमें दूसरे घर का विन्दु स्वक्षेत्री के नाते बलवान है इसी को लग्न कायम किया। अब सोपान चक्र में विन्दु वायु तत्व के ⁝ को लग्न मानकार २-६-११-१५ बिन्दु के बलाबल के अनुसार जैसा रमलदिवाकर के पृष्ठ ८६ तथा ८७ पृष्ठ पर नियम समझाया है इसी नियम के अनुसार फल कहा सफलता की आशा कम है। इसी प्रकार रमलज्ञ अपना पाँसा अलग डालकर प्रस्तार बनाकर उपरोक्त—३-९-११-१५ के बलाबल से हुक्म लगावें—

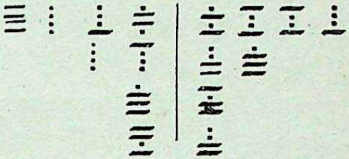

(६) मेरा भाई मुझ से प्रेम करता है या बनावटी प्रेम है ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करे तो इसी नियत के अनुसार रमलज्ञ को पाँसा डालकर प्रस्तार बनाना चाहिए फिर तुला

चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी को लग्न मानना चाहिये फिर सोपान चक्र को सामने रखकर प्रस्तार की शक्लों के घरों से अवरुद्ध क्रम की शक्लों से क्रमानुसार नवीन शक्लें बनाकर उस पर नम्बर छोडते जावे ताकि यह ज्ञात होता रहे यदि हमारा इच्छित बिन्दु प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं है तो गुप्त रूप से कहाँ बैठा है उसी के बलाबल से फल आगे कहना चाहिये अब इस प्रकार प्रश्नों को हल करने के लिये लग्न से १–५ बिन्दु तो प्रश्न कर्ता के मानो तथा ३–७ बिन्दु भाई के मानो जिधर बिन्दु बली मिले उसी तरफ का प्रेम कहो जैसे प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना। अब रमल दिवाकर के प्रश्न ८७ तथा ८८ के अनुसार जो क्रम समझाया गया है। उसी अनुसार फलादेश भी दर्ज किया गया है—इसी प्रकार रमलज्ञ को भी प्रस्तार बनाकर उपरोक्त बिन्दु १–५ बिन्दु तथा ३–७ बिन्दु के बलाबल से फलादेश कहना चाहिये।

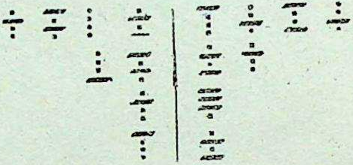

(७) हमारे भाई की परिस्थिति कैसी है ?

इस प्रकार के प्रश्न जो सज्जन करें प्रस्तार बनाकर लग्न को तलाश करें फिर लग्न से १–३–६ बिन्दुओं के बलाबल को ध्यान रख फलादेश कहे जैसे मान लो यह प्रस्तार अपका बना—अब तुला चालित बिन्दु इस प्रस्तार का खाना २ स्वक्षेत्रा में जाकर रुका फिर बाईं तरफ खाना ४ में जाकर शत्रु क्षेत्र में रुका—उसको लग्न नहीं माना। खाना ३ में बिन्दु आपका विषम होने के कारण अप्रमाणित माना। अस्तु स्वक्षेत्री खाना २ के बिन्दु को लग्न माना अब रमल दिवाकर के पृष्ठ ८९ तथा ९० के लेख

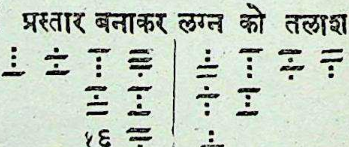

को पढ़ कर नतीजा निकाला चूँकि प्रथम बिन्दु बली है स्वस्थ्य तो है पर चिन्ता युक्त है इसी प्रकार रमलज्ञ का अल्म अपना पाँसा डाल कर प्रस्तार बनाना चाहिये फिर सोपान चक्र को सामने रख कर अपने प्रस्तार का गुप्तोद्घाटन भी कर लेना चाहिये ताकि गुप्त रूप से बैठी शक्ल का पता सुगमता पूर्वक लग जावे ।

(८) हमारे भाई व बहिन हैं कि नहीं तथा कितने हैं ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करै । इसी नियत से रमलज्ञ को अपने इष्टदेव भगवान का स्मरण कर तब पाँसा डाल कर प्रस्तार बनाना चाहिये फिर तुला चालित बिन्दु द्वारा अपने इच्छित बिन्दु को लग्न मानकर सोपान चक्र सामने रखकर उसी प्रस्तार का गुप्तोद्घाटन भी कर लेवें ताकि इच्छित बिन्दु यदि प्रस्तार में नहीं मिल रहा है तो गुप्त रूप से किस जगह बैठा है उसी के बलाबल से फल कहना चाहिये । इसमें केवल तीसरा बिन्दु देखा आयगा मान लो आपने पाँसा डालकर प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना चूँकि खाना १५ का पृथ्वी तत्व का बिन्दु अपने स्थान से चलकर खाना १ में विश्रान्ति पाता है वही लग्न बिन्दु है । अब सोपान चक्र को देखा पृथ्वी तत्व की शक्ल का तीसरा बिन्दु यह मिला यह प्रस्तार में २ जगह खाना ३ तथा खाना ६ में मौजूद है चूँकि खाना ३ जलतत्व की स्त्रीलिंग है और खाना ६ वायु तत्व का पुल्लिंग है अस्तु अपनी बुद्धि के अनुसार कहा एक भाई १ बहिन है । अग्नि वायु के गृह नर (पुल्लिंग) माने गये हैं तथा जल और पृथ्वी के घर स्त्रीलिंग (कन्या) के माने गये ।

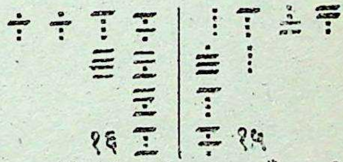

नोट—रमल दिवाकर में इसका प्रश्न पृष्ठ ६० पर है । पर हमने उस प्रस्तार से नहीं समझाया है दूसरा प्रस्तार बना कर समझाया है ।

उपरोक्त प्रस्तार का गुप्तोद्घाटन किया तो यह बना—

अ ब द ह क्रम की शक्लै—

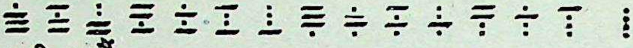

प्रस्तार की शक्लें—

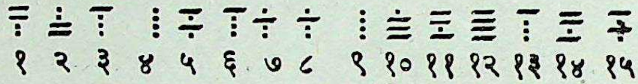

गुणन फल—

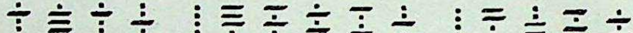

इन गुप्तोद्घाटन में हमारा इच्छित तीसरा ३ प्रस्तार में गुप्त रूप से कहीं नहीं है अस्तु १ भाई १ बहिन मौजूद हैं।

चौथे गृहों के प्रश्नों के उत्तरों का विवरण

(१) क्या मेरी सम्पत्ति स्थिर रहेगी ?

इस प्रकार का प्रश्न यदि कोई करे तो रमलज्ञ को चाहिये कि अपने इष्ट देव का स्मरण कर इसी नियत से पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल पर निर्णय करके उसी को लग्न मान कर उसके चौथे तथा दशम विन्दु के बलाबल को देख कर रमलज्ञ को फल देश कहना चाहिये। मान लो आपका पाँसा इस प्रकार का बना अब तुला चालित विन्दु खाना ३ में होकर बाइ तरफ खाना ८ तक जाकर विश्रान्त पाता है सिवा पंचम के विन्दु न ÷ और सब विषम शक्लैं अप्रमाणित है अस्तु शक्ल ÷ को लग्न माना विन्दु उत्कृष्ट मित्र क्षेत्री है साधारण बल पा रहा है। अब सोपान चक्र बनाया रमल दिवाकर में सोपान चक्र इसी प्रश्न का वायु तत्व का ५-६ विन्दु में प्रूफ की त्रुटी हो गई न रमलज्ञ को अपनी पुस्तक रमल दिवाकर के पृष्ट ८१ का सोपान ठीक कर लेना चाहिये। अब पृष्ठ ८२ पर के

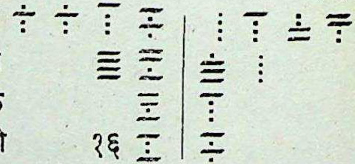

लिखे हुये नियम के अनुसार उपरोक्त प्रस्तार से फला देश कह दिया सम्पत्ति स्थिर रहेगी। चूँकि वर्तमान विन्दु चौथा कुछ मात्रा मे कमजोर हो रहा है पर बिगड़े ही नहीं—

इसी प्रकार रमलज्ञ को ४-१० के बलाबल से फल कहना चाहिये।

(२) सम्पत्ति का खरीदना तथा वेचना इस समय मेरे लिये शुभ है या अशुभ है ?

इस प्रकार के प्रश्न करने में सर्वप्रथम रमलज्ञ को अपने इष्टदेव का ध्यान करके बड़ी श्रद्धा से एकाग्र चित्र होकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाना चाहिये फिर तुला चालित विन्दु जिस स्थान पर विश्रान्ति पावे अपनी बुद्धी के अनुसार उस विन्दु के बलाकर को देखकर लग्न कायम करलें फिर १–३–४–५ विन्दु के बलाबल को देखकर फलादेश कहना चाहिए लग्न से तीसरी विन्दु मय वर्तमान विन्दु के शुभ और बलवान हो तो खरीदना शुभ होगा यदि चौथा विन्दु प्रत्येक भाँति से वेली हो तो बेचना शुभ फल दायक होगा यदि ४–५ दोनों शुभ हो तो सम्पत्ति तो सम्पत्ति बनी रहेगी क्रय विक्रय से लाभ भी होगा।

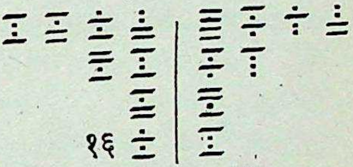

मान लो आपने प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बनाया तुला चालित विन्दु खाना २ में विश्रान्त पाता है—कारण प्रथम घर का बलाबल तो देखना ही है अब रमल दिवा करके पृष्ठ ९४ के अनुसार रमलज्ञ को हुक्म सुनाना चाहिये।

इसी प्रकार रमलज्ञ अपने प्रस्तार से १–३–४–५ विन्दु के बलाबल अनुसार फल कहे।

(३) इस स्थान पर हमको लाभ होगा या हानि होगी ?

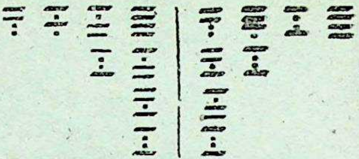

इसी नियम से रमलज्ञ को अपने इष्टदेव का ध्यान करके पाँसा डाल कर प्रस्तार बनाना चाहिये— फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसके १-४ गृह के बलाबल को देख कर हुक्म लगाना चाहिये यदि इन ग्रहों के वर्तमान भविष्य बिन्दु सभी बली हो तो लाभ होगा वर्ना हानि होगी ? रमलज्ञ को अपनी बुद्धी से उपरोक्त बिन्दुओं के बलाबल अनुसार फल कहना चाहिये जैसे आपने प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार आपका बना चूँकि तुला चालित बिन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ८ में मित्रक्षेत्र में विश्रान्त पाता है अस्तु इसीको लग्न माना अब सोपान चक्र को सामने रक्खा जल तत्व की शक्ल को लिया। यह खाना ४ तथा ८ में मित्रक्षेत्री बलवान है इसका वर्तमान बिन्दु शक्ल है प्रस्तार में है नहीं अस्तु इसको देखना है गुप्त रूप में कहाँ यह बिन्दु है।

गुप्तोद्घाटन

अब्जद क्रम की शक्लें —

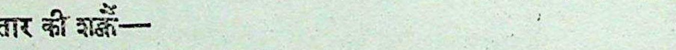

प्रस्तार की शक्लें—

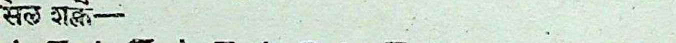

हासिल शक्लें—

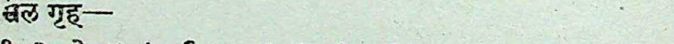

हासिल गृह—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

गुप्त रूप से सातवें घर में शक्ल को पाया स्वक्षेत्री है बलवान है इसी लग्न की भविष्य शक्ल पृथ्वी की पाँचवीं शक्ल मिली जो

खासेकी खाना ४ व ८ में बलवान है अस्तु लग्न बिन्दु वर्तमान बिन्दु भविष्य बि[illegible]नों बली हैं अब इस ≑ का चौथा बिन्दु शक्ल ⁝ है जो प्रस्तार में है वहीं पर गुप्त रूप से खाना ६ व १३ के घरों में शत्रु क्षेत्री होकर बैठी है पर वर्तमान बिन्दु शक्ल (☰) खाना १० व १४ में सम बल पा रही है इस चौथे बिन्दु जल तत्व की भविष्य शक्ल पृथ्वी तत्व की शक्ल ⁝ मिली जो गुप्त रूप से ९ व १३ में उत्कृष्टमित्र क्षेत्री मिली अस्तु चौथा बिन्दु मय घर्तमान तथा भविष्य के साधारण सम बल पा रहा है। परिमाण यह निकला भाग्य तो श्रेष्ठ है पर लाभ साधारण रहेगा।

(४) मैं मकान या जमीन खरीदना चाहता हूँ उसमें लाभ होगा या हानि ?

यदि कोई इस प्रकार का प्रश्न करें तो रमलज्ञको चाहिये अपने इष्टदेव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना लें फिर तुला चालित बिन्दु अपने स्थान से चल कर जहाँ विश्रान्त पावे उसीके बलाबल को देख कर लग्न कायम करलें फिर सोपान चक्र को बना कर सामने रक्खें फिर अपने बनाये हुये प्रस्तार को अवदह क्रम के अनुसार उसी खाने की शक्लों को गुणा करते जायें और गुणनफल के अंक भी लिख दें ताकि ज्ञात रहे अपने अभीष्ट का गुप्त बिन्दु प्रस्तार के किस खाना में गुप्त रूप से बैठा है और अपने इच्छित बिन्दु के अनुसार उस गुप्त का बल कितना है। अब इसी प्रश्न के बिन्दु १-४-१ के बलाबल से रमलज्ञको फल देश अपनी बुद्धी के अनुसार कहना चाहिये मान लो आपने पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बनाया भाग्य का यह प्रस्तार बना— अब तुला चालित बिन्दु जल तत्व का चल कर खाना २ में रुकता है फिर वहाँ से बाईं तरफ़ चल

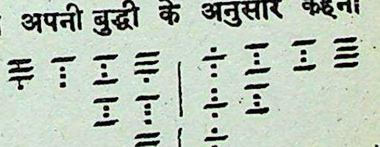

कर खाना ४ में विश्रान्ति पाता है अब इसमें खाना ३ की शक्ल ⁝ स्वक्षेत्री के नाते बलवान है अस्तु इसी ⁝ रूपी को लग्न माना। यह प्रस्तार में खाना २-६-९-१२ में पुनरुक्त (तकरार) कर रहा है। इसी प्रकार आगे रमल प्रदीपका के पृष्ठ ९६ के अनुसार जो चौथे तथा पाँचवें बिन्दुओं के बल लिखे गये उसका परिणाम कह दो—जैसा पृष्ठ ८७ पर पीर फल दिया गया है मकान मध्य श्रेणी का है न हानि ही होगी न लाभ ही होगा।

(५) यदि कोई पूँछे यह मकान मेरे लिये शुभ है या अशुभ?

रमलज्ञ को इस प्रकार के प्रश्न पर इष्टदेव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना कर बिन्दु चाल द्वारा लग्न कायम करके फिर उसके १-४-५ बिन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये—जैसे यह प्रस्तार बना तुला चालित बिन्दु खाना ८ में मित्रक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है इसी ⁝ को लग्न माना यह खाना ४-८ में मित्रक्षेत्री है बली है—शेष रमलदिवाकर के पृष्ठ ८७ के सतर १५ २०वीं सतर का विषय अशुद्ध छप गया है अगले अडीशन में दुरुस्त कर दिया जावेगा। अब चौथा बिन्दु शक्ल ⁝ है जो प्रस्तार में है नहीं तथा गुप्त रूप से खाना ९ में शत्रु क्षेत्री होकर कमजोर बैठी है यह खाना १० व १४ में सम बल पा रहा है अस्तु बिन्दु का बल ४० प्रतिशत रहा इसका पाँचवा बिन्दु वही ⁝ मिल रहा है जो खाना १०-१४ में सम बल पा रहा है। दृष्टि तीसरी शुभ है मगर सप्तम भी दृष्ट है चूँकि लग्न का बिन्दु ⁝ गुरु है गुरु की दृष्टि सप्तम में शुभ होती है अस्तु फल यह निकला मकान साधारण रूप में शुभ होगा।

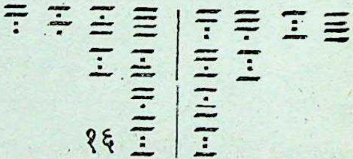

इसी प्रकार रमलज्ञको अपने प्रस्तार के अनुसार १-४-५ के बलाबल से फल कहना चाहिये।

(६) मकान बनवाना चाहता हूँ बनेगा या नहीं।

प्रस्तार उसी क्रम से बनावे जहाँ तुलाचालित विन्दु रुके। उसी को लग्न मानकर उसके १–४–६–८ विन्दु के बलाबल के अनुसार रमलज्ञ को हुक्म सुनाना चाहिये।

जैसे आपने प्रस्तार यह बनाया—अब तुला चालित विन्दु खाना ६ में रुका फिर बाईं तरफ खाना ८ तक गया

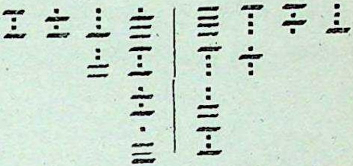

अब खाना ७ की शक्ल ÷ को लग्न माना. कारण विन्दु स्वक्षेत्री है—शेष तरीका इसका जो रमल दिवाकरके ९८ व ९६ पर दिया है उसी अनुसार फल रमलज्ञ को अपने प्रस्तार से कहना चाहिये।

(७) हमारा मकान शुभ है या अशुभ है।

रमलज्ञ को इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान देकर प्रस्तार बनाना चाहिये फिर तुला चालित विन्दु के द्वारा लग्न

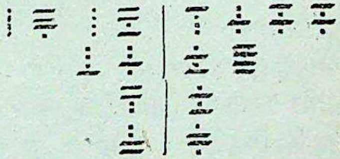

कायम करके—लग्न से सोपान चक्रमें १–४–५ विन्दु के बलाबल से हुक्म लगाना चाहिये जैसे यह प्रस्तार बना—रमल दिवाकर में प्रस्तार बनाने में प्रूफ की गल्ती हो गई है यह प्रस्तार शुद्ध है। तुला चालित विन्दु खाना ६ में गया फिर वहाँ से खाना ८ में गया सभी अप्रमाणित है—लेकिन खाना ८ की शक्ल का विन्दु स्वक्षेत्री के नाते बलवान है इसी को लग्न माना प्रथम विन्दु स्वक्षेत्री तथा खाना ६ में शत्रु.क्षेत्री है—लेखा जोखा बराबर रहा इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ≡ है जो खाना ७ में मित्र क्षेत्री है—३० प्रतिशत बल है। चौथा विन्दु ÷ है यह खाना १ में समबल पा रहा है मगर खाना २ में शत्रु क्षेत्री के नाते से कमजोर रहा है इसका वर्तमान विन्दु तथा यही पाँचवा विन्दु ÷ है

जो खाना ३ व ११ में मित्र क्षेत्री के नाते बल पा रहा है—पर पाँचवे बिन्दु का वर्तमान बिन्दु ÷ [illegible] खाना १४ में शत्रु क्षेत्री है—इसी पंचम बिन्दु का भविष्य बिन्दु अग्नि तत्व का ⋮ है जो खाना १२ में समबल पा रहा है।

अब हिसाब से सभी बिन्दु साधारण शक्ति पा रहे हैं। अस्तु मध्यम श्रेणी में शुभ रहेगा--इसी प्रकार अपनी बुद्धी से रमलज्ञ फल कहे।

(८) अमुक स्थान या मकान किस दिशा को बसा हुआ है उसकी दशा कैसी है।

इस प्रकार के प्रश्न में रमलज्ञ को पाँसा डालकर प्रस्तार बनाना चाहिये फिर प्रस्तार के बिन्दू चालित द्वारा लग्न कायम करना चाहिये। अब लग्न से ३–४–५–९ बिन्दुओं के बलाबल से फल कहना चाहिये।

मान लो आपने इष्टदेव का ध्यान धरकर यह प्रस्तार बनाया। अब तुला चालित बिन्दु आपका सप्तम भाव में होकर पाँचवे घर में रुका अब सप्तम घर ÷ को स्वक्षेत्री के नाते लग्न माना अब सोपान चक्र को सामने रक्खा शक्ल ÷ जलतत्व का तीसरा बिन्दु ⋮ है जो खाना ३ में स्वक्षेत्री के नाते बलवान हो रहा है मगर लग्न बिन्दु खाना १ में शत्रु क्षेत्री है तथा खाना १२ में मित्र क्षेत्री है। २ जगह बलवान एक जगह कमजोर है। इसका चौथा बिन्दु ÷ है जो प्रस्तार में गुप्त या प्रकट कही नहीं है यह बारहवें घरकी मालिक है अस्तु ÷ × ÷ को गुणा किया तो शक्ल ÷ आई गोया जल तत्व का बिन्दु मृत्यु रूप हो गया है, कमजोर हो गया--शेष विषय रमल दिवाकरके पृष्ठ १०१ पर दिया है उसी को देखकर निर्णय करलें—गरजे कि रमलज्ञ को ३–४–५–९ बिन्दुओं के बलाबल से फल कहना चाहिये।

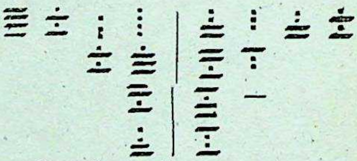

(९) अमुक स्थान या मकान में रहने से भय तो न होगा ?

यदि इस प्रकार का प्रश्न रमलज्ञ से प्रश्न कर्ता करै तो इष्टदेवता का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनायें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें उसी के बलाबल से लग्न कायम करै फिर सोपान चक्रको सामने रखकर-४-५-६-६-१०-१६ बिन्दुओं के बलाबल से रमलज्ञ को फल कहना चाहिये चूँकि खाना १५ का वायु बिन्दु चलकर खाना ७ में पहुँचकर खाना ४ तक दाहिने तरफ जाता है इसमें सातवें घर का बिन्दु स्वक्षेत्री के नाते बलवान पाया अस्तु इसी को लग्न माना अब रमलज्ञ को चाहिये कि रमल दिवाकर के दिये हुये १०२ पृष्ठ पर जो प्रस्तार बनाकर समझाया गया है उसी अनुसार रमलज्ञको अपने बनाये हुये प्रस्तार से उपरोक्त लिखे बिन्दुओं के बलाबल से फल देश कहना चाहिये ।

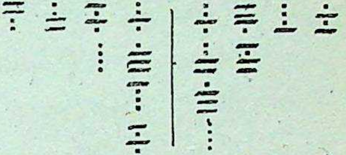

(१०) अमुक व्यक्ति को स्थान पर छोड़ आया हूँ वह वहीं पर है या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनावें—फिर तुला चालित बिन्दु के द्वारा लग्न कायम करके सोपान चक्रके बिन्दु ६-१२ के बलाबल को देखकर फल देश कहना चाहिये ।

जैसे आपने प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार चूँकि तुला चालित बिन्दु पृथ्वी तत्व का खाना सात मित्र क्षेत्र में जाकर रुकता है । इसी को लग्न माना इसका छठा बिन्दु पृथ्वी का ⋮ है यह गुप्त प्रकट प्रस्तार में है नहीं । इसका वर्तमान बिन्दु ⁝ है यह गुप्त प्रकट प्रस्तार में मौजूद नहीं है--इसी प्रकार १२ वाँ बिन्दु का विवरण रमल दिवाकरके १०४ पृष्ठ पर दिया गया है । उसीके अनुसार

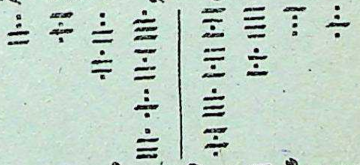

फल कहैं—दूसरे तरीका से ४ व १० को देखना चाहिये यदि चौथा बलवान हो तो वहीं है। यदि दसवाँ बिन्दु बलवान हो तो उस स्थान से चला गया है शेष तरीका पृ० १०४—१०५ से ज्ञात करें।

(११) अमुक व्यक्ति से मिलने जाता हूं वह घर पर है या नहीं ?

इस नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावे फिर देखो मातृ पंक्ति में यानी १ या २ या ३ या ४ घर में ÷ या ≡ या ⁝ हो तो वह मकान पर है यदि खाना ४ व ७ में दाखिल या साबित शक्ल हो तब भी वह मकान पर है यदि तीसरे घर की शक्ल पुनरुक्त खाना ७ या ९ या १३ में हो तो वह मकान पर मौजूद नहीं है कहीं चला गया है यदि शक्ल ⁝ अग्नि या वायु के घर में हो तो भी वह नहीं है यदि ÷ खाना ७ या १३ या ५ में हो तो भी यही हुक्म कहो बिन्दु चाल के अनुसार प्रस्तार बना लो तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे। अपनी बुद्धी के अनुसार लग्न कायम करके सोपान चक्र के द्वारा उसके ७ व ८ बिन्दु के बलाबल से फल कहो यदि बिन्दू अग्नि या वायु के घर में हो तो वह बाहर कहीं चला गया है यदि उपरोक्त बिन्दू जल या पृथ्वी के घर में हो वह घर में मौजूद है—यदि सातवाँ बिन्दू निर्बल हो और आठवाँ बिन्दू बलवान हो तो मुलाकात हो जावेगी मगर इच्छानुसार कार्य न हो पायेगा यदि आठवाँ बिन्दू निर्बल हो और सातवाँ बिन्दू बलवान हो तो खातिरदारी खूब होगी पर लाभ न होगा यदि दोनों बलवान हो तो मुलाकात भी होगी और काम भी बन जावेगा। रमल दिवाकर में १८५ पृष्ट पर इसका फल प्रस्तार विस्तार पूर्वक बनाकर दिया गया है उसी अनुसार रमलज्ञ को भी अपना प्रस्तार बनाकर सातवाँ तथा आठवें बिन्दू के बलाबल से फल कहना चाहिये। दूसरी विधि यदि ÷ खाना ११ में हो तो यह घर पर है यदि ≡ खानी १६ में हो तो न मिलेगा।

(१२) हमको इसी स्थान में लाभ होगा या अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा।

इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान धर प्रस्तार बताये यदि खाना ४ में शुभ शक्ल हो और खाना ७ अशुभ हो तो इसी जगह पर लाभ होगा। यदि खाना ७ भी शुभ हो तो दोनों जगह बराबर रहेगी यदि खाना ४ अशुभ हो और खाना ७ शुभ हो तो दूसरी जगह जाने से लाभ होगा—दूसरी विधि यदि खाना ४ मे ÷ या ⩦ या ⫶ हो तो उसी जगह लाभ होगा यदि ⩧ या ≡ हो तो भी इसी जगह लाभ होगा मगर देर से यदि ÷ या ⋮ या ≐ या ≡ हो तो दूसरी जगह जाने से लाभ होगा। यदि खाना १ की शक्ल खाना ९ में तकरार करे तथा खाना ११ में ÷ हो और खाना ७ में व्याज हो तो दूसरी जगह जाने से लाभ होगा—विन्दू चाल के मतानुसार तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्तर पावे लग्न अपनी बुद्धी से मानकर १-४-१० के बलाबल से हुक्म लगाना चाहिये यदि १ व ४ का विन्दू बलवान हो तो वहीं लाभ होगा यदि १ व १० बलवान हो तो अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा—शेष विशेष रमल दिवाकर के पृष्ट १०७ से फल कहे।

(१३) मुझको पिता से लाभ होगा या नहीं?

इस नियत से रमलज्ञ पाँसा डालकर प्रस्तार बना लें तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावें उसके बलाबल से लग्न कायम करे—

विन्दु चाल द्वारा लग्न कायम करके १-२-५ वें विन्दू के बलाबल से अपनी शक्ति का हाल प्रश्न कर्ता का कहै तथा ४-५-६ विन्दू के बलाबल से पिता का हाल कहै यदि यह विन्दू पिता के निर्बल हो तो पिता से लाभ हो यदि इनके विपरीत हो तो हानि होगी।

यवनाचार्य ख्वाजा नसीरुद्दीन का अनुभव है खाना १-३-१० का प्रश्न कर्ताकी ओर से तथा ४-५-६ का पिता की सम्पत्ति से संबन्ध रखते हैं यदि १-३-१० बलवान हो और ४-५-६ कमजोर हो तो प्रश्न कर्ता को पिता से लाभ होगा. सकुन पंक्ति से यदि खाना ४ शुभ दाखिल हो और उसकी तकरार खाना १ या ३ या ५ या ९ या ११ या १३ में

हो या १४ या १६ में हो तो पिता से लाभ होगा यदि खाना ४ अशुभ हो तो हानि होगी—यदि तकरार ६ या ८ या १२ में हो, तो पिता अप्रसन्न रहेगा ।

(१४) इस स्थान या मकान में गड़ा धन है कि नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इस प्रकार के प्रश्न में बडी सावधानी से एकाग्र चित्त होकर अपने इष्ट देवता का ध्यान देकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल का ध्यान रखते हुये लग्न कायम करे । फिर सोपान चक्र को सामने रक्खे ।

अब लग्न से २-४-६-८ बिन्दु के बलाबल से रमलज्ञ अपनी बुद्धी अनुसार फल कहैं यदि उपरोक्त बिन्दु प्रस्तार में जल या पृथ्वी के घर में वर्तमान बिन्दु के सहित हो तो वहाँ धन जरूर है यदि अग्नि वायु के घरों में बिन्दु हो तो धन नही है । यदि उपरोक्त चारों बिन्दुओं में से केवल २ व ४ बिन्दु जल या पृथ्वीके घरमें हो और ४ या ६ व ८ खारीज घरों में हो तो धन नहीं है कहना चाहिये यदि १ शुभ तथा ३ अशुभ हो तो धन नहीं है कहना चाहिये । इस प्रथम लिख आये हैं प्रस्तार की १-५-९-१३ अग्नि तत्व के घर हैं तथा २-६-१०-१४ वायु तत्व के घर हैं यह खारिज से सम्बन्ध रखते हैं तथा ३-७-११-१५ जल तत्व के घर है और ४-८-१२-१६ पृथ्वी तत्व के घर है यह दाखिल घर कहलाते हैं । अब रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार २-४-६-८ बिन्दू को देखना चाहिये कितने बिन्दु खारिज घरों में हैं कितने दाखिल घरों में हैं उसी प्रकार अपनी बुद्धि के फल कहैं । इस प्रश्न का विस्तार पूर्वक हाल तो रमल दिवाकर के पृष्ठ ११० से ११५ तक लिखा गया है । उसी की सहायता से पूरा फल कहैं ।

पाँचवे घरों के प्रश्नोत्तर

(१) मेरे भाग्य में सन्तान योग है कि नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये कि इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा डालकर

प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित बिन्दु के शिक्षान्तिक बिन्दु के बलवान को ध्यान धरकर लग्न कायम करलें—फिर सोपान चक्र द्वारा लग्न से पाँचवे बिन्दु को देखें। यदि पञ्चम बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तो सन्तान योग है यदि निर्बल हो तो नहीं का जवाब दो। इस का तरीका प्रस्तार बनाकर रमल दिवाकर के पृष्ठ ११६ पर लिखा गया है। उसी को समझ कर अपने प्रस्तार फल कहैं। दूसरी विधि शकुन पंक्ति द्वारा यदि प्रस्तार में १ व ५ में शक्ल ∸ या ≡ या ÷ या ≐ या ÷ या ⫨ या ÷ या ⁝ या ≐ हो तो सन्तान सुख होगा यदि अन्य शक्लें ÷ या ÷ या ≑ या ÷ या ≛ या ⫰ या ⁝ हो तो सन्तान सुख नही पञ्चम घर में जो शक्ल हो उसी तरह की शान्ती करायें।

(२) मेरे पुत्र होगा या नहीं ?

रमलज्ञ प्रस्तार बनाये तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम करै फिर सोपान चक्र के द्वारा १-५-९ बिन्दु के बलाबल से फल कहैं रमलदिवाकर के पृष्ठ ११७ पर प्रस्तार देकर कर नियम समझाया गया है। रमलज्ञ उसी के अनुसार अपना प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करके १-५-९ के बलाबल से फल कहैं यदि पञ्चम बिन्दु की तकरार यानी पुनरुक्त केन्द्र के घरों में यानी १-४-७-१० घरों में किसी एक में हो और शुभ शक्ल हो तो पुत्र पैदा होगा यदि बिन्दु खाना २ या ६ पर १० या १४ में आवे और शुभ शक्ल हो तो कुछ अवस्था बढ़कर पुत्र होगा अन्य घरों से निराशा हो।

(३) अमुक स्त्री के पुत्र होगा या कन्या ?

रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दु के बलाबलसे लग्न कायम करके सोपान चक्र को सामने रखकर लग्न से १-२-११ बिन्दु के बलाबल से फल रमलज्ञ को कहना चाहिये यदि उपरोक्त बिन्दु शुभ बलवान घरों में हो तो पुत्र योग होगा इसके विपरीत निराशाका उत्तर देना चाहिये।

(४) मेरे सन्तान (पुत्र या कन्या) पैदा होगी या नहीं ?

रमलज्ञको चाहिये इसी निसत से प्रस्तार बनावे तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम करले—यदि पाँचवा बिन्दु पुनरुक्त (तकरार) खाना ११ या १४ या १६ में हो तो सन्तान योग होगा अन्यथा आशा नहीं अन्तो कशवै इसका पूर्ण विवर्ण रमल दिवाकर के पृष्ठ ११९ पर दिया गया है उसी से समझें इस प्रकार रमलज्ञ अपना प्रस्तार बनाकर फल अपनी बुद्धि अनुसार कहैं।

(५) मेरे कितने पुत्र होंगे ?

रमलज्ञ प्रस्तार बना कर तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम करे लग्न से पाँचवा बिन्दु प्रस्तार में देखो वह किस घर में बैठा है उसी शक्ल की जो संख्या हो उतने पुत्र का जवाब दें। शक्लों की संख्या का क्रम रमल दिवाकर के १२० पृष्ठ पर देखें। फिर खाना ५ की शक्ल प्रस्तार में जितनी जगह तकरार करती हो यदि वह शक्ल नर की है तो पुत्र यदि स्त्री की शक्ल है तो कन्या कहो।

(६) मेरे पुत्र अधिक होंगे या कन्या ?

इसी नियत से रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर तुला चालित विन्दु को देखै कहाँ विश्रान्त पाता है जहाँ विश्रान्ति पावे देखैं वह शक्ल नर की पड़ी है या स्त्री की पड़ी है यदि नर की शक्ल पड़ी हो तो पुत्र अधिक होंगे यदि स्त्री की शक्ल पड़ी हो तो कन्या अधिक होगी नर की शक्ल उसे कहते हैं जिसमें ३ विन्दु या १ पाई हो अथवा १ विन्दु या ३ पाई हो जैसे 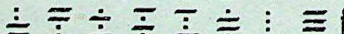 यह नक्की की शक्लें नर की है शेष 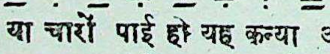 जिसमें २ विन्दु २ पाई या चारों विन्दु या चारों पाई हो यह कन्या अधिक होने के चिह्न है पृष्ठ १२१ पर प्रस्तार बनाकर दिखाया गया है—इसी आधार से रमलज्ञ को प्रस्तार बनाकर अपना परिणाम प्रश्न कर्ता को सुनाना चाहिये।

(७) सन्तान न होने में दोष स्त्री में है या पुरुष में ?

इसी नियत से रमलज्ञ प्रस्तार बनावे तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी को लग्न मानकर प्रथम बिन्दु के बलाबल पर विचार करें यदि प्रथम बिन्दु अर्थात् लग्न की शक्ल निर्बल है तो पुरुष में दोष है और ८ वाँ बिन्दु स्त्री का है यदि यह आठवाँ बिन्दु निर्बल हो तो स्त्री में दोष है । स्त्री के प्रति इलाज कराना चाहिये यदि ७ बिन्दु कमजोर है तो पुरुष में ऐब है यदि दोनों खाली १-७ दोनों बिन्दू निर्बल हो तो स्त्री पुरुष दोनों में ऐब है इलाज कर अनुष्ठान करावें इसका पूरा विवरण रमल दिवाकर पृष्ठ १२२ पर दिया गया है इसी आधार से रमलज्ञको अपना प्रस्तार बनाकर फल देख कहना चाहिये ।

किसी आचार्य का मत है बिन्दू १ व ८ पुरुष के हैं तथा ७ व १४ स्त्री के बिन्दू जिधर के बिन्दू निर्बल हो उसी में ऐब बतलायें यदि सभी बिन्दू निर्बल हो तो दोनों का दोष बतावें दोनों का इलाज कराना जरूरी है फिर सन्तान सुख प्राप्त के लिये दुर्गा सप्तशती की १०० पाठ अध्याय १२ के १३ वें श्लोक के मंत्र का सम्पुट लगा कर शतचंडी यज्ञ करावें दीर्घ जीवी पुत्र होगा ।

(८) जो बच्चा पैदा हुआ है किस प्रकृति का है ।

इसी नियत से रमलज्ञ अपना प्रस्तार बना कर तुला चालित बिन्दू द्वारा अपनी बुद्धी अनुसार लग्न कायम करें लग्न से पंचम बिन्दू देखें यदि वह बिन्दू अग्नि या वायु में हो तो गर्म प्रकृत तथा वायु प्रकृत का होगा यदि जल में हो तो प्रायः शीत तथा श्लेष्मा युक्त प्रकृति होगी । यदि पृथ्वी ग्रह में हो तो सूखी प्रकृत का बालक होगा यही नियम कन्या की प्रकृत का रमलज्ञ को बताना चाहिये इसका रमल दिवाकर में प्रस्तार बनाकर तरीका दिखाया गया है जो पृष्ठ १२२ पर दर्ज है उसी के आधार से रमलज्ञ अपना प्रस्तार बनाकर उपरोक्त रीत्यानुसार फल कहना चाहिये ।

(९) बच्चे को माता का दूध हितकर होगा या अन्य का ?

इसी नियत से रमलज्ञ इष्ट देवता का ध्यान धरकर प्रस्तार बनाये —

फिर तुला चालित विन्दु द्वारा लग्न कायम करै लग्न से प्रथम विन्दु अर्थात् लग्न का विन्दु यदि बलवान हो तो माता का दूध हितकर होगा यदि तीसरा विन्दुमय वर्तमान भविष्य के बली हो अन्य का दूध हितकर होगा। रमल दिवाकर में प्रस्तार बनाकर दिखाया गया है अस्तु पृष्ठ १२३ से निर्णय रमलज्ञ कर लें।

(१०) जो बच्चा पैदा हुआ है वह भाग्य शाली है या भाग्य हीन है।

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से अपना प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें उसी के बलाबल को देख कर लग्न कायम करें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर विन्दु १-५ तथा ८ व ११ के बलाबल से फला देश रमलज्ञ को कहना चाहिये। इसको उदाहरण देकर रमल दिवाकर में पृष्ठ १२४ से १२५ की ६ सतरों में समझाया गया है रमलज्ञ को चाहिये इसी उदाहरण द्वारा अपना प्रस्तार बनाकर फल कहैं।

(११) पुत्र से जो आशा रखता हूँ वह पूरी होगी या नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ को पाँसा छोड़कर अपना प्रस्तार बनाना चाहिये। फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें—फिर १—५—११ विन्दुओं के बलाबल को देखना चाहिये उसके वर्तमान विन्दु के बलाबल तथा भविष्य विन्दुओं के बलाबल से रमलज्ञ को अपना निर्णय देना चाहिये। इसी प्रकार का उदाहरण देकर रमलदिवाकर में जो १२५ पृष्ठ पर समझाया गया है उसकी प्रणाली ठीक है। उसी आधार से रमलज्ञ को अपने प्रस्तार से फल कहना चाहिये—

(१२) मेरा पुत्र जो कहीं चला गया है वह मिलेगा या नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर तुला चालित विन्दु के द्वारा लग्न कायम कर लें—फिर १—व ५ विन्दु के बलाबल को देखैं तथा वर्तमान विन्दु के बलाबल को भी देखैं तथा भविष्य विन्दु के बलाबल

को देखकर रमलज्ञ अपना निर्णय देखें। उदाहरण १२६-१२७ से समझो।

(१३) अमुक व्यक्ति के सन्तान है या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इस प्रकारके प्रश्न निकालने में अपने इष्ट देवता का ध्यान कर के पाँसा छोड कर प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें फिर सोपान चक्र को सामने रख कर लग्न से १--५ वे घर को देखें यदि दोनों, बिन्दू आगम या स्थिर अर्थात दाखिल या साबित हो जैसे 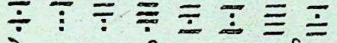 अस्तु यदि दाखिल या साबित तत्व का हो तथा उस की तकरार अर्थात वहा शक्ल प्रस्तार में किसी दूसरी जगह हो इसी को तकरार अथवा पुनरुक्त भी कहते हैं। अस्तु तकरार आगम या स्थिर घर में हो तो सन्तान वाला है यदि पुनरुक्त शक्ल ताक (नक्की) घर में हो तो नर यदि जुफ्त या जुट घर में हो तो कन्या समझना चाहिये। नक्की तथा जुफ्त का विवर्ण प्रश्न नं. ६ में दिया जा चुका है। इसका उदाहरण रमल दिवाकर के पृष्ठ १२७ व १२८ पर दिया गया है।

(१४) मेरा पुत्र जा जन्मा है वह दीर्घायु है कि नहीं ?

प्रस्तार बनाकर उपरोक्त रीत्यानुसार रमलज्ञ लग्न कायम कर लग्न या १ बिन्दु तथा आठ बिन्दु के बलाबल से रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार १-८ बिन्दु के बलाबल तथा वर्तमान बिन्दु का बलाबल तथा दानों के भविष्य बिन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये। इसका उदाहरण रमल दिवाकर के पृष्ठ १२८ पर दिया गया है। इसी प्रकार रमलज्ञ अपनी बुद्धि के अनुसार १-८ के बलाबल को देखकर अपने प्रस्तार से निर्णय करें।

(१५) अमुक स्त्री गर्भवती है की नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये पाँसा छोडकर प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित बिन्द से लग्न कायम करे—फिर बिन्द ५-६-७-११ के बला-

बलको देखकर फल कहे कोई आचार्य बिन्दु १२के बलाबल को भी देखते हैं यदि उपरोक्त ९ बिन्दुओं में ३ बिन्दु बलवान हो तो गर्भ है कहना चाहिये यदि बिन्दु निर्बल हो तो गर्भ नही हैं। रमल दिवाकर में इस का उदाहरण सहित लेख समझाया गया है। पृष्ठ १२९ व १३० को देखें। इसी प्रकार रमलज्ञ अपने प्रस्तार से उपरोक्त पाँचो बिन्दु के बलाबल से अपना निर्णय देवें

(१६) अमुक स्त्री के गर्भ योग होगा कि नहीं ?

रमलज्ञ को इस प्रकार में बड़ी सावधानी से प्रस्तार बनावे।

इस प्रस्तार में चार बातों को देखना जरूरी होता है।

(१) प्रथम देखो गर्भ है कि नहीं (२) यदि गर्भ नहीं है तो किस कारण से गर्भ स्थिर नहीं होता (३) यदि गर्भ है तो कितने मास का है (४) यदि गर्भ नहीं है तो भविष्य में गर्भ होगा या नहीं — इसी नियम से पाँसा फेकें।

(१) गर्भ है कि नहीं ?

रमल दिवाकरके पृष्ट १३० पर लिखे हुये नियम के अनुसार मालूम करें।

(२) कारण गर्भ न रुकने का,

रमल दिवाकर पृष्ट १३० व १३१ के उदारण को देखकर गर्भ होने या न होने का कहो। रमलज्ञ को अपने ही बुद्धि के अनुसार फल कहना चाहिये।

(३) गर्भ न रुकने कारण क्या है ?

रमलज्ञ प्रस्तार बनावे यदि खाना ६ में ÷ या ⋮ में से कोई शक्ल हो और उसकी तकरार खाना २ में हो अथवा खाना २ व ६ दोनों जगह पर ÷ या ⋮ हो तो प्रेत बाधा के कारण गर्भ स्थिर नहीं हो पाता है शेष विशेष रमलदिवाकर के सफा १३१ पर समझाया गया है।

(४) गर्भ कितने दिनों का है ?

इस प्रकार के प्रश्नों का तरीका सफा १३१ पर विस्तारपूर्वक दिया गया है उसी से मालूम करें। बिन्दू चाल द्वारा उपरोक्त प्रश्नों के हल करने की विधि – तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावें उसी को अपनी बुद्धि के अनुसार बलाबल का विचार करके लग्न कायम करें फिर लग्न से छठे बिन्दू को देखें। यदि वह बिन्दू १ या ५ या ९ या १३ घर में हो तो रक्तपात के दोष से गर्भ रुकता नहीं है यदि वह बिन्दू २ या ६ या १० या १४ वायु के घरों में हो तो मांस का पिंड बन गया है गर्भ नहीं है यदि ३ या ७ या ११ या १५ जल के घरों में बिन्दू हो तो गर्भाशय में चरबी पड़ गई है यदि ४ या ८ या १२ या १६ पृथ्वी के घरों में २ जगह बिन्दू हो तो गर्भाशय खराब हो गया है।

फिर लग्न से पाँचवा छठा सातवाँ ग्यारहवाँ तथा बारहवाँ बिन्दू के बलाबल के अनुसार तथा उनके वर्तमान बिन्दूओं के बलाबल से भविष्य कहें यदि सभी बलवान हो तो १ वर्ष के भीतर गर्भ धारण होगा उदाहरण सहित समझाया गया है सफा १३१ को समझ कर उसी प्रकार अपनी बुद्धि के अनुसार फल कहो।

(१७) गर्भवती का प्रसव सरलतापूर्वक होगा या कठिनाई से बच्चा होगा ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से अपना प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर लग्न बिन्दु से १ व ६ बिन्दू को देखें यदि दोनों बिन्दू खारिज घरों में अर्थात् अग्नि या वायु के घरों में हों तो प्रसव सरलतापूर्वक हो जावेगा यदि शक्ल खारिज या मुनकलिब हों तो प्रसव सरलता पूर्वक होगा यदि वह शक्ल दाखिल अथवा साबित हो, तो प्रसव कठिनाई से होगा दाखिल शक्ल वह है जिनके ऊपर पाई नीचे शून्य हो जैसे $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ \cdot\\ \cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\ \cdot\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ $\begin{smallmatrix}-\\ -\\ -\\ \cdot\end{smallmatrix}$ साबित शक्ल वह कहलाती है जिनके ऊपर नीचे

दोनों पाई हो जैसे ≡ ≡ ≣ ⫶ खारिज शक्ल जिनके ऊपर शून्य नीचे पाई हो जैसे ÷ ⁝ ÷ ≡ मुनकलिब शक्ल वह है जिनके ऊपर नीचे दोनों में विन्दू हो जैसे ÷ ÷ ⁝ ÷ इसका उदाहरण रमल दिवाकर के पृष्ठ १३३ व १३४ के आदि ६ सतरों में दिया गया है रमलज्ञ इसी प्रकार अपना प्रस्तार बनाकर अपनी बुद्धी के अनुसार १-६ विन्दू के खारिज मुनकलिब द्वारा सरलतापूर्वक तथा दाखिल साबित से कठिनतापूर्वक जवाब दें।

(१८) बच्चा दिन में होगा या रात में तथा किस लग्न में होगा ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित विन्दू जिस घर में विश्रान्त पावे यदि वह अग्नि या वायु का घर है तो प्रसव दिन में होगा यदि जल या पृथ्वी का घर है तो रात को होगा—फिर देखो लग्न की शक्ल कौन है उसी दिन होगा अब रात या दिन का अनुमान उपरोक्त विन्दू से कहो अग्नि या वायु में हो तो लग्न की शक्ल जिस दिन से सम्बन्धित हो उसी दिन या रात को होगा अब लग्न से पंचम विन्दू की शक्ल को देखो जो शक्ल हो उसी साइत में प्रसव होगा फिर लग्न से नवाँ विन्दू देखो कौन शक्ल है जो शक्ल हो उसके स्वामी का जो रूप हो वही लग्न होगी इसका उदाहरण विस्तारपूर्वक पृष्ठ १३४-१३५ से देखो।

(१९) इस गर्भ में पुत्र होगा या कन्या होगी।

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से अपना प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावें इसके पंचम विन्दू को देखें यदि वह शक्ल नर की हो तो पुत्र यदि स्त्री की शक्ल हो तो कन्या कहो—उदाहरण में पंचमं विन्दू ≑ पृष्ठ १३५ पर दिखाया है यह गुरू की शक्ल है इसी कारण पुत्र कहा मगर आचार्य सुखाष ने नर की शक्लें ≡ ÷ ÷ ≡ ≡ ⫶ आता है और स्त्री की शक्लें ÷ ≡ ≡ ⁝ ≡ माना है शेष शक्लें ≣ ÷ ÷ ≡ ⁝ नपुंसक है। किसी आचार्य ने

≑ ⩧ को स्त्री लिंग माना है अब रमलज्ञ को चाहिये अनुभव के बाद भविष्य पर हुक्म लगाये। परन्तु अपने शाम का अनुभव यही है अग्नि वायु की शक्ल नर की हैं जल पृथ्वी की शक्लें स्त्री की हैं।

(२०) अमुक प्राणी ने क्या नशा खाया है ?

रमलज्ञ को चाहिये कि इसी नियत से प्रस्तार बनावे फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसके पञ्चम बिन्दू को देखै कौन शक्ल है यदि यह बिन्दू पृथ्वी तत्व का हो तो अफीम यदि वायु का हो तो भंग गाँजा चरस आदि में से कुछ खाया है यदि अग्नि का बिन्दू हो तो शराब यदि जल का बिन्दू हो तो अन्य हल्की नशीली वस्तु खाई है। चूँकि तुला चालित बिन्दू हुक्म का अग्नि में कभी जा ही नहीं सकता क्योंकि वह बिन्दू मूक प्रश्न निकालने का है अस्तु शनि की शक्ल को यानि पानी ⩧ या ≑ की अफीम मंगल तथा सूर्य की शक्ल शराब आदि से कहो इसका उदाहरण रमल दिवाकर का पृष्ठ १२६ पर देखो।

(२१) इस जीवन में सुख शान्ती मिलेगी या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्न में रमलज्ञ को चाहिये एकान्त चित्त होकर प्रस्तार बना लें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उससे १-४-५ बिन्दू के बलाबल तथा वर्तमान बिन्दू के बलाबल को ध्यान रखते हुए फल देश कहैं इसका उदाहरण रमल दिवाकर के पृष्ठ १२७ पर दिया गया है उसी के अनुसार रमलज्ञ को अपना प्रस्तार बनाकर लग्न से १-४-५ बिन्दू के बलाबल से फल कहें शकुन क्रम के द्वारा प्रश्नोत्तर प्रस्तार बना लो फिर खाना १ व ५ की शक्ल को गुणा करो फिर १ × १५ की शक्ल को परस्पर गुणा करो फिर गुणन फल से जो दो शक्ल बनी है उनको आपस में फिर गुणा करो यदि वह शक्ल शुभ दाखिल या शुभ मुनकलिब हो तो सुख शान्ती से जीवन गुजरेगा शुभ साबित शक्ल यानी ⩨ या ⫶ से भी वही फल कहो अन्य शक्लों से कष्ट मिले।

(२२) हमारा प्रेमी याद करेगा या नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्त पावे उसी को लग्न मानकर लग्न से पाचवें तथा सातवें बिन्दू के बलाबल को देखो तथा दोनों के वर्तमान बिन्दू बलवान हों तथा लग्न से शुभ दृष्टि मिल रही हो तो प्रेमी मिलेगा याद करें तो विपरीत से नहीं इसका उदाहरण पृष्ठ १३८ से देखो उसी अनुसार अपने प्रस्तार से प्रश्न कर्ता को उत्तर देवें।

(२३) अपने प्रेमी के पास दूत के द्वारा संदेशा भेजता हूँ लाभदायक होगा या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिए इसी नीयत से एकाग्र चित्त हो इष्टदेव का ध्यान धरकर प्रस्तार बनाये फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पाये उसीके बलाबल से लग्न कायम करे फिर सोपान चक्र द्वारा लग्न से चौथा विन्दू ले उसके बलाबल को देखकर तथा वर्तमान विन्दू के बलाबल से फल कहैं। यदि चौथा विन्दू मय वर्तमान विन्दू के बलाबल से फल कहैं। यदि चौथा विन्दू बलवान हो तो लाभदायक होगा। कमजोर विन्दू हो तो हानि होगी।

आचार्य सुर्खाब ने लग्न से तीसरे व पाँचवें विन्दू के बलाबल से फल कहा है।

इस प्रश्न का हल उदाहरण सहित सफा १३६ पर समझा कर लिखा गया है।

(२४) अपने प्रेमी के पास आदमी भेज रहा हूँ, मुलाकात होगी या नहीं ?

इस नीयत से प्रस्तार बनाकर बिन्दू चाल द्वारा अपनी बुद्धि के अनुसार लग्न कायम कर लें फिर लग्न से आठवें विन्दू को देखें। यदि वह बिन्दू दाखिल या साबित घर में हो तो मिलेगा। यदि वह बिन्दू खारिज या मुतकलिब घर में हो तो नहीं मिलेगा। इस प्रश्न का उत्तर

उदाहरण सहित १४० पेज पर दिया गया है, उसीके अनुसार रमलज्ञ अपने प्रस्तार से आठवें विन्दू को देखै।

(२५) यदि कोई पूछे अपने प्रेमीको बुला रहा हूँ आवेगा या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्नोत्तर के लिये प्रस्तार बना लें और विन्दू चाल से अपनी बुद्धि के अनुसार लग्न कायम करें। लग्न से चौथे तथा आठवें विन्दू के बलाबल से फल कहैं। यदि दोनों विन्दू मय अपने वर्तमान विन्दू के सहित बलवान् हों तो आयेगा यदि निर्बल हो तो न आवेगा। इस प्रश्न का उत्तर उदाहरण देकर सफा १४१ पर समझाया गया है। इसी तरह रमलज्ञ अपने प्रस्तार के लग्न बिन्दु से ४ व ८ के बलाबल को देखकर फल कहैं।

(२६) हमारा प्रेमी हमको चाहता है या नहीं ?

यदि कोई इस प्रकार का प्रश्न करै तो रमलज्ञ को चाहिये कि इसी नियत से अपने इष्ट देवता का ध्यान कर प्रस्तार बनाये फिर विन्दू चाल द्वारा अपनी बुद्धि के अनुसार बलाबल पर ध्यान कर लग्न कायम करै। फिर लग्न से पाँचवें विन्दू पर मय उसके वर्तमान विन्दू के बलाबल को देखैं। यदि दोनों विन्दू बलवान हों और गुप्त रूप से भी विन्दू खाना १ या ४ या ७ या १० में हों तो प्रेमी चाहता है। यदि विन्दू निर्बल हो और वर्तमान बलवान है तो कभी चाहता है, कभी नहीं चाहता है। इसका उदाहरण पेज १४२ पर दिया गया है।

(२७) प्रेमी द्वारा मेरी आशा पूरी होगी या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बनाकर विन्दू चाल द्वारा लग्न कायम कर ले, फिर लग्न से १, ५, ९ तथा ११ घरों के विन्दू को देखै। यदि सभी विन्दू मय वर्तमान विन्दू के बली हों तो आशा पूर्ण हो। यदि आधे विन्दू बली हों और आधे निर्बल हों तो बड़े परिश्रम से आशा पूर्ण होगी। जिस ओर के विन्दू अधिक पड़ें उसी अनुसार अपनी बुद्धि से उत्तर कहे। इस प्रश्न का उत्तर उदाहरण सहित पेज १४३ पर दिखाया गया है।

(२८) मेरा प्रेमी किसी अन्य से सम्पर्क तो नहीं रखता है ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर विन्दू चाल द्वारा लग्न कायम कर ले फिर लग्न से सोपान चक्र को सामने रखकर उसके १३वें विन्दू को देखें यदि तेरहवाँ विन्दू स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो तो सम्पर्क नहीं रखता है। यदि १३वाँ विन्दू शत्रुक्षेत्री हो तथा उसका वर्तमान विन्दू भी निर्बल हो तो सम्पर्क रखता है। यदि उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री तेरहवाँ विन्दू हो तो सम्पर्क नहीं रखता है, पर मन विचलित हो रहा है। इसका उदाहरण पृष्ठ १४४ पर देखो।

(२९) मेरा प्रेमी पुरुष है या स्त्री है ?

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा डालकर प्रस्तार बना ले, फिर विन्दू चाल से विन्दू जहाँ जाकर विश्रान्ति पावे उसीके बलाबल का विचार कर लग्न कायम कर लो। फिर लग्न से पाँचवाँ विन्दू सोपान चक्र द्वारा लो। यदि वह विन्दू की शक्ल स्त्रीलिंग है तो स्त्री है। यदि उस विन्दू की शक्ल पुरुष की है तो प्रेमी पुरुष समझो। नर की शक्ल—⩧ ⩸ ≐ ∹ ÷ ⫶ है।

(३०) मैं एक निमन्त्रण में जा रहा हूँ, कैसा रहेगा ?

यदि कोई सज्जन इस प्रकार का प्रश्न करें तो रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बना लें और विन्दू चाल द्वारा विन्दू जहाँ पर विश्रान्ति पावे उस का अपनी बुद्धि के अनुसार बलाबल पर विचार कर लग्न कायम करें फिर लग्न से दूसरे तथा चौथे तथा छठे विन्दू पर विचार करें। दूसरा विन्दू तो स्वादिष्ट भोजन का संकेत करता है। यदि दूसरा विन्दू बलवान् हो तो स्वादिष्ट भोजन मिलेगा वर्ना साधारण। यदि चौथा विन्दू बलवान् हो तो स्वागत-सत्कार खूब होगा। यदि छठा विन्दू बलवान हो तो जाने से प्रसन्नता होगी। यदि सभी बली हों तो स्वादिष्ट भोजन भी मिलेगा, सत्कार भी होगा, प्रसन्नता भी मिलेगी। उदाहरण १४५ व १४६ पर देखो।

(३१) आज मेरे यहाँ कोई मेहमान (अतिथि) आवेगा या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावें फिर बिन्दू चाल द्वारा लग्न निकाले। फिर सोपान चक्र को सामने रख कर उसके चौथे तथा नवम बिन्दू पर दृष्टि डालें यदि दोनों बिन्दू जल या पृथ्वी के घर में होंगे तो अतिथि आवेगा। यदि अग्नि या वायु के घर में दोनों बिन्दू पड़ें तो न आवेगा। यदि एक बिन्दू जल या पृथ्वी में हो और दूसरा अग्नि या वायु के घर हो तो अतिथि आवेगा पर सत्कार स्वीकार न करके वापस जायेगा इसका उदाहरण पेज १४६ व १४७ पर दिया गया है।

(३२) मैं शिकार खेलने जाता हूँ मिलेगा या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये बड़ी सावधानी से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना ले शकुन पंक्ति द्वारा जो कायदा बताया गया है रमलज्ञ को चाहिये कि पेज १४७ को ध्यानपूर्वक पढ़ कर उसी अनुसार से अपनी बुद्धि के अनुसार प्रश्नकर्ता को जवाब देवे। फिर प्रस्तार जो बनाया गया है बिन्दू चाल से लग्न कायम कर लें फिर सोपान चक्र को सामने रख कर प्रथम बिन्दू यानी लग्न तथा पाँचवे बिन्दू को देखें यदि १ बिन्दू दाखिल या साबित घर में हो और पाँचवा बिन्दू खारिज या मुनकलिब घर में हो तो शिकार मिलेगा। विपरीति से न मिलेगा। इस प्रश्न को उदाहरण सहित भी समझाया गया है सो पृष्ठ १४८ पर देखें।

(३३) मुझे इनाम मिलेगा या नहीं ?

शकुन पंक्ति द्वारा इस प्रश्न का हल पृष्ठ १४९ पर दिया गया है। उसी के अनुसार अपने प्रस्तार से फल देश कहे बिन्दू चाल द्वारा रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर बिन्दू चाल से लग्न कायम करें। फिर सोपान चक्र के द्वारा पाँचवे बिन्दू को लेवें यदि पंचम बिन्दू जल या पृथ्वी के घर में हो पुनरुक्त हो यानी पंचम बिन्दू की तकरार ३ या ७ या ११ या ४ या ८ या १२ या १६ घरों में से किसी में हो तो इनाम

मिलेगा यदि पंचम विन्दू की तकरार १ या ५ या १४ में हो तो भी मिलेगा उदाहरण इसका १४६ पर देखें।

(३४) मैंने जो भेंट भेजी है वह यथा स्थान पहुँचेगी या नहीं ?

प्रस्तार बनालें यदि खाना २ की शक्ल खारिज हो तथा खाना ७ की शक्ल शुभ दाखिल हो तो भेट पहुँचेगी यदि विपरीत हो तो निराशा हो। विन्दू चाल द्वारा प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से दूसरे विन्दू को देखें यदि यह दूसरा विन्दू खारिज अथवा मुनकलिब घर में हो तथा सातवाँ विन्दू दाखिल या साबित ग्रह में हो तो भेट जहाँ भेजा है सुरक्षित पहुँच जायेगी यदि इसके विपरीति हो तो धोखा है इसका उदाहरण सहित हल पेज १५०-१५१ से देखें उसी अनुसार अपने प्रस्तार से फल कहें।

(३५) मेरे मित्र का पत्र या समाचार आवेगा या नहीं ?

शकुन पंक्ति द्वारा इस प्रश्न का हल पेज १५१ पर लिखा गया है। अब विन्दू चाल द्वारा रमलज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनावें और बिन्दू चाल से विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावें उसी के बलाबल से लग्न कायम करें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर ७-६-१५ विन्दू की शक्ल को देखें यदि विन्दू स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्रं हो तो पत्र या समाचार आवेगा विपरीति से नहीं। इसका उदाहरग पेज १५१ पर दिया गया है। आचार्य सुखवि ने अपना अनुभव लिखा है यदि पाँचवा विन्दू दाखिल या साबित गृह मे हो तथा इसकी तकरार भी दाखिल या साबित घर में हो तो पत्र व समाचार आयेगा विपरीति से नहीं।

(३६) यह खबर जो आई है सत्य है या झूठ ?

इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर शकुन क्रम से बताने का तरीका पेज १५२ पर तीन विधि से जो दिया गया है उसीसे ज्ञात करें। विन्दू चाल द्वारा रमलज्ञ प्रस्तार बना के लग्न कायम कर लें फिर लग्न से पाँचवे विन्दू को देखें यदि पंचम विन्दू बलवान हो और शुभ घर में मोजूद हो तो खबर सत्य जाने यदि पंचम विन्दू निर्बल हो और अशुभ घर

यानी ६ या ८ या १२ में हो तो झूठी खबर समझें इसका उदाहरण १५२-१५३ पर लिखा गया है उसीसे मालूम करें।

(३७) अमुक व्यक्ति के पास संदेशा भेज रहा हूँ परिणाम क्या होगा ?

इसी नियत से रमलक्ष प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसीके मुकाबल से लग्न कायम कर ले। अब प्रथम विन्दू संदेशा भेजने वाले का है तथा दशम विन्दू संदेशा पाने वाले का है। यदि दोनों विन्दू के ग्रह परस्पर हों या एक ही स्थान में हो तो शुभ फल कहें। यदि विपरीत हों तो उल्टा फल कहें। यदि पञ्चम विन्दू प्रस्तार के केंद्र घरों यानी १ या ४ या ७ या १० में हो तो संदेशा ले जाने वाला शीघ्र लौट आयेगा। यदि वायु के घरों यानी २, ६, १०, १४ में हो तो देर से आवे। उदाहरण पृष्ठ १५३–१५४ देखें।

(३८) आदमी जो संदेशा लाया है वह सत्य है या झूठ है।

प्रस्तार बनावे फिर तुला चालित जहाँ विश्रान्ति पावे लग्न कायम करें। यदि लग्न का विन्दू १० या ११ खाना में हो तो खबर सत्य है अन्यथा झूठी खबर है। शकुन क्रम द्वारा यदि खाना ५ की शक्ल शुभ हो और शुभ घर में तकरार करे तो सन्देसा आया हुआ सत्य है। यदि अशुभ और अशुभ घर जैसे ३-६-८-१२ में तकरार करे तो असत्य खबर है। शुभ घर प्रस्तारमें १-४-५-१०-१३ के माने जाते हैं। यदि२-७-९-१४ १५-१६ घर में हो तो कुछ सन्देसा सही है कुछ झूठ है। दूसरी सरल विधि खाना १ तथा ५ की शक्ल को आपस मे गुणा करें इन दोनों की गुणा की से एक शक्ल बनावें यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल शक्ल हो तो खबर सच्ची है वर्ना झूठी ?

(३९) परीक्षा में पास हूँगा या नहीं ?

इसी ख्याल से प्रस्तार बनाये और पेज १५४ के लिखे हुये शकुन क्रम के अनुसार जो नियम दिया है उसी अनुसार जवाब देवें फिर

तुला चालित बिन्दू से लग्न बनायें। पंचम तथा नवम बिन्दू के बलाबल से फल कहें उदाहरण पेज १५५ पर देखे यदि दोनों बिन्दू मय वर्तमान बिन्दू के बली हो तो प्रथम श्रेणी में पास होगा यदि एक बली तथा एक किसी कारण कुछ कम बल मिल रहा हो तो दूसरी या तीसरी श्रेणी में पास होगा इस प्रकार के निर्णय में रमलज्ञ को सावधानी से काम लेकर तब हुक्म सुनाना चाहिये इसके उदाहरण में जो पेज १५५ में दिया गया बिन्दू चलकर प्रथम २ में गया है २ से चौथे घर में गया है। प्रूफ की गल्ती है सँभाल लें।

(४०) मुझे लाटरी घुड़ दौड़ आदि में विजय मिलेगी या नहीं।

रमलज्ञ को चाहिये अपने इष्ट देवता का ध्यान धर कर एकाग्रचित्त होकर तब पाँसा डालकर प्रस्तार बनायें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करे। अब बिन्दू १, ११-१४ तो प्रश्नकर्ता का है तथा ४-५-७ बिन्दू अन्य लोगों के होते हैं। अब रमलज्ञ को चाहिये कि प्रथम प्रश्नकर्ता के बिन्दूओं के बलाबल पर ध्यान दो यदि तीनों बिन्दू यानी १-११-१४ मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दू के बलवान हो और विपक्षी के बिन्दू ४-५-७ निर्बल हो तो प्रश्नकर्ता को इच्छानुसार लाटरी या घुड़ दौड़ अथवा अन्य खेलों में विजय मिलेगी यदि अपने बिन्दू निर्बल हो और विपक्षी के बिन्दू तगड़े देख पड़े तो रमलज्ञको चाहिये प्रश्नकर्ताको रोक दे आप इस फेर में पैसा मत गँवाये विजय न होगी यदि प्रश्नकर्ता के आधे से कुछ अधिक बिन्दू बलवान हो और विपक्षी के निर्बल हो तो कुछ भाग से विजयी होंगे रमलज्ञ को सावधानी से जवाब देना चाहिये। इसका उदाहरण १५५ से १५६ में दिया गया है। उसी को पढ़कर समझकर तब अपने प्रस्तार से उपरोक्त बिन्दु के बलाबल से अपना हुक्म लगाना चाहिये।

छठे घर के प्रश्नों का हल

(१) रोगी रोग से मुक्त होगा या नहीं।

इस प्रकार के प्रश्न के उत्तर निकालने में रमलज्ञ को ९ बातों पर ध्यान देना चाहिये। जैसे रमल दिवाकर के पृष्ठ १५७ के अन्तमें ९ बातों के उत्तर निकालने को कहा गया है। फिर इस प्रकार प्रश्नों के उत्तर निकालनेका शकुन प्रकार द्वारा पृष्ट १५८ से पृष्ठ१५९ के पूरे पेजमें दिया गया है। उसीको समझकर जवाब देवें। अब तुला चालित विन्दुसे रमलज्ञ को देखना चाहिये। यदि तुला चालित विन्दु जहाँ रुका फिर अपने दाहिने या बायें चाहे जिधर विन्दु जावें तो शुभ लक्षण है फिर प्रस्तार को खाना ४ की शक्ल से खाना ६ का शक्ल से गुणा करें यदि हासिल शक्ल $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\-\\-\end{smallmatrix}$ हो तो रोग बढ़ेगा यदि खाना १ या ८ में $\begin{smallmatrix}\cdot\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और खाना ४ में $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ हो या $\begin{smallmatrix}\cdot\\\cdot\\\cdot\\\cdot\end{smallmatrix}$ हो और खाना ५ या १२ में $\begin{smallmatrix}-\\\cdot\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ या $\begin{smallmatrix}-\\-\\\cdot\\-\end{smallmatrix}$ अथवा खाना १५ में $\begin{smallmatrix}-\\-\\-\\-\end{smallmatrix}$ पड़ जावे तो मृत्यु होवे। इस प्रकार पृष्ठ १६० की चार सतरों तक शकुन क्रम का तरीका विस्तारपूर्वक समझाया गया है। अब विन्दु चाल से तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को लेकर लग्न कायम करें। फिर लग्न से १ व ४ विन्दु को देखैं यदि दोनों विन्दु मय वर्तमान भविष्य के बलवान हों तथा ६ व ८ विन्दु की शक्लैं निर्बल हों तो रोगी आराम पायेगा इसका उदाहरण देकर पेज १६० से पेज १६१ की २ सतर तक समझाया गया है रमलज्ञ उसी को समझकर अपने बनाये प्रस्तार से फल कहै।

(२) रोग किस कारण से है।

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिए अपने इष्ट देवता का ध्यान धर कर पाँसा डालकर प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी रूप के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें फिर लग्न से सोपान चक्र के द्वारा छठें बिन्दू पर ध्यान दें—यदि वह

बिन्दू वायु तथा जल में हों तो वात तथा बलगम रोग से पीड़ित है। यदि वायु में है तो पित्त रोग से पीडित है। वायु विकार कब्ज आदि से बीमार पड़ा यदि जल में हो तो श्लेषमा होकर बीमार पड़ा यदि अग्नि के घर बिन्दू बसे तो गर्मी खुश्की पैदा होकर रोग हुआ इसके अनुक्रम से जो तरीका समझाया गया है वह पेज १६१ पर देखें।

(३) रोगी कब अच्छा होगा ?

इस प्रकार के प्रश्न के उत्तर के लिए रमलज्ञ को चाहिए अपना प्रस्तार बना लें अब तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसीके गृहफल के अनुसार लग्न कायम कर ले फिर लग्न से छठे बिन्दू पर निगाह डालें देखें छठे बिन्दू में कौन शक्ल बैठी है फिर वह शक्ल कितनी संख्या रखती है जितनी संख्या उस शक्ल की हो उतने ही दिनों में रोगी अच्छा होगा। क्रम से प्रकार से समझें ⋮ से १५ ⊤ से १६ ∓ से १७ ⩧ से १८ ÷ से १९ ⩨ से २० ≑ से २१ ≣ से २२ ⊥ से २३ ⊥ से २४ ± से २५ ⩦ से २६ वें ≐ से २७ वें दिन ≟ से २८ ≜ से २९ ≡ से ३० दिन में आराम पायेगा। इसका उदाहरण पेज १६२ पर देखें।

(४) रोगी को शारीरिक रोग है या बाधा है।

रमलज्ञ को चाहिए इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर शकुन क्रम से पेज १६३ पर विस्तार पूर्वक दिया है उसी को समझ कर अपने प्रस्तार से फल कहें—अब बिन्दु चाल द्वारा रमलज्ञ को चाहिए तुला चालित बिन्दू अपने स्थान से चल कर जहाँ विश्राम्ति पावे उससे सोपान चक्र द्वारा छठा बिन्दू देखो यदि वह बिन्दू २ या ६ या १० या १४ में हो यानी वायु घर में हो तो वायु का राग कहें यदि इस शक्ल की तकरार कहीं अन्य घर मे हो तो बाधा की बीमार। समझें यदि छठा बिन्दू अग्नि के घर में हो या वायु के घर तकरार करै। तो जादू टोना किया गया है। यदि बिन्दु जल या पृथ्वी में हो और अग्नि या वायु में पुनरुक्त हो तो रोग है। इसका उदाहरण पेज १६२ पर दिया गया है।

(५) रोगी ने बद परहेजी की है या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनालें यदि प्रस्तार के दूसरे घर में ⩱ या ⁝ या ⩲ या ÷ या ≡ या ÷ या ≡ आवे तो रोगी ने जरूर बद परहेजी की है इसी कारण बिमार हो गया है—यदि यह शक्लें न आवे तो यह कमजोरी के कारण रोग पैदा हुआ है ।

(६) मैं पशु (भेड़ बकरी इत्यादि) का व्यापार करना चाहता हूँ लाभ होगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बना लें—रमलज्ञ को चाहिए प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दु को चलाकर देखें कि उसकी दशा कैसी है । उसकी वर्तमान तथा भविष्य दशा के बलाबल का विचार कर लें फिर सोपान चक्रद्वारा दूसरे छठे बारहवें बिन्दू के बलाबल को देखकर हुक्म लगावें यदि चारों बिन्दू बलवान हो तो साधारण लाभ होगा । पृष्ठ १६४ तथा १६५ पर इसका उदाहरण दिखाया गया है । रमलज्ञ उसी के आधार पर हुक्म लगावें ।

(७) अमुक पक्षी या जानवर के शिकार को जा रहे हैं शिकार मिलेगा या नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिए कि प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसीको लग्न मानें वह बिन्दु चाहे प्रमाणित हो या अप्रमाणित हो । प्रमाणित बिन्दू में २ बिन्दू दो पाइयां सदैव हुआ करती हैं । अप्रमाणित में विषम बिन्दू या पाई हुआ करती है जैसे ⩱ ≡ ⁝ ⊥ ≡ ≡ इत्यादि अस्तु तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे सोपान चक्र को सामने रखकर उससे छठा विन्दु प्रस्तार में यदि अग्नि ग्रह में पड़े तो शिकार होगा । यदि इसके विपरीत अन्य गृह वायु या जल वा पृथ्वी घर में पड़े तो शिकार न मिलेगा । इसका उदाहरण सहित प्रश्न पृष्ठ १६६ पर दिया गया है। जहाँ बिन्दु विश्रान्त करे उसका वर्तमान विन्दु भी देखना चाहिये । यदि वर्तमान बिन्दु

तथा अपना प्रथम बिन्दु दोनों अग्नि घरों में पड़े हों तो शिकार खूब मिलेगा ।

(८) मेरा छोटा पशु अथवा पक्षी खो गया है मिलेगा या नहीं ?

इसी निवत से रमलज्ञ को प्रस्तार बनाना चाहिये प्रथम प्रस्तार के खाना ६ तथा १२ घरों को देखो यदि वही शक्ल किसी दाखिल या साबित गृह में हो तो पशु मिलेगा यदि विपरीत हो तो न मिलेगा ।

बिन्दु चाल द्वारा तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें चाहे वह गृह प्रमाणित हो या अप्रमाणित हो उसी को लग्न कायम करें—फिर सोपान चक्र से छठा तथा १२ वें बिन्दु को देखो यदि दाखिल या साबित घरों में हो तो मिले विपरीति से नहीं मिलेगा—इसमें रमल दिवाकरके पृष्ठ १६६।१६७ पर दिखाया गया है उसको दूसरे एडीशन में संशोधन करना होगा ।

(९) यदि कोई पूछे मेरा नौकर ईमान्दारी से काम करेगा या हानि पहुँचायेगा ।

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये प्रस्तार बनाले—फिर १-६-१२ बिन्दु के बलाबल से अपनी बुद्धी से फला देश कहे । यदि १ बिन्दु मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के निर्बल हो और २ बलवान हो तो ईमान्दारी से करेगा मगर अपने स्वार्थ लाभका भी ध्यान रक्खेगा । यदि २ बिन्दु मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के निर्बल हो तो यदा कदा धोखा देता रहेगा । यदि तीनों बिन्दु अर्थात् १-६-१२ मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के बलवान हो तो पूर्ण ईमान्दारी से काम करता रहेगा । इसका उदाहरण पृष्ठ १६७ पर देकर समझाया गया है ।

(१०) यदि कोई पूँछै सेवक (नौकर) की प्रकृति कैसी है ।

इसी नियत से प्रस्तार बनावें—यदि प्रस्तार की छठी शक्ल में ≣ हो तो उसकी प्रकृति अच्छी है—यदि इसमें =̤ या ÷̄ या ⁝̄ हो तो

प्रकृति शुभ है यदि 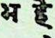 या शक्ल हो तब भी प्रकृत अच्छी है ऐसा कहो इसके विपरीत शक्ल हो तो प्रकृति खराब होगी। ऐसा जवाब दो।

अब प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दु को देखो यदि वह बिन्दु स्वगृही है या मित्र क्षेत्री है तथा सोपान चक्र से छठा बिन्दु पुनरूक्त शुभ गृह में हो तो उत्तम प्रकृत का हो इसके विपरीति हो तो उस पर भरोसा न करें किसी समय धोखा देगा।

(११) मेरा भेद छुपा रहेगा या खुल जायेगा ?

इसी नियत से प्रस्तार बनावें—तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी को लग्न मानकर यदि लग्न मय वर्तमान बिन्दु के बली हो तथा लग्न से छठा बिन्दु अशुभ और निर्बल हो तो भेद छुपा रहेगा। यदि छठा बिन्दु मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के बलवान होगा तो भेद खुल जायेगा—आचार्य सुर्खाव का मत है यदि छठा बिन्दु सोपान चक्र के प्रस्तार में खारिज या मुनकलिब गृह में हो तो भेद छुपा न रहेगा यदि दाखिल या साबित घर में हो तो भेद छुपा रहेगा। इसका उदाहरण द्वारा सुझाव रमलदिवाकर के पृष्ठ १६८ पर दिखाया गया है।

(१२) भागा हुआ प्राणी वापस आयेगा या नहीं ?

(१२) यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई प्राणी करे तो रमलज्ञ को चाहिये भगवान का ध्यान करके पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्त पावें उसी को लग्न मानकर सोपान चक्र द्वारा उसके छठे बिन्दु को देखें यदि छठा बिन्दु जल या पृथ्वी की शक्ल हो तथा पुनरुक्त (अर्थात उसकी तकरार) जल या पृथ्वी के घर में हो तो वापस आ जाता है। इसके विपरीत नहीं ?

इसका उदाहरण पृष्ठ १६९ पर रमलदिवाकर में समझाया गया है।

(१४) भागा हुआ नौकर या भागी हुई दासी लौटेगी या नहीं ?

इसी नियत से भगवान का ध्यान करकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार

बना लें प्रथम प्रस्तार के खाना ६, ७ व ८ घरों की शक्लों को देखो यदि वह शक्ल पृथ्वी या जल की हुई पृथ्वी की शक्ल ≡ ÷ ∓ ≣ है तथा जल की शक्लें (⋮ ≡ ∓ ÷) अथवा इन्हीं तत्वों के घरों में तकरार (पुनरुक्त) करें तो लौटने की आशा करें अन्यथा आशा न करें—आचार्य सुर्खाब का कथन है यदि बिन्दु दाखिल या साबित घर में हो तो वापस आयेगा यदि खारिज या मुन्कलिब में हो तो न आवे। इसका उदाहरण पृष्ठ १७० पर दिया गया है विचारणीय यह है। १-५-९-१३ घर खारिज के हैं २-६-१०-१४ घर मुन कलिब कहलाते हैं तथा ३-७-११-१५ दाखिल हैं और ४ व ८-१२-१६ साबित कहलाते हैं।

(१४) भागे हुये व्यक्ति की तलाश में आदमी भेजा गया है उसे मिलेगा या नहीं।

इसी नियम से प्रस्तार बनालें इस प्रकार के प्रश्न में प्रस्तार की ६ व ७ व ८ व १२ घरों की शक्लों को देखो यदि वह शक्लें जल या पृथ्वी की हों जैसा जल और पृथ्वी की शक्लों का निर्णय प्रश्न नं० १३ में लिखा जा चुका है। तथा जल या पृथ्वी में पुन रुक्त हो तो भागा हुआ प्राणी मिल जाता है। अन्यथा नहीं।

फिर प्रस्तार में खाना १५ से तुला चालित बिन्दु अपने स्थान से चलकर जहाँ विश्रान्ति पावें। उसीके बलाबल को देखकर लग्न मान लें—फिर सोपान चक्रको सामने रखकर तुला चालित बिन्दु से छठा तथा सातवें व आठवें तथा बारहवें बिन्दू को देखें। यदि वह दाखिल या साबित में पुनरुक्त (तकरार) हो तो वह मिलेगा अन्यथा नहीं मिलेगा—

इसका उदाहरण पृष्ठ रमल दिवाकर के पृष्ठ १७१ पर दिया जाकर समझाया गया है। जिसमें आठवीं सतर में खाना २ में मुन्कलिब

खाना ७ में दाखिल दिखाया गया है ७ का खाना भी दाखिल ही का है। पाठक गण सम्भाल लें।

(१५) भागा हुआ व्यक्ति स्वयं भाग गया है या किसी के बहकाने से गया है ?

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये भगवान का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—प्रथम प्रस्तार में खाना ६ व १२ के घरों को देखे उस में कौन सी शक्ल बैठी हैं यदि वह शक्ल अग्नि या वायु की है तो वह स्वयं चला गया है यदि जल या पृथ्वी की शक्ल है तो किसी के बहकाने से गया है।

अब प्रस्तार से तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसके बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें। फिर लग्न से छठे तथा १२ वें बिन्दू को देखें यदि दोनों विन्द खारिज तथा मुनकलिब घरों में हो तो वह प्राणी खुद चला गया है यदि उपरोक्त दोनों विन्दू दाखिल या साबित घरों में हो तो किसी के बहकाने से गया है। इस प्रश्न का हल उदाहरण सहित रमलदिवाकर के पृष्ठ १७२ पर समझाया गया है।

(१६) भागा हुआ प्राणी जीवित है या मर गया है ?

रमलज्ञ को चाहिये बडी सावधानी से पवित्र हो भगवान का ध्यान देकर प्रस्तार बना लें फिर खाना १५ से तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्राति पावे उसी के बलाबल को समझ कर लग्न कायम करें। फिर सोपान चक्र को सामने रखकर लग्न से प्रथम दशम विन्दू को देखें—यदि दशम विन्दू की शक्ल जल या पृथ्वी की है तो वह प्राणी जीवित समझें—तथा लग्न से १४ वाँ विन्दू मृत्यु का है १४ विन्दू के बलाबल को देखकर फल कहें।

इस का उदाहरण सहित रमलदिवाकर के पृष्ठ १७३ व १७४ पर समझाया गया है। रमलज्ञ उसी से समझकर उसी प्रकार अपना प्रस्तार बनाकर फल कहें।

(१७) भागा हुआ प्राणी इसी शहर में है या बाहर चला गया है।

इसी नियत से रमलज्ञ भगवान का ध्या धरकर प्रस्तार बनालें फिर ुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे—उस के बलाबल को देखकर ग्न कायम कर लें—फिर सोपान चक्र को सामने रखकर यदि ्रन बिन्दू से दशम बिन्दू मय अपने वर्तमान बिन्दू के बलवान हो तो ी शहर में है बाहर नही गया है यदि १६ वाँ बिन्दू मय अपने वर्तमान न्दू के बलवान हो तो कहना चाहिये भागा हुआ प्राणी बाहर चला ाया है।

इसका उदाहरण जो रमलदिवाकर में पृष्ठ १७५ पर दिखाया गया है। दशम बिन्दु ही सोलहवें बिन्दु से बलवान माना गया है। इसी कारण हना पड़ा कि बाहर नहीं गया है। दूसरा सरल तरीका प्रस्तार को नाओ फिर खाना ४ व १० की शक्लों को देखो अगर दोनों दाखिल । साबित शक्लें हों तो कहो इसी शहर या गाँव में है कहीं छुपा हुआ यदि उपरोक्त शक्लें खारिज या मुनकलिब हो तो बाहर चला गया है। सा उत्तर दो यदि ⫶ या ≡ हो तो कहीं निकट ही छुपा हुआ है। न्य तरीका यदि खाना ४-७-६-८ या १५-१२ दाखिल या साबित किसी ूरत से हो शहर ही में है विपरीत से बाहर—

(१८) भागा हुआ प्राणी किस तरफ गया है ?

प्रस्तार बनाकर दशम बिन्दु देखो वह कौन सी शक्ल में बैठा है। ह शक्ल जिस दिशा से सम्बन्ध रक्खे उसी तरफ को कहना चाहिये।

इस का उदाहरण पृष्ठ १७४ के प्रस्तार ÷ ≟ ≑ ⫶ को मातृपंक्ति नाकर प्रस्तार बनाया गया है। लग्न खाना १५ की शक्ल ⫶ माना है स का दशम बिन्दु सोपान चक्रसे ÷ है सूर्य की शक्ल है दक्षिण दिशा सम्बन्ध रखती है अस्तु दक्षिण तरफ कहो—यदि १६ वाँ बिन्दु बलवान ो तो उस के माफिक दिशा कहें ≑ ∸ ÷ ⫶ यह पूर्व की शक्ल ≑

पश्चिम की शक्ल है तथा यह उत्तर दिशा की है और यह दक्खिन तरफ की है।

(१९) भागा हुआ प्राणी अकेला है अथवा उसके साथ और कोई भी है ?

इसी नियत से प्रस्तार बना लें लग्न कायम करलें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर लग्न से सातवें बिन्दु को खोजें यदि उस बिन्दु की तकरार प्रस्तार में है तो साथ में दूसरा आदमी है जितनी जगह तकरार हो उतने ही प्राणी उसके साथ में हैं।

(२०) अमुक वस्तु खो गई है या चोरी की गई है।

यह बड़ा गूढ़ विषय है। रमलज्ञ को एकान्त चित्त से प्रातःकाल से १० बजे दिन के भीतर जब विचारने वाले का दाहिना स्वर चलता हो तभी पूजन के स्थान पर बैठकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना लें—फिर खाना २ की शक्ल को देखो यदि वह शक्ल अग्नि या वायु की हो या इसी की तकरार भी प्रस्तार में हो तो चोरी गई है।

आचार्य सुर्खाब ने कहा है यदि दूसरा बिन्दु बलवान हो और दाखिल या साबित में तकरार करे तो माल चोरी नहीं गया है—कहीं रखकर भूल गया है इसके विपरीत चोरी जाना कहो। अन्य तरीका शक्लों के द्वारा—प्रस्तार के खाना २ व ६ की शक्लों को देखें यदि उसमें शक्ल दाखिल या साबित हो तो चोरी नहीं गया है। कहीं रखकर भूल गया है यदि शुभमुनकलिब शक्ल हों तो प्रश्न कर्ता ने खुद खर्च कर दिया है—कहना उसका झूठ है बाकी सूरतों में माल चोरी गया है और मिलेगा भी नहीं यदि प्रस्तार के खाना १-२ या ७ व ८ में 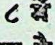 या आ में से कोई न हो तो कहो चोरी नहीं गया है माल रखकर भूल गया है। यदि उपरोक्त घरों में इनमें से कोई भी शक्ल हो तो चोरी गई है ऐसा कहो।

(२१) खोई हुई या चोरी गई वस्तु का पता लगेगा या नहीं।

इसी नियत से रमलज्ञ पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम कर ले---फिर सोपान चक्र को सामने रखकर खाना २ के बिन्दु को देखें यदि उस बिन्दु की शक्ल जल या पृथ्वी में होवे तो माल मिलेगा साथ हो आठवाँ विन्दु खारिज अथवा मुनकलब में होगा तो माल मिलेगा इसका उदाहरण पृष्ठ १७७ पर जो दिया गया है। वह ठीक है रमलज्ञ उसी अनुसार फल कहै।

सातवें घरों के प्रश्नों का हल

(१) यदि कोई पूँछे कि अमुक प्राणी का विवाह होगा या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाले फिर खाना १५ पर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्त पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें फिर विचारणीय गृह १-४-७-६-१०-११-१४ के बिन्दु तथा वर्तमान विन्दु के बलाबल का ध्यान रखते हुये अपनी बुद्धि के अनुसार फलोदेश कहना चाहिये। रमल दिवाकर में इस प्रश्न का फलादेश पृष्ठ १७७ से १ १ तक विस्तार पूर्वक उदाहरण सहित समझाया गया है। परन्तु प्रश्न केवल विवाह होने या न होने का है अस्तु रमलज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दु द्वारा विन्दु के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें फिर लग्न से सातवें बिन्दु को देखें उसी के बलाबल तथा वर्तमान बिन्दु के बलाबल को विचार करै फिर उसी बिन्दु के भविष्य विन्दु पर विचार कर दैवज्ञ को फलादेश सुना देना चाहिये---उदाहरण में सातवां बिन्दु लग्न बिन्दु से ⁝ माना गया है (देखो पृष्ठ १७९ सतर १०) जो खाना ८ में स्वदेशी है इसका वर्तमान ≡ खाना १४ में शत्रुक्षेत्री है भविष्य शक्ल अग्नि की ⁝ है समबल पा रही है। चूँकि सप्तम बिन्दुमय भविष्य सन्तोषजनक है। अस्तु कहा गया विवाह में बीच में कुछ कठिनाई पड़ेगी— पर शादी हो जायेगा।

(२) विवाह जो तय पाया है वह शान्ति पूर्वक होगा या नहीं।

रमलज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करलें फिर लग्न से प्रथम तथा पाँचवे बिन्दु के बलाबल को देखकर तथा उसके वर्तमान बिन्दु भविष्य बिन्दु के बलाबल को देखकर सन्तोष जनक हुक्म सुना देना चाहिये। विचारणीय गृह १-५ है इसका उदाहरण पृष्ठ १८१-१८२ पर दिखाया गया है।

(३) यह विवाह किस के द्वारा निश्चित होगा ?

जब इस प्रकारका प्रश्न कोई सज्जन कर बैठें तब रमलज्ञ को चाहिये कि इसी नियतसे प्रस्तार बनावे। फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करलें फिर उसके सातवें बिन्दु को देखना चाहिये कि वह प्रस्तार में किन किन घरों में मौजूद है उस बिन्दु को कैसा बल मिल रहा है उसी अनुसार दैवज्ञ को अपने प्रस्तार से हुक्म लगाना चाहिये इसका उदाहरण पृष्ठ १८३ पर दिया गया है। उसी अनुसार फल कहना चाहिये।

(४) जिस स्त्री से विवाह होने जा रहा है वह कैसी है ?

दैवज्ञ को चाहिये कि इसी नियत से प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावें उसी को लग्न मानें फिर लग्नसे सातवें बिन्दु पर निगाह डालें तथा उसके वर्तमान बिन्दु के बलाबल पर निगाह डालें यदि सप्तम बिन्दु मय अपने वर्तमान बिन्दु के सहित बली हो तो वह स्त्री धर्म परायण होती है यदि दोनों बिन्दूओं में से किसी दूसरे, पाँचवे, आठवें या ग्यारहवें में हो तो वह स्त्री धर्म परायण होती है अन्यथा नहीं—इसको उदाहरण सहित रमल दिवाकर के पृष्ठ १८३ से १८४ में समझाया गया। चूकि बिन्दु शत्रु क्षेत्र में रुकता है अस्तु कन्या के सतीत्व को शक में डाल रहा है। पर वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु बलवान है अस्तु भविष्य में चरित्र उत्तम रहेगा। आचार्य सुर्खाब का कथन है यदि लग्न से सातवाँ बिन्दु खाना २ या ३ या १४ या १५ या १६ घरोंमें हो तो कन्या शुभ गुणवती उत्तम वंश की है।

(५) इस स्त्री से सन्तान सुख होगा या नहीं ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करै तो दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करै लग्न बिन्दु तथा उसके वर्तमान बिन्दु के बलाबल को देखना चाहिये फिर लग्न बिन्दु से केवल पंचम बिन्दु मय वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के बलाबल को देखकर दैवज्ञ अपनी बुद्धी के अनुसार फल कहै। इसी प्रश्न में उदाहरण जो गत प्रश्न के पृष्ठ १८३ से १८४ तक समझाया गया है। उदाहरण मान्य है उसी आधार को लेकर दैवज्ञ फल कहै।

(६) पति तथा पत्नी में परस्पर प्रेम रहेगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनालें फिर प्रस्तार की खाना १ की शक्ल खाना ५ या ९ या १३ में पुनरुक्त तकरार) हो तो दोनों में अगाध प्रेम बना रहेगा यदि खाना १ की शक्ल खाना ३ या ११ या १५ में तकरार करै तो स्त्री की तरफ से प्रेम रहेगा यदि दोनों घरों की शक्लें यानी खाना १ व ७ की उपरोक्त रीत्यानुसार अपने अपने घरों में पड़ीं हो तो सुख शान्ती से प्रेम रहकर जीवन दोनों शान्तीपूर्वक व्यतीत करैंगे। अन्यथा प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम करें फिर प्रथम ता सप्तम बिन्दु को देखैं यदि दोनों स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री हों तो सदैव प्रेम रहेगा यदि दोनों बिन्दु सम क्षेत्री हों तो साधारण प्रेम रहेगा यदि शत्रु क्षेत्री बिन्दु हों तो सदैव झगड़ा रहेगा। शेष १८५ पृष्ठ से ज्ञात करै।

(७) यदि कोई पूछे एक स्त्री मौजूद है। दूसरी और करना चाहता हूँ। दोनों में कौन शुभ है ?

इसी नियत से प्रस्तार बनालें। अब प्रस्तार में प्रथम तथा चौथा बिन्दु तो मौजूदा स्त्री का होता है——तथा १ व साँतवा बिन्दु नवीन आने वाली स्त्री का होता है। अब जिस के बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बली हों वही शुभ फल दायक होगी।

(८) यदि कोई पूछै कि मेरी स्त्री किसी अन्य पुरुष से सम्पर्क तो नहीं रखती है ?

इसी नियत से दैवज्ञ प्रस्तार बनालें यदि खाना ७ की शक्ल शुभ दाखिल हो और तकरार उसकी खाना १ या २ या ४ या ५ या ८ या १० या ११ में से किसी में हो या खाना २ व ८ किसी प्रकार से दाखिल शक्लैं हों अथवा खाना ७ में ⩦ या ≡ या ÷ या ⩨ में से कोई १ शक्ल हो या खाना ७ में शक्ल ÷ हो और खाना ८ में ⩦ हो या खाना ७ में ÷ और खाना ८ में ⩦ हो तो स्त्री पतिव्रता है अथवा खाना १ की शक्ल को खाना ७ की शक्ल से गणा करो यदि हासिल शक्ल शुभ दाखिल हो तो पतिव्रता है यदि ≡ ⩦ या ⩦ हो तो भी पतिव्रता है यदि ≣ या ≐ हो तो पतिव्रता तो है मगर क्रोधी प्रकृत की है यदि ÷ या ⋮ हो तो पतिव्रता में सन्देह है यदि ⩦ या ⩨ या ÷ हो तो लड़ाकू है यदि ⋮ है तो पति से द्वेष रक्खेगी।

बिन्दु चाल में लग्न से सत्रहवा (१७) बिन्दु देखा जाता है उसी के बलाबल से फल कहना चाहिये इसको उदाहरण सहित पृष्ठ १८६ से १९० तक समझाया गया है इसी को समझ कर अपनी बुद्धी के अनुसार हुक्म लगावें।

(९) मेरा पति दूसरी स्त्री लाना चाहता है लायेगा या नहीं ?

दैवज्ञको चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बनावे फिर प्रस्तार की खाना २ की शक्ल को देखैं यदि वह शक्ल शुभ दाखिल ÷ या ⩨ या ⋮ हो तो दूसरी स्त्री लायेगा और उसका परस्पर प्रेम बना रहेगा यदि शुभ खारिज जैसे ≣ या ≐ हो तो शादी करेगा मगर बाद को छोड़ देगा यदि शुभ साबित शक्ल हो तो देर से करेगा मुन कलिब से दुविधा का हुक्म सुनाना चाहिये—बिन्दु चाल द्वारा लग्न कायम करके दूसरे बिन्दु को देखैं फिर दूसरे बिन्दु का वर्तमान बिन्दु न देखैं यदि दोनों स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री हो तो स्त्री लायेगा और प्रेम रहेगा। विपरीत से स्त्री नहीं लायेगा।

(१०) यदि स्त्री पूछे मैं दूसरा पति करना चाहती हूँ फल कैसा रहेगा—

रमलज्ञको चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बनालें—और तुला चालित बिन्दु से लग्न कायम करै लग्न से चौथा बिन्दु तो नये पति के प्रति है तथा सातवाँ बिन्दु मौजूदा पति का है। अब दोनों बिन्दु के बलाबलको देखकर तथा दोनों के वर्तमान बिन्दु के बलाबल को देखकर हुक्म लगाना चाहिये यदि चौथा बिन्दु मय अपने वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तो नवीन पति से लाभ रहेगा यदि सप्तम बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तो मौजूदा पति ही शुभ फलदायक होगा नवीन पति भूल कर भी न करैं वर्ना जीते जी नर्क रहेगा—इसका उदाहरण तो पृष्ठ १९१ पर समझाया गया—उसी अनुसार समझ कर अपने प्रस्तार से फलादेश कहैं।

(११) गायब व्यक्ति जीवित है या मर गया है।

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करैं तो रमलज्ञ को चाहिये भगवान का ध्यान धरकर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करै—फिर लग्न से दशम विन्दु को देखैं तथा उसके वर्तमान विन्दु को भी देखैं यदि दोनों विन्दू स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री ही बलवान हों तो गायब जिन्दा है फिर लग्न के १४ वें विन्दू को भी मय उसके वर्तमान विन्दू को देखैं यदि यह दोनों बलवान हों तो मृत्यु को प्राप्त हो चुका है यदि १० व १४ दोनों विन्दू मय अपने वर्तमान विन्दू के बलवान हों—तब प्रस्तार के खाना १ से खाना १५ तक के विन्दूओं को गिनों यदि ३२ बिन्दू तक हों तो गायब जिन्दा है। यदि बिन्दू २८ से ऊपर हों ३२ से कम हो तो प्रस्तार की शक्लें को देखैं यदि शुभ शक्लें अधिक हों तो जीवित है वर्ना……मरा हुआ समझें।

(१२) गायब व्यक्ति का विचार क्या है। आयेगा या नहीं ?

इसी नियत से पाँसा डाल कर प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित

बिन्दू द्वारा लग्न कायम करें—फिर लग्न से सातवें बिन्दू को देखें यदि वह बिन्दू दाखिल या साबित में हो तो गायब शीघ्र आयेगा यदि इसके विपरीत हो तो वापस आने की आशा अभी नहीं—इसको उदाहरण सहित प्रस्तार बनाकर पृष्ठ १६३ पर समझाया गया है। उसी अनुसार रमलज्ञ को अपने प्रस्तार से सातवें बिन्दू द्वारा हुक्म लगाना चाहिये— दूसरी विधि प्रस्तार बनाकर खाना ७ को देखो यदि उस घर में शक्ल ÷ या ÷ या ⁝ या ≑ हो और खाना ६ या ११ में तकरार करे तो गायब का इरादा शीघ्र वापस आने का है। यदि खाना ७ या ११ में शक्ल ÷ हो तो अति शीघ्र विदेशी आवेगा या उसका पत्र आवे यदि ≑ हो तो भी आवे।

(१३) गायब व्यक्ति किधर है ?

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से दशम बिन्दू को देखें यदि वह बिन्दू अग्नि में हो तो पूर्व तरफ यदि वायु बिन्दू में हो तो उत्तर तरफ यदि जल में हो तो पच्छिम तरफ है यदि दशम बिन्दू पृथ्वी के घर में हो तो दक्षिण दिशा में है—यह तत्व क्रम की दिशायें हैं इसका उदाहरण पृष्ठ १६३ व १५४ पर समझाया गया है दैवज्ञ उसी अनुसार अपना प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करके उपरोक्त रीत्यानुसार दशम बिन्दु के तत्वओं द्वारा हुकम लगावे। प्रस्तार में दशम घर की शक्ल से दिशा का ज्ञान करना चाहिये अर्थात् दशम घर में जो शक्ल हो जिस दिशा से वह शक्ल सम्बन्धित हो उसी तरफ को कहना चाहिये अर्थात् ≟ या ≐ या ÷ या ⫶ से पूर्व तरफ तथा ≐ या ÷ ⫶ या ⁝ पच्छिम तरफ तथा ≑ ⫶ या ≟ या ÷ या ⁝ उत्तर तरफ तथा ≡ या ≑ या ≑ या ÷ दक्षिण दिशासे सम्बन्ध रखती है दूसरा तरीका यह है प्रस्तार की खान १ व ६ की शक्ल को गुणा करें यदि हासिल शक्ल सात या बारह घर में हो तो पूर्व तरफ यदि खाना ४ या ५ में हो तो दक्खिन तरफ यदि ८ या ९ में हो तो उत्तर तरफ यदि १० या ११ में हो तो पच्छिम तरफ बताना चाहिये।

(१४) यदि कोई पूछे गायब कितनी दूर पर हैं ।

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम कर लो फिर लग्न से सप्तम विन्दू को देखो यदि सप्तम विन्दू की तकरार किसा जगह न हो तो जो संख्या रमल दिवाकर में पृष्ठ १९४ पर दी गई है उसी से फासिला-बता दो उदाहरण सहित समझाया गया है उसा आधार से अपना प्रस्तार बना कर लग्न कायम करके सप्तम विन्दु से फासिला बतावे ।

(१५) गायब अकेला गया है या किसी के साथ गया है ?

रमलज्ञ को चाहिए प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करले फिर लग्न से आठवें विन्दु को देखें यदि प्रस्तार में अकेला है तो कहो अकेला गया है दूसरा साथ में कोई नहीं गया है। यदि आठवाँ विन्दू प्रस्तार में तकरार करें तो कहो साथ में दूसरा व्यक्ति भी है यदि विन्दु पुल्लिंग का है तो पुरुष साथ में है यदि स्त्रीलिंग हो तो स्त्री साथ में है। बिन्दु अग्नि या वायु का हो ता पुरुष वर्ना जल यदि पृथ्वीका हो तो स्त्री समझें इसका उदाहरण पृष्ठ १९५ व १९६ पर दिखाया गया है उसीसे समझो। दूसरी विधी प्रस्तार की खाना ८ की शक्ल यदि दाखिल शक्ल है तो कहो साथ में दूसरा भी व्यक्ति है यदि वह शक्ल अग्नि या वायु की है तो पुरुष है यदि जल तथा पृथ्वी की हो तो स्त्री कहना चाहिये— यदि खाना ७ की तकरार खाना १३ में हो तो कहो उसने स्त्री कर ली है यदि खाना १२ में तकरार करे तो नौकरानी आदि है यदि खाना ११ में तकरार करें तो किसी की स्त्री को हड़प लिया है।

(१६) यदि कोई पूछे गायब उसी मुकाम पर है या अन्य स्थान पर चला गया है ?

रमलज्ञ की चाहिए कि भगवान का ध्यान धरकर प्रस्तार बनाकर तुला चालित विन्दू के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें फिर लग्न से दशम बिन्दू को देखें यदि वह दशम विन्दू प्रस्तार में है नहीं तो उसके वर्तमान विन्दू को देखो यदि वह विन्दु दाखिल या साबित घर

में हो तो आगे नहीं गया है फिर १६ वें बिन्दुको भी इसी प्रकार देखकर हुक्म लगावें इसको उदाहरण सहित पृष्ठ १९५ पर समझाया गया है।

(१७) यदि कोई पूछे गायब व्यक्ति अपने गृह गया या नहीं।

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम कर लें फिर लग्न से १६ वाँ बिन्दु को देखें यदि वह बिन्दु जल या पृथ्वी में हो तो वह अपने घर पहुँच गया है यदि जल तथा पृथ्वी में भी हो और अग्नि या वायु में भी हो तो भी कहो शीघ्र ही घर पर आयेगा।

(१८) गायब व्यक्ति वापस आयेगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से दशम तथा ग्यारहवें बिन्दु को देखें यदि दोनों बिन्दु दाखिल या साबित घर में हो तथा ७ व ८ और नवाँ बिन्दु खारिज या मुनकलिब में हो तो गायब वापस आयेगा यदि इसके विपरीत हो तो न आयेगा इस प्रश्न का उत्तर उदाहरण सहित पृष्ठ १९६ व १९७ पर समझाया गया है। उसी अनुसार रमलज्ञ अपना प्रस्तार बनाकर फल सुनावें—दुसरी विधि यदि प्रस्तार की शक्ल खाना ७ की खारिज हो और उसकी विलाम शक्ल खाना २ या ९ या ११ में हो तो शीघ्र आवे विलोम का अर्थ उल्टी शक्ल जैसे ≣ की विलोम शक्ल ≡ है इसी प्रकार विलोम समझें यदि खाना ७ की शक्ल दाखिल हो और उसकी तकरार खाना २ या ९ या ११ में हो तो भी यह हुक्म लगावे यदि खाना ७ की शक्ल खाना ३ या ९ में हो तो गायब मार्ग में है आ रहा है।

(१९) अमुक व्यक्ति से साझे में काम करना चाहते हैं लाभ होगा या नहीं।

इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर तुला चालिन बिन्दु को देखें उसी के बलाबल से लग्न कायम करें यदि सातवाँ बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तथा आठवाँ बिन्दु खारिज में हो

तथा १ व २ विन्दु दाखिल में हो तो लाभदायक साझा होगा इसको उदाहरण से पृष्ठ १९७ व १९८ पर समझाया गया है।

(२०) अमुक व्यक्ति पर दावा करना चाहते हैं विजय होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि भगवान का स्मरण करके पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना ले फिर विन्दु चाल द्वारा जहाँ विन्दु विश्रान्ति पावे उसीके बलाबल को देखकर लग्न कायम करै—यदि प्रथम विन्दू मय अपने वर्तमान तथा भविष्य विन्दू बलवान हो तो प्रश्नकर्ता जीतेगा यदि लग्न से सप्तम विन्दूमय अपने वर्तमान तथा भविष्य विन्दू के बलवान होगा तो विपक्षी विजयी होगा—अन्य विधि लग्न से खाना १ ४ व ९ व ११ विन्दू तो वादी का है यानि जिसने दावा किया है तथा लग्न से खाना २-८-१२-१४ विन्दू प्रति वादी यानि विपक्षी के हो जिस ओर के विन्दू मय वर्तमान बिन्दू के बली होंगे वही विजय पायेगा। इसको उदाहरण सहित पृष्ठ १९८ व १९९ पर समझाया गया है उसी अनुसार रमलज्ञ अपने प्रस्तार से हुक्म लगावें।

(२१) इस झगड़े का परिणाम क्या होगा ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करैं यदि प्रथम तथा दूसरा विन्दू बलवान हो तथा चौथा और सातवाँ विन्दू निर्बल हो तो प्रश्नकर्ता विजय पावेगा यदि इसके विपरीत ४ व ७ विन्दू बलवान हो तथा प्रथम और दूसरा विन्दू कमजोर हो तो विपक्षी विजयी होगा इसका उदाहरण पृष्ठ २०० पर दिखाया गया है।

(२२) साझे दारी में फरीक लोग हमारे माफिक रहैंगे या खिलाफ हो जायेंगे। अथवा हमसे सुलह कर लेगें ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करैं यदि प्रथम विन्दू तथा उसका वर्तमान विन्दू तथा १३ वाँ बिन्दू तथा तेरहवें का वर्तमान बिन्दू यह प्रश्नकर्ता की ओर का है तथा सातवाँ और १४ वाँ विन्दूमय

बर्तमान बिन्दू यह विपक्षी के बिन्दु हैं यदि प्रश्नकर्ता के बिन्दुमय बर्तमान बिन्दू के बली हो तो प्रश्नकर्ता की विजय होगी यदि बिपक्षी के बली हो तो उसके माफिक फैसला होगा। अस्तु १-१२ बिन्दू प्रश्न कर्ता का है तथा ७-१४ बिपक्षी का है इसका उदाहरण पृष्ठ २०० व २०१ पर समझाया गया है।

(२३) मुकाबिला में कौन बली होगा मैं या मेरा बिपक्षी ?

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें। प्रथम बिन्दूमय बर्तमान बिन्दू प्रश्नकर्ता का है तथा १२ वाँ बिन्दूमय वर्तमान विपक्षी का बिन्दू है जिसके बिन्दू बलवान हो वही बलवान होगा उदाहरण २०१ पर दिया गया है।

(२४) अमुक मामिला में मैं शत्रु पर विजय पाऊँगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें—यदि प्रथम बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तथा सातवाँ और १२ वाँ बिन्दु बिपक्षी के बिन्दु हैं—यदि सातवाँ तथा १२ वाँ बिन्दु बलवान हो तो विपक्षी विजय पायेगा—यदि प्रथम बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु बली हुआ तो प्रश्नकर्ता की विजय होगी यदि दोनों बलवान हों या दोनों निर्बल हों तो सुलह हो जावेगी दूसरी विधि—प्रस्तार बनावे प्रथम घर तथा ७ वे घर को देखो जो बलवान हो वही विजयी होगा इसका उदाहरण पृष्ठ २०२ पर समझाया गया है।

(२५) अमुक अदालत में मेरी अपील या दावा बहाल होगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा छोड़कर अपना प्रस्तार बनालें फिर तुल्य चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करलें अब लग्न से चौथा बिन्दु लो यदि यह स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री है तथा उसका वर्तमान बिन्दु भी बली हो तथा सप्तम बिन्दु भी स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री हो और दाखिल या बाधित हो

में हो तो अपील बहाल होगी। हाकिम का पक्ष आपके माफिक रहेगा अन्य विधि प्रस्तार की खाना १ की घर को खाना ९ की घर से गुणा करो - फिर खाना ७ की शक्ल को खाना १० की शक्ल से गुणा करो— फिर गुणा खाना १ व ९ का हो तो वादी मुद्दई)के प्रति है तथा ७×१० की गुणाका फल प्रति वादी (मुद्दालेह) यानी विपक्षीका है—इन दोनों में जिस की शक्ल शुभ हो वही जीतेगा। यदि दोनों के गुणनफल शुभ हों तो सुलह हो जावेगी। तीसरी विधि—प्रस्तार में खाना १-२-३-४-९-१०-१३ के घर वादी के हैं तथा ५-६-७-८-११-१२-१४ यह विपक्षी के हैं जिस तरफ शुभ शक्लें अधिक हो या बिन्दु अधिक हो तो वह जीतेगा। बिन्दु चाल द्वारा उदाहरण २०१ पृष्ठ पर दिया गया है।

(२६) दो व्यक्ति लड़ रहे हैं कौन विजयी होगा ?

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें—अब प्रश्नकर्ता से पूछे आप नं० १ चाहते हैं या नं०२ की विजय चाहते हैं - अब प्रथम बिन्दु का बल सातवें बिन्दु से तुलना करें कौन बलवान है वही विजयी होगा इस का उदाहरण पृष्ठ २०३ व २०४ पर दिखाया गया है। उसी अनुसार अपने प्रस्तार से हुक्म लगावें।

(२७) हमने जो वकील किया है कैसा है ?

दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करे - फिर लग्न से दशम तथा ११ वें बिन्दु को देखें तथा दोनों के वर्तमान बिन्दु को भी देखें। यदि दोनों बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बली हों तो आपकी जीत होगी। यदि निर्बल हुये तो वकीलका मुकद्दमा हार जायेगा। इसका उदाहरण पृष्ठ २०४ तथा पृष्ठ २०५ पर दो सतरों में किया गया है। (अन्य विधि) प्रस्तार की खाना ११ की शक्ल को देखो यदि इसमें शक्ल ≐ या ÷ या ≡ या ÷ या ⊥ में से कोई शक्ल हो और खाना १ या ४ या १० या १४ में किसी जगह तकरार करै तो वकील काबिल है मुकद्दमा जितावेगा यदि इसके विपरीत हो तो हरावेगा।

आठवें घरों के प्रश्नों का विवरण

(१) यदि कोई पूँछे मुझे किसी ओर से भय तो नहीं है।

दैवज्ञको उचित है यदि कोई प्राणी इस प्रकारका प्रश्न करै तो भगवान का स्मरण कर पाँसा छोड़ कर अपना प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ बिश्रान्ति पावे उसी के बलाबलको देखकर अपनी लग्न कायम करै लग्नसे आठवें बिन्दू को देखो तथा उसके वर्तमान बिन्दूको भी देखो यदिदोनों बलवान स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हैं तो कोई भय नहीं है। इसके बिपरीत हो तो भय होगा —दूसरा तरीका-प्रस्तार की खाना ८ की शक्ल को देखो यदि यह शक्ल शुभ खारिज ≐ या ≡̇ है तथा खाना १२ में भी शक्ल किसी प्रकार से शुभ हो तो कोई भय नहीं होगा यदि खाना ८ की शक्ल शुभ दाखिल या शुभ साबित यानी ⩦ या ⁝ या ÷ या ⩧ या ≡ हो तथा खाना १ व १२ में उसी प्रकार की शक्ल होतो कोई भय न होगा यदि इस के बीपरीत हो तो भय होगा। यदि खाना ८ में शक्ल ⩦ हो तो भय है। बिन्दु चाल द्वारा इसका उदाहरण पृष्ठ २०५ पर दिखाया गया है।

(२) इस मुकद्में में किस प्रकार का भय है।

दैवज्ञ प्रस्तार बनालें यदि खाना ८ में शक्ल ⁝ या ÷ या ≑ या ⩧ या ≡ या ⩦ है तथा इसकी तकरार खाना १ या १५ में हो तो मारपीट का भय है यहाँ तक की रक्त की धार बहै। यदि ≡ या ≐ हो और खाना १५ में तकरार करै तथा खाना ८ में अशुभ शक्ल हो और तकरार खाना १ या २ या ३ या ४ में किसी घर में हो तो जान का भय है। यदि इसकी तकरार खाना १ या ४ या ७ या १० में हो तो किसी अंग पर चोट आवे यदि खाना ८ में शक्ल ⩦ हो और उसकी तकरार खाना ६ या १२ में हो तो माल का भय होवे। यदि खाना ८ में शक्ल ⩧ हो तो कम भय होवे यदि खाना १ में

अशुभ शक्ल हो और तकरार खाना १२ में हो तो कैद की नौबत आवे यदि खाना १ में शक्ल ፧ हो और तकरार खाना १२ में हो तो भी हवालात की नौबत होकर छुटै—विन्दू चाल से दैवज्ञ लग्न कायम कर ले फिर लग्न से आठवें विन्दू को देखें यदि प्रस्तार में स्वक्षेत्री हुआ तो प्रश्नकर्ताको शारीरिक भय हो यानी मार पीट हो जेल की नौबत भी आवे यदि आठवाँ विन्दू मित्र क्षेत्री है तो कोई भय न होगा यदि सम क्षेत्री है तो शत्रु से बराबरी रहेगी इसका उदाहरण पृष्ठ २०६ पर दिया गया है।

(३) मुझको किस प्रकार की वस्तुओं से भय है ?

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई प्राणी करै तो प्रस्तार बनाकर लग्न कायम कर लें फिर अष्टम विन्दू को देखें यदि लग्न से आठवाँ विन्दू अग्नि गृहमें है तो अग्नि की वस्तुओं से यदि वायु में बलवान हो तो ऊँचे कोठे या पेड़ आदि से भय हो यदि पृथ्वी में बलवान हो तो पृथ्वी के कीटाणु सर्प आदि से भय हो—प्रस्तार में खाना १-५-९-१३ अग्नि के घर हैं तथा २-६-१०-१४ वायु के घर हैं। इसका उदाहरण पृष्ठ २०५ व २०७ पर दिया गया है।

(४) मृत्यु का कारण क्या होगा ?

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करो फिर लग्न से आठवाँ विन्दू देखो जहाँ यह विन्दू बली हो उसी गृह से सम्बन्धित मृत्यु का कारण कहें। उदाहरण पृष्ठ २०७ से ज्ञात कर लें।

(५) मुझे शत्रु की ओर से चिन्ता या भय तो नहीं है ?

दैवज्ञ को चाहिये कि पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें फिर लग्न से छठा तथा आठवाँ विन्दू देखना चाहिये। यदि यह दोनों विन्दू जल या पृथ्वी में हो तो शत्रु भय है यदि अग्नि

या आयु में हो तो कोई भय नहीं है । इसका उदाहरण पृष्ठ २०८ पर दिया गया है ।

(६) अमुक व्यक्ति जीवित रहेगा या मरेगा ?

इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनाये फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल पर विचार कर लग्न कायम करलें— फिर लग्न से चौथा तथा आठवें बिन्दू पर दृष्टि डालें यदि चौथा बिन्दू बली हो और आठवाँ बिन्दू निर्बल हो तो जीवित रहेगा । यदि इस के वीपरीत चौथा बिन्दू कमजोर तथा आठवाँ बिन्दू बलवान हो तो मरेगा । यदि दोनों बिन्दू समान रहे तो रोग ग्रसित रहेगा— इस को उदाहरण सहित पृष्ठ २०८ से २०९ में समझाया गया है ।

(७) अमुक व्यक्ति की मृत्यु किस प्रकार होगी ?

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से आठवें बिन्दू को देखें । आठवाँ बिन्दू जिस गृह में बलवान हो उसी गृह से सम्बन्धित रोग मृत्यु का कारण बनैगा— इसका उदाहरण पृष्ठ २०९ पर समझाया गया है । उसी प्रकार रमलज्ञ अपने प्रस्तार से हुक्म लगाये ।

(८) मैं क़र्जा चुकता कर पाऊँगा या नहीं ?

इसी नियत से रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें—फिर लग्न से अष्टम बिन्दु को देखें यदि आठवाँ बिन्दु निर्बल होकर अग्नि या पृथ्वी में तकरार करै तो सरलता से ऋण चुक जायेगा । यदि समबली होकर जल या पृथ्वी में तकरार करै तो कठिनाई से कर्जा पटेगा । यदि बिन्दु आठवाँ बलवान होकर जल या पृथ्वी में हो तो कर्जा अदा नहीं कर पायेगा । इसका उदाहरण पृष्ठ २०९ व २१० पर है ।

(९) मैं कर्जा लेना चाहता हूँ मिलेगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करैं—यदि लग्न से दूसरा बिन्दु बलवान मय वर्तमान बिन्दु के हो और दूसरा बिन्दू दाखिल

घर में हो तथा आठवाँ विन्दू निर्बल हो और खारिज घर में हो तो कर्जा मिलेगा अन्यथा नहीं (दूसरी विधि) प्रस्तार बनाकर खाना २ की शक्ल को देखो। यदि उस में शुभ दाखिल शक्ल हो तो सरलता पूर्वक मिलेगा। यदि खारिज और साबित तथा अशुभ मुनकलिब हो तब भी यही हुक्म कहें। यदि शुभ शक्ल हो तो देर से मिले। यदि शक्ल ÷ खाना १ में और खाना २ या ८ में तकरार करै तो कर्जा मिलेगा और सरलता पूर्वक अदा भी हो जायेगा। यदि खाना २ में ≑ या ≡ या ÷ हो और खाना ६ या ८ में तकरार करै तो कर्जा मिलेगा पर अदा होने में लोहे के चने चाबने पड़ैंगे।

(१०) मैं कर्जा देना चाहता हूँ वापस मिलेगा या नहीं ?

रमलज्ञ को चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करे यदि लग्न से दूसरा या तीसरा विन्दु अग्नि या वायु में हो तथा आठवाँ विन्दु जल या पृथ्वी में हो तो कर्जा दिया वापस मिल जावेगा। विपरीत होने पर निराशा हो यदि व ३ विन्दू प्रस्तार में न हो तो भी कर्जा वापस मिलेगा—इसको उदाहरण सहित पृष्ठ २११ पर समझाया गया है। यदि दूसरा व तेरहवाँ विन्दु निर्बल हो या प्रस्तार में न हो और आठवाँ बिन्दू बलवान हो तो कर्जा दिया वापस मिलेगा—

(११) मेरी अमुक नष्ट वस्तु मिलेगी या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करै— यदि लग्न से आठवाँ विन्दु जल या पृथ्वी में हो तो नष्ट वस्तु मिल जाती है अन्यथा नहीं। कोई कोई आचार्य १ या २ या विन्दू से विचार करते हैं—शेष उदाहरण तथा शक्लों के शुभाशुभ द्वारा विस्तार पूर्वक पृष्ठ २१२ व २१३ पर लिखा गया है रमलज्ञ इसी अनुसार अपने प्रस्तार से हुक्म लगावें।

नवें गृह के प्रश्नों का विवरण

(१) यात्रा होगी या नहीं ?

यदि कोई इस प्रकार का प्रश्न करे तो दैवज्ञ को चाहिये कि भगवान का स्मरण कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें—इस यात्रा में दो बातों का ध्यान किया जाता है यदि कोई व्यक्ति जाकर उसी दिन सन्ध्या को लौट आवे तो केवल तीसरे घर के बिन्दू को देखना चाहिये जैसा हम तृतीय घर के विवर्ण में लिख आये हैं। यदि लम्बी यात्रा करना चाहता है तो लग्न से तीसरा सातवाँ तथा नवें बिन्दू को देखना चाहिये—यदि वह बिन्दू पुनरुक्त होकर अग्नि या वायु के घर में हों तो यात्रा होगी यदि जल या पृथ्वी के घरों में हो तो यात्रा न होगी इसका उदाहरण तो साफ तौर से पृष्ठ २१४ व २१५ पर दिया गया उसी को देखकर समझकर रमलज्ञ को इसी प्रकार अपने प्रस्तार से लग्न कायम करके तीसरे सातवें नवे बिन्दू के द्वारा हुक्म सुनाना चाहिये—दूसरा तरीका भी केवल प्रस्तार द्वारा जो दिया गया है उसी अनुसार भी हुक्म लगाना चाहिये।

(२) यदि कोई पूँछे मेरे लिये दूर की यात्रा लाभदायक होगी या निकट की ?

दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर लग्न कायम कर लें अब दैवज्ञ को प्रश्नकर्ता से समझ लेना चाहिये कि सन्ध्या तक वापस होगा या नहीं यदि निकट यात्रा का प्रश्न है तो लग्न से तीसरा बिन्दू लेना चाहिये—यदि तीसरा बिन्दु तथा उसका वर्तमान बिन्दु शुभ हो अर्थात् स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो तो यात्रा शुभ लाभदायक होगी यदि शत्रुक्षेत्री हो तो हानि होगी यदि उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री हो तो साधारण लाभ होगा इसी प्रकार लम्बी यात्रा में नवे बिन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये

तात्पर्य यह है यदि तीसरा बिन्दू बली हो तो निकट यात्रा लाभदायक होगी यदि नवम बिन्दू बलवान हो तो दूर की यात्रा लाभदायक होगी यदि दोनों बलवान हो तो प्रत्येक भाँति से निकट तथा लम्बी यात्रा लाभदायक होगी इसके विपरीत से हानिकारक होगी यात्रा न करना ही ठीक होगा इसका उदाहरण तो पृष्ठ २१५ व २१६ पर दिया गया है।

(३) अमुक स्थान को जाता हूँ लाभ होगा या नहीं या इसी जगह लाभ होगा ?

दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर बिन्दू के बलाबल को देख कर लग्न कायम कर लें फिर लग्न से चौथे तथा दसवें बिन्दू को देखना चाहिये यदि यह दोनों बिन्दू दाखिल या साबित घरों मे हों तो लाभ होगा यदि खारिज या मुनकलिब घरों में हों तो लाभ न होगा फिर दूसरे बिन्दू को भी देखना चाहिये यदि दूसरा बिन्दू खारिज या मुनकलिब ग्रह में हों तो लाभ होता है—यदि इसकी तकरार भी हो तो भी लाभ होता है। यदि चौथा बिन्दू बली हो तो उसी जगह लाभ होगा यदि दशम बिन्दू बली हो तो अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा यदि दोनों बलवान हो तो प्रत्येक भाँति से लाभ होगा इसका उदाहरण पृष्ठ २१६ व २१७ पर दिया गया।

(४) यदि व्यापार हेतु यात्रा करूँ तो लाभ होगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि भगवान का स्मरण कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाकर बिन्दू के बलाबल पर विचार कर लग्न कायम करै यदि लग्न से सातवाँ या नवाँ बिन्दू बलवान हो तो यात्रा से लाभ होगा यदि बिन्दू शत्रुक्षेत्र अथवा कमजोर हुआ तो यात्रा न करैं हानि उठानी पड़ेगी। इसका उदाहरण पृष्ठ २१७ तथा २१८ पर दिया गया है।

(५) मैं निकट की यात्रा करूँ या दूर की करूँ जिससे लाभ हो ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करैं फिर लग्न से

तीसरा गृह यदि बलवान हो तो निकट यात्रा से लाभ हो यदि लग्न से नवाँ विन्दु बलवान हुआ अर्थात नवाँ विन्दु स्वक्षेत्री अथवा मित्रक्षेत्री गृह में पड़ा है तो दूर की यात्रा से लाभ होगा यदि दोनों बलवान् हो तो चाहे निकट जाओ या दूर तुम्हारा भाग्य सानुकूल है सभी जगह लाभ होगा यदि विन्दु निर्बल है तो कहीं न जावें इसका उदाहरण पृष्ठ २१८ पर दिया गया है।

(६) यदि कोई पूँछे कि अपने ही देश में यात्रा करूँ या विदेश में यात्रा करूँ जहाँ लाभ हो।

प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से नवम विन्दु को देखें यदि नवाँ विन्दु पृथ्वी या जलके गृह में हो तो विदेश की यात्रा समुद्र पार करके यात्रा करेंगे तो लाभ दायक होगी यदि नवम विन्दु अग्नि या वायु के घर में हो तो अपने ही देश में यात्रा करें लाभ होगा— यदि व्यापार करने के विचार से यात्रा का विचार है तो यदि लग्न से प्रथम तथा ११ वाँ विन्दु जल या पृथ्वी में है तथा दूसरा विन्दु अग्नि या वायु का है या इन्हीं में पुनरुक्त हो तो लाभ होगा—

(७) रात्रि में जो स्वप्न देखा है शुभ है या अशुभ है ?

इस नियत से दैवज्ञ भगवान का स्मरण कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावें फिर तुला चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर जहाँ विश्रान्ति पावे उसके बलाबल को देखकर लग्न कायम करें—रात्रि के स्वप्न के लिये लग्न से नवम विन्दु को देखना चाहिये—यदि दिन में स्वप्न देखा हो तो लग्न से तीसरा विन्दु लेना चाहिये—यदि विन्दु बलवान है तो शुभ फल दायक है या निर्बल है अर्थात नवम विन्दु शत्रु क्षेत्री है तो अशुभ फल होगा यही तीसरे विन्दु का हाल समझें इसका उदाहरण तथा प्रस्तार की शक्लों द्वारा फल पृष्ठ २१६ व २२० पर दिया गया है।

(८) यात्रा करने जा रहा हूँ कितने समय में लौटूँगा ?

इसी नियम से प्रस्तार बनाकर खाना १० की शक्ल को देखें अब पृष्ठ २२१ पर जो अवधि चक्र दिया गया है उसी को देख समझकर हुक्म लगाना चाहिये ।

दशम भाव के (गृहों) का विवर्ण

(१) यह अधिकारी जो इस पद पर आया है कैसा ?

रमलज्ञ को चाहिये कि भगवान् का स्मरण करके पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर शक्लों के शुभाशुभ द्वारा तो केन्द्र के घरों पर यानी खाना १-४ व ७-१० ग्रहों को देखे फिर पृष्ठ २२१ पर तथा पृष्ठ २२२ पर जो विवर्ण विस्तार पूर्वक दिया गया है कई आचार्य्यों के मतों को लेकर समझाया गया- उसी अनुसार अपने प्रस्तार से दैवज्ञ को फलादेश कहना चाहिये तथा विन्दु चाल द्वारा इसका फलादेश निकालने का तरीका यहाँ है प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें विन्दु १ तथा ४ तथा ७ व १० विन्दू को देखें—खाना १ प्रश्न कर्ता का है चौथा विन्दू अधिकारी (हाकिम) का है—और सातवाँ विन्दू जिस स्थान का अधिकारी है वह चेत्र यानी हाकिम का चौथा विन्दु और सातवाँ विन्दू जो स्थान का माना गया है तथा दसवाँ विन्दू जिसके आश्रय से वह हुकूमत करता है उस स्थान की स्थिति—यदि लग्न से चारों विन्दु बलवान हो तो हाकिम जो आया है उत्तम प्रकृति का है। चिरकाल तक रहकर सुख शान्ति से जीवन व्यतीत करें तथा प्रजा भी सुखी रहे इसी प्रकार दैवज्ञ अपनी बुद्धी के अनुसार हुक्म लगावें यदि कुछ विन्दू बलवान हो तथा कुछ विन्दू कमजोर हो तो जिस स्थान का विन्दू कमजोर हो उसी अनुसार हुक्म लगाना चाहिये इसका उदाहरण तो विस्तार पूर्वक पृष्ठ २२१ तथा पृष्ठ २२२ पर समझाया गया है।

दैवज्ञ को चाहिये उसी अनुसार अपने प्रस्तार से लग्न कायम करके केन्द्रों के बलाबल को ध्यान कर हुक्म लगावे।

(२) यह हाकिम जो इस समय पदच्युत (तनज्जुल) हो गया है फिर बहाल होगा या नहीं ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करें तो प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें लग्न अथवा प्रथम विन्दु तो भाग्य का है चौथा विन्दु स्थान का होता है ११ वाँ विन्दु लाभ का तथा पद का होता है यदि प्रथम तथा चौथा विन्दु बलवान हो और दशम विन्दु दाखिल या साबित गृहमें हो तो हाकिम बहाल हो जावेगा इसका उदाहरण तो पृष्ठ २२४ से २२५ तक दिया गया है रमलज्ञ उसी की सहायता से अपने प्रस्तार से फल देश कहै।

(३) इस हाकिम (अधिकारी) को मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करै फिर प्रथम बिन्दू यानी लग्न तथा दशम बिन्दू को मय वर्तमान बिन्दू के बलाबल से हुक्म लगावें तथा लग्न तथा दशम बिन्दू के भविष्य बिन्दू के बलाबल से हुक्म लगावे। उदाहरण २२५ से समझ कर अपने प्रस्तार से फल कहैं।

(४) यह अधिकारी मुझ पर कृपा करेगा या नहीं ?

इसी नियत से भगवान का स्मरण कर प्रस्तार बनाकर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें तथा प्रथम व दशम बिन्दू को देखें यदि दोनों बिन्दू बलवान हों तो कृपा करेगा यदि निर्बल हों तो कृपा की आशा न करै यदि १ बिन्दू बली हो तथा वर्तमान बिन्दू भी बलवान हो और दशम बिन्दू निर्बल हो तो साधारण कृपा रक्खेगा। इसी प्रकार अपनी बुद्धि से फलादेश कहैं इसका उदाहरण तो पृष्ठ २२६ पर दिया गया है उसी अनुसार अपने

प्रस्तार से अपनी बुद्धि के अनुसार प्रथम तथा दशम बिन्दू के बलाबल से हुक्म लगावें।

(५) हाकिम के पास जो अर्जी दिया है उसको स्वीकार करेगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि भगवान का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी बिन्दू के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें – फिर लग्न से प्रथम तथा १० तथा ११ वें बिन्दूको देखना चाहिये तथा उनके वर्तमान बिन्दू तथा भविष्य बिन्दू के बलाबल को देखकर अपनी बुद्धि के अनुसार अपने प्रस्तार से हुक्म लगाना चाहिये—यदि तीनों बिन्दू बली हों तो लाभ के साथ कामना पूरी होगी यदि ११ वाँ बिन्दू निर्बल हुआ तो कोई अन्य काम मिलेगा यदि दशम बिन्दू निर्बल हुआ तो आपकी दरख्वास्त मंजूर न होगी यदि लग्न भी निर्बल हो तो निराशा होगी इसका उदाहरण पृष्ठ २२७ पर दिया गया है।

(६) यदि कोई पूँछे नौकरी मिलेगी या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करें फिर लग्न से प्रथम तथा दूसरा और छठा तथा दशम बिन्दू सभी बली हो तो नौकरी मिलेगी यदि प्रथम बिन्दू कमजोर हो तो भाग्य खोटा है अस्तु लग्न बिन्दू में जो शक्ल हो उस शक्लका स्वामी जो ग्रह हो उसी ग्रहकी शान्ती करायें तभी भाग्य का सितारा चमकेगा। यदि दूसरा बिन्दू कमजोर हुआ तो नौकरी तो मिल जायेगी मगर धन लाभ न होगा यदि छठा बिन्दू निर्बल हुआ तो नौकरी तो मिल जायेगी मगर कुछ दिन बाद ऐसे कारण आयें जो नौकरी छूट जावेगी। यदि दशम बिन्दू कमजोर हुआ तो नौकरी न मिलेगी—इसका उदाहरण पृष्ठ २२८ पर दिया गया है। उसी से समझकर अपने प्रस्तार से हुक्म लगावे।

प्रस्तार से भी खाना १-२-६-१० घरों की शक्लों से हुक्म लगाया जा सकता है।

(७) मुझे किस काम से लाभ होगा ?

इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम कर लें फिर सोपान चक्र को सामने रखकर लग्न से केवल दशम बिन्दु को देखें यदि दशम बिन्दु प्रस्तार में जल या पृथ्वी के घर में हो तो खेती पाती यानी किसानी का काम करने पर लाभ होगा यदि दशम बिन्दू के घर वायु में हो तो व्यापार करने से लाभ होगा यदि दशम बिन्दू अग्नि घर की शकल में हो तो नौकरी करने से जीविका चलेगी। इसका उदाहरण पृष्ठ २२६ पर दिया गया है।

(८) हमको इसी मालिक के पास लाभ होगा या दूसरे के पास अथवा जो नौकरी के लिए बुलाता है वह प्राप्त होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करे। इसमें दशम बिन्दु तो मौजूदा नौकरी का है यानी जहाँ पर काम आप कर रहे हैं तथा १४वाँ बिन्दु दूसरी जगह अथवा बुलाने वाले का है। जो बिन्दु अपने वर्तमान तथा भविष्य बिन्दु के सहित बलवान होगा उसी जगह लाभ होगा। अस्तु दैवज्ञ को चाहिये दसवें तथा चौदहवें बिन्दु के बलाबल से अपने प्रस्तार से हुक्म लगावे। इसका उदाहरण पृष्ठ २३० पर दिया गया है।

(९) यदि कोई पूँछे किस प्रकार लाभ होगा ?

दैवज्ञ प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करे—लग्न से वर्तमान या दूसरे बिन्दु को देखना चाहिये कि वह शकल दूसरी जगह कहाँ पुनरुक्त है यानी उस शकल की तकरार कहाँ है ? यदि दशम में तकरार हो तो इमानदारी तथा परिश्रम से यदि सातवें घर में तकरार हो तो कुकर्म चोरी आदि से। यदि छठे घर में तकरार करै तो जालसाजी से धोखा देकर, यदि पाँच में तकरार करै तो व्यभिचार या सन्तान के आसरे से यदि ९ में तकरार करै तो धार्मिक कर्मों से लाभ होवे यदि १२ में तकरार हो तो मालिक के शत्रु से लाभ हो। इसी प्रकार जो गृह जिस वस्तु से संबन्धित है उसी से लाभ बताना चाहिये।

(१०) अमुक स्वामी ने हमको किस काम के लिए नौकर रक्खा है।

इसी नियत से प्रस्तार बनालें फिर लग्न से दसवें बिन्दू को देखें। उसी पुनरुक्त खाना ६ के प्रश्न की प्रणाली के अनुसार दैवज्ञ को हुक्म लगाना चाहिये। स्वल्प कार्य के लिये अधिक योग्य व्यक्ति रख लिया जाता है तभी यह प्रश्न होता है।

(११) मुझे इस कार्य में जो जीविका के लिये आरम्भ किया है लाभ होगा या नहीं?

रमलज्ञ को चाहिये कि भगवान का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना लें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसीके बलाबल को देखकर लग्न कायम करें-फिर लग्न तथा दशम बिन्दूको देखें यदि वह बिन्दु जल या पृथ्वी में हो तो सफलता मिलेगी यदि अग्नि या वायु के घर में हो तो सफलता की आशा न करें—साथ ही प्रथम तथा दशम बिन्दु के वर्तमान बिन्दू के बलाबल को भी देखकर हुक्म लगाना चाहिये इसका उदाहरण पृष्ठ २३१ पर दिया गया है। दैवज्ञको चाहिये उसी अनुसार अपने बनाये हुए प्रस्तार से हुक्म लगावे।

(१२) इस समय जो कार्य कर रहा हूँ उसमें सफलता मिलेगी या नहीं?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से भगवान इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावें उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें—फिर लग्न से १ तथा १० और १४ वें बिन्दू के बलाबल को देखकर फलादेश कहना चाहिये तथा तीनों बिन्दूओं के वर्तमान बिन्दू के बलाबल को भी देखना चाहिये—इसका उदाहरण तो पृष्ठ २३१ व २३२ पर दिया गया है। दैवज्ञको चाहिये उसी को पढ़कर समझकर अपने प्रस्तार से लग्न कायम करके १-१०-१४ बिन्दु के बलाबल से हुक्म लगावे वर्तमान बिन्दु भी देखलें।

(१३) मेरे स्वामी का मेरे प्रति व्यवहार स्नेह पूर्वक रहेगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान धरकर, पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करलें—फिर प्रथम गृह अथवा लग्न तथा दसवें घर की शकल दोनों में से किसकी तकरा (पुनरुक्त) कहाँ हुई है तथा दृष्टि उस पर कैसो पड़ती है—उसी प्रकार का उत्तर दैवज्ञ को देना चाहिये। इसका उदाहरण पृष्ठ २३२-२३३ पर दिया गया है दोनों प्रकार के उदाहरण को समझकर दैवज्ञ को अपने ही प्रस्तार से लग्न तथा दशमा बिन्दू के बलाबल से ऊपर लिखे हुए नियम के अनुसार हुक्म लगाना चाहिये।

(१४) अमुक कार्य के करने पर लाभ होगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये अपने इष्टदेव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी बिन्दू के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लेना चाहिये। फिर लग्न बिन्दू तथा लग्न का वर्तमान बिन्दू तथा दशम बिन्दू तथा दशम बिन्दू का वर्तमान बिन्दू यदि सभी बिन्दू बलवान हों तो लाभ होगा—यदि दोनों निर्बल हो तो हानि होगी यदि प्रथम बिन्दूमय वर्तमान के बलवान हों तथा दशम कमजोर हो तो प्रश्नकर्ता का भाग्य तो अच्छा है पर लाभ की आशा कम है यदि दशम बिन्दूमय वर्तमान बिन्दू के बली हों तो लाभ होगा—दैवज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार हुक्म लगाना चाहिये। इसका उदाहरण २३३ पृष्ठ पर दिया गया है।

(१५) मेरा यह कार्य चलता रहेगा या रुक जावेगा ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव भगवान का स्मरण करके पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर ले। फिर लग्न तथा दशम बिन्दू के बलाबल को देखकर हुक्म लगाना चाहिये तथा लग्न

तथा दशम बिन्दू के वर्तमान विन्दू तथा भविष्य बिन्दू के बलाबल को भी देखकर तभी हुक्म सुनाना चाहिये इस प्रश्न का उदाहरण तो पृष्ठ २३४ पर विस्तार रूप से समझाया गया है दैवज्ञ को चाहिये उसी को समझकर अपने प्रस्तार से फल कहें।

(१६) मेरे सेवा काल में मेरे मालिक की स्थिती कैसी रहेगी ?

दैवज्ञको चाहिये इसी नियत से अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाकरे लग्न कायम कर लें फिर लग्न तथा दशम बिन्दू की शकल यदि बलवान होकर खाना ५ या ११ या १५ में तकरार करे तो स्थिति अच्छी रहेगी यदि लग्न विन्दू मय वर्तमान विन्दू के कमजोर हो और दशम विन्दू का भविष्य तथा वर्तमान विन्दू बलवान हो तो स्थिती अच्छी रहेगी दैवज्ञ को अपनी बुद्धी के अनुसार विन्दूओं के बलाबल को देखकर तब हुक्म लगाना चाहिये।

(१७) अपने स्वामी को दरख्वास्त दूँ या नहीं ? जवाब देगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्ट देव भगवान का ध्यान धरकर पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बना ले फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें। फिर दशम विन्दू के बलाबल को देखें तथा दशम विन्दू के वर्तमान तथा भविष्य विन्दू को भी देखें यदि सभी बलवान् हों तो सन्तोष जनक जवाब मिलेगा मगर प्रथम विन्दू के वर्तमान विन्दू दोनों को भी देखना चाहिये प्रथम अपने भाग्य की तो जाँच करलें फिर दशम विन्दू के बलाबल को देखकर हुक्म लगावें।

प्रस्तार के दसवें घर से भी फल कहा गया है जो पृष्ठ २३५ पर दर्ज है उसी को देखकर अपने प्रस्तार से फल कहें।

(१८) मुझे माता से लाभ होगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—फिर तुला चालित विन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करलें यदि लग्न मय वर्तमान विन्दू से बलवान हो तथा दशम विन्दू अग्नि या वायु का हो अथवा अग्नि या वायु में तकरार करै तथा खाना १५ और १६ घर की शक्ल बली हो यानी शुभ दाखिल हो तो लाभ रहेगा अन्यथा नहीं – इसका उदाहरण पृष्ठ २३५ व २२६ पर दिया गया है तथा अन्य विधि शक्लों के शुभाशुभ से भी दिया गया है दैवज्ञ को चाहिये उसको भी देखकर फिर अपनी बुद्धी के अनुसार अपने प्रस्तार से फल कहै।

(१९) क्या वर्षा होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये इसी नियत से प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करै फिर लग्न से दशम विन्दू जो बरसात का है यदि खाना १० में पृथ्वी की शकल हो तथा वायु और अग्नि की शकल कमजोर हो तथा जल और पृथ्वी की शकल बली हो तो वृष्टि होगी अन्यथा नहीं। चूँकि दशम विन्दू आकाश से पानी गिराता है यदि दशम विन्दु की शकल तकरार करे और खाना ४ या ८ या १२ या १६ में हो तो जल वृष्टि हो यदि दशम बिन्दु खाना १ या ५ या ९ या १३ में हो तो वृष्टि न होगी यदि दशम विन्दु खाना २ या ६ या १० या १४ घरों में से किसी में हुआ तो मेघ जो उठा है वायु के वेग से उड़ जावेगा यदि दशम विन्दु ३ या ७ या ११ या १५ में से किसी एक में पड़ा तो भी वर्षा होगी इसका उदाहरण पृष्ठ २३६ पर दिया गया है।

ग्यारहवें घर का विवर्ण

(१) प्रश्न मित्रों से आशा पूरी होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि अपने इष्ट देवता भगवान का ध्यान धरकर गायत्री मंत्रको पढ़ करके पूर्ण श्रद्धा के साथ पाँसा छोड़कर

प्रस्तार बनावें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को विचार पूर्वक लग्न कायम कर लें।

प्रथम प्रस्तार की ग्यारहवें घर की शक्ल को देखें यदि खाना ११ में शुभ दाखिल शक्ल हों तो मित्रों द्वारा आशा पूरी होगी—यदि खाना ११ की शक्ल खाना १ में तकरार करे अथवा खाना ३ या ५ या ६ में तकरार करै तो आशा पूरी होगी इसी सूरत में यदि खाना ७ या ८ या १२ में अशुभ शकल हो तो आशा पूरी न हो वरना मित्रों से द्वेष बढ़े—यदि खाना १ की शकल शुभ दाखिल हो और खाना १५ में तकरार करे तो आशा पूर्ण होवे बर्ताव मित्रों का शुभ फलदायक हो इसी प्रकार कई प्रकार की विधियाँ पृष्ठ २३७ पर लिखी गई हैं।

बिन्दु चाल द्वारा आचार्य मुर्खांव ने लिखा है यदि लग्न तथा दशम बिन्दु बलवान हो और तकरार (पुनरुक्त) खाना ३ या ५ या ९ में हो तो मित्रों द्वारा आशा पूरी हो। इसके विपरीति से निराशा हो दैवज्ञ अपने प्रस्तार से अपनी बुद्धी के अनुसार हुक्म लगावे।

(२) अमुक व्यक्ति मुझसे मित्रता रखता है या दिखावा है ?

इसी नियत से दैवज्ञ अपने इष्ट देव को ध्यान देकर पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बना लें फिर बिन्दु चाल से लग्न कायम कर लें—फिर लग्न तथा ११ बिन्दु के बलाबल से हुक्म लगावें तथा वर्तमान बिन्दु को भी देखें यदि दोनों बिन्दुमय वर्तमान बिन्दू से बलवान हो तो सच्ची मित्रता रखता है। यदि विपरीत बिन्दू हों तो उसकी मित्रता पर भरोसा न करें। तात्पर्य यह है। १ व ११ के जिस प्रकार के बिन्दू हों उसी के अनुसार मित्रता तथा शत्रुता का निर्णय देवें। इसका उदाहरण पृष्ठ ३९ पर दिया गया है।

(३) मेरी और उसकी मैत्री में विरोध प्रथम किस ओर से होगा ?

दैवज्ञ को चाहिए कि अपने इष्ट देव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़ कर प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे

उसके बलाबल को देखकर लग्न कायम कर लें—प्रथम प्रस्तार की शक्ल खाना १ व ११ को देखें—यदि खाना १ में शुभ दाखिल और सातवाँ गृह किसी प्रकार से खारिज है चाहे अशुभ खारिज हो या शुभ खारिज हो तो प्रथम प्रश्न कर्ता की ओर से द्वेष बढ़े यदि विपरीत हो तो उसी प्रकार अपनी बुद्धी के अनुसार उल्टा जवाब दो कि प्रथम विपक्षी की ओर ने द्वेष होगा—बिन्दु चाल द्वारा लग्न से १ व ११ बिन्दु को ले यदि प्रथम बिन्दु बलवान हो तथा वर्तमान भी बलवान् हो तो प्रथम विपक्षी की ओर से द्वेष बढ़ेगा यदि ११ वाँ बिन्दु मय वर्तमान बिन्दु के बलवान हो तो प्रथम प्रश्न कर्ता की ओर से द्वेष बढ़े यदि १ व ११ दोनों बिन्दु बलवान हो तो दोनों में मित्रता बनी रहेगी—इसका उदाहरण २३६ व २४० पर दिया गया है।

(४) अमुक व्यक्ति मेरा कैसा है ?

दैवज्ञ को चाहिये प्रस्तार बनालें फिर खाना १ व ११ को देखो यदि दोनों शुभ हो—और खाना ७ की शक्ल अग्नि की हो तो केवल प्रश्नकर्ता के स्वार्थ पर मित्र सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहें यदि खाना ७ की शक्ल वायु की हो तो मित्र का सर्वथा शुभचिन्तक हो शेष पृष्ठ २४० से ज्ञात करें।

(५) किसी कामना से अमुक मित्र के पास जाता हूँ काम बनेगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि भगवान् का ध्यान कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें। फिर तुला चालित बिन्दू द्वारा लग्न कायम करें - फिर लग्न से १ व १३ बिन्दू तो प्रश्न कर्ता का है तथा ११ वाँ बिन्दु मित्रता का है और १४ वाँ बिन्दु आशा पूर्ति का है अस्तु यदि ११ व १४ वाँ बिन्दू बली हो और १ व १३ की दृष्टि शुभ हो तो कामना पूरी होगी—एक इरानी आचार्य का मत है बिन्दू १३ प्रश्न कर्ता का है तथा बिन्दू १४ मित्र का।

है यदि दोनों शुभ हो तथा बिन्दू ८ व १० भी बलवान हो तो काम बनेगा—विपरीति से नहीं।

(६) अमुक व्यक्ति और मेरे बीच में विरोध अथवा वियोग होगा या नहीं ?

इसका आशय यह है मेरा जिस व्यक्ति से मन मुटाव (द्वेष) होकर वियोग होगा या नहीं ? दैवज्ञ भगवान् का ध्यान धरकर पाँसा डालकर प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करलें—फिर लग्न से ४ व ७ व ११ व १६ बिन्दू को देखें यदि चारों बिन्दू वर्तमान बिन्दू सहित के बलवान हो वियोग न होगा बल्कि परस्पर दोनों में प्रेम बना रहेगा विपरीति से उल्टा हुक्म लगावें। इसी प्रकार रमलज्ञ अन्य प्रश्नों को भी इसी प्रकार अपने अनुभव से फल कहे। निजी अनुभव पृष्ठ २४३ से जान कर हुक्म अपने प्रस्तार से कहें।

(७) अमुक व्यक्ति से आशा पूर्ण होगी या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि अपने इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी बिन्दू के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें। प्रथम प्रस्तार के १-९-१०-११ घरों की शक्लों के अनुसा जैसा पृष्ठ २४३ व २४४ पर लिखा गया है उसी के अनुसार अपने प्रस्तार से दैवज्ञ हुक्म लगावे—अब बिन्दू चाल द्वारा लग्न कायम करे फिर लग्न से १-९-१०-११ बिन्दू को देखे यदि सभी बिन्दू बलवान् हो तथा इनकी तकरार खाना ३ या ४ या ५ या ९ या ११ या १५ में से किसी भी गृह में हो यदि बिन्दु की तकरार न हो तो बिन्दू वर्तमान के पुनरुक्त पर आधी आशा पूर्ति मानी जाती है। इसका उदाहरण पृष्ठ २४४ पर दिया है।

बारहवें घर के प्रश्नों का विवर्ण

(१) मेरे कितने शत्रु हैं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि अपने इष्टदेव का ध्यान धरकर गायत्री का

मंत्र पढ़कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनाले फिर तुला चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसके बलाबल को देखकर अपनी बुद्धि से लग्न कायम करैं फिर लग्न बिन्दु से बारहवें विन्दु का विचार करैं कि वह विन्दु गुप्त रूप से है या प्रकट रूप से है यदि गुप्त हो तो गुप्त शत्रु और यदि प्रकट रुप से है तो प्रकट शत्रु बताना चाहिये यदि गुप्त भी हो और प्रकट भी हो तो दोनों बताना चाहिये दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर प्रस्तार का गुप्तोद्घाटन भी साथ ही लेना चाहिये गुप्तोद्घाटन का तरीका पहले लिखा जा चुका है यानी प्रथम अवदह क्रम से १६ शक्लैं रक्खे जैसे ≐ ≟ ≑ ≣ ∸ ⊥ ≣ ÷ ÷ ÷ ⩨ ⁝ ⩨ ⁝ ≡ अब क्रमशः नम्बर बार प्रस्तार के खाना १ को अवदह क्रम की प्रथम शक्ल से गुणा करके अलग रखते जावे इसी प्रकार खाना २ की शक्ल को अवदह क्रम खाना २ की शकल ≟ से गुणा करके दूसरी शक्ल बनाले इसी प्रकार १६ शक्लैं गुप्त की बनाले इस प्रश्न का गुप्तोद्घाटन पृष्ट २४५ पर बनाकर दिखाया गया है।

यदि किसी प्रकार से बारहवाँ विन्दु प्रस्तार में न हो तो प्रश्न कर्ता का अज्ञात शत्रु ही होता है। कितने शत्रु हैं इसका हल पृष्ठ २४६ पर सात सतर से आगे ६ सतरों में लिखा जा चुका है।

(२) हमारा शशु मिटेगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि प्रस्तार बनाकर लग्न कायम करलें—प्रथम प्रस्तार ही से फल कहैं। यदि प्रस्तार में खाना १२ की शक्ल अशुभ खारिज हो और खाना ६ की शक्ल भी किसी प्रकार से अशुभ हो तो शत्रु स्वयं मिट जावे। प्रश्न कर्ता को कुछ हानि भी न पहुँचा सकेगा यदि खाना १२ में शक्ल शुभ दाखिल हो तथा खाना ६ में भी शकल किसी प्रकार से शुभ हो तो शशु जोर पकड़े तथा हानि पहुँचाये इसके आगे विस्तार पूर्वक सुझाव पृष्ठ २४७ पर दिया गया है दैवज्ञ उसी अनुसार अपने प्रस्तार प्रश्न कर्ता को फल कहै।

अब बिन्दू चाल द्वारा दैवज्ञ को हुक्म इस प्रकार लगाना चाहिये। यदि लग्न से छठा और बारहवाँ बिन्दू निर्बल हो तो शत्रु मिट जावेगा यदि दोनों बिन्दू ६ व १२ बलवान हो तो न मिटेगा—इस के बीपरीत फल दैवज्ञ अपनी बुद्धि के अनुसार फल कहे। यानी भविष्य में शत्रु बल नष्ट हो जावे अब देखना है कि शत्रु किस कारण से शत्रुता कर रहा है इस को उदाहरण सहित पृष्ठ २४८ पर चौथी सतर से किया गया है। दैवज्ञ उसीको समझ कर अपने प्रस्तार से बुद्धी के अनुसार फल कहें।

(३) मेरे शत्रुओं का तथा इनकी की हुई शत्रुता का परिणाम क्या होगा ?

इस प्रकार के प्रश्न में दैवज्ञ अपने इष्टदेव का ध्यान धरकर गायत्री मंत्र पढ़कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनावे—फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें। फिर लग्न से १३-१४-१०-१६ बिन्दूओं के बलाबल से हुक्म लगावें तथा सभी के वर्तमान बिन्दूओं के बलाबल को देखना चाहिये। इस का उदाहरण तो पृष्ठ २४९ पर दिया गया है दैवज्ञ को चाहिये कि उदाहरण को समझ कर अपने प्रस्तार से लग्न बिन्दू से १३, १४, १५, १६ बिन्दू के बलाबल से हुक्म लगावें।

केवल प्रस्तार से शकुन क्रम द्वारा जो समझाया गया है दैवज्ञ को चाहिये पृष्ठ २४८ को पढ़कर अपने प्रस्तार से बुद्धि अनुसार हुक्म लगावें।

(४) अमुक अपराधी पकड़ा जावेगा या नहीं ?

यदि कोई प्राणी इस प्रकार का प्रश्न करै तो भगवान का स्मरण कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करै—फिर लग्न बिंदू से १२ वाँ बिन्दू वर्तमान बिन्दू सहित बलवान हो तो सरलता पूर्वक

गिरफ्तार हो जायेगा यदि मध्यम बली हो तो कठिनता से पकड़ा जावेगा यदि निर्बल हो तो अपराधी छुट जावेगा। इसका उदाहरण पृष्ठ २५० पर दिया गया है। शकुन क्रम से विचार पृष्ठ २४९ से ज्ञात करें।

(५) अमुक व्यक्ति को कैद से छुटकारा मिलेगा या नहीं ?

दैवज्ञ को चाहिये कि अपने इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—फिर तुला चालित बिन्दू जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर अपनी बुद्धि से लग्न कायम करें--फिर देखें यदि लग्न बिन्दू से ११ वाँ बिन्दू बली हो तथा १२ वाँ बिन्दू खारिज या मुनकलिब घर में हो तो छूट जावेगा। यदि दाखिल या साबित शक्लकी घर में बिन्दू पहुँचा तो अपराधी सजा पायेगा या जेल ही में मर जायेगा। कोई कोई आचार्य का मत है यदि लग्न से ६ व ११ व १६ बल्वान हो और खारिज घरों में हो तो छूट जावेगा–कोई १-४-६-८-१२ बिन्दु के बलाबल से हुक्म लगाता है मगर हमारा अनुभव ११-१२ बिन्दु का ठीक बैठता है शेष शकुन क्रम द्वारा विस्तार पूर्वक वर्णन पृष्ठ २५१ पर दिया गया है।

शकुन क्रम से प्रस्तार की खाना १ की शकल को खाना ८ की शकल गुणा करै फिर प्रस्तार की खाना ६ व १२ की शकल को आपसमें गुणा करै फिर दोनों गुणनफल की शकलों को फिर परस्पर गुणा करके एक शकल बनावें यदि हासिल शकल दाखिल शुभ हो तो न छूटे यदि अशुभ दाखिल हो तो हलकी सजा पावे यदि शुभ खारिज हो तो छूट जावे यदि अशुभ खारिज हो तो कुछ लाँछनक साथ छूटै।

(६) बडे पशु (गाय भैंस घोड़ा ऊँट) की खरीद तथा बेचने से कैसा रहेगा।

दैवज्ञ को चाहिये अपने इष्टदेव का ध्यान करके पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें—फिर तुला चालित बिन्दु द्वारा लग्न काय करें।

फिर लग्न से बारहवें बिन्दु को देखें यदि १२ वाँ बिन्दु दाखिल या साबित के घर में होगा तो खरीदने से लाभ होगा। यदि १२ वाँ बिन्दु खारिज या मुनकलिब घर में होगा तो बेचने से लाभ होगा— खारिज घर १-५-९-१३ है मुनकलिब घर २-६-१०-१४ है दाखिल ३-७-११-१५ है साबित घर ४-८-१२-१६ है। इसका उदाहरण पृष्ठ २५३ पर दिया गया है शकुन क्रम का तरीक पृष्ठ २५२ से समझें।

(७) यह पशु गुण वाला है या दोषी है लाभदायक होगा या नहीं?

दैवज्ञ को चाहिये अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना लें फिर तुला चालित बिन्दु द्वारा लग्न कायम करें। प्रथम शकुन क्रम द्वारा प्रस्तार की खाना १२ की शकल को देखें यदि उसमें शकल शुभ दाखिल या शुभ साबित है और उसकी तकरार (पुनरुक्त) खाना १ या ५ या ११ या १५ में हो तो पशु गुण वाला तथा शुभ फल दायक होगा यदि खाना १२ में अशुभ शकल हो और उसकी तकरार खाना ६ या ८ में हो तो अशुभ है अथवा खाना ६ की शकल को खाना १२ की शकल से गुणा करो यदि हासिल शकल ≡ या ⋮ या ÷ हो तो दोषी होगा मत खरीदो हानि उठा जाओगे यदि ÷ या ⋮ हो तो लाभ न होगा। यदि शुभ दाखिल ÷ या ÷ या ≡ हो तो गुण वाला लाभदायक होगा बिन्दु चाल से यदि १२ वाँ बिन्दु अशुभ हो तो पशु दोषी है यदि शुभ है तो गुणवाला होगा इसका उदाहरण पृष्ठ २४९ पर दिया गया है।

(८) मुझे पशु मिलेगा या नहीं?

दैवज्ञ को चाहिये अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बनालें फिर तुला चालित बिन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी के बलाबल को देखकर लग्न कायम करें—फिर लग्न से छठे तथा आठवें बिन्दु को देखें यदि बिन्दु बली है तो मिलेगा यदि बिन्दु निर्बल है यानी शत्रु क्षेत्र में पड़ गया तो न मिलेगा।

(६) मुझको पशु से लाभ होगा या नहीं ?

यहाँ पशु की खरीद तथा बेचने से लाभ की आशा से प्रश्नकर्ता पूँछ रहा है इसी नियत से दैवज्ञ इष्टदेव का ध्यान धरकर पाँसा छोड़ कर पाँसा बनालें फिर बिन्दु चाल द्वारा लग्न कायम करें फिर लग्न से बारहवें बिन्दु को देखें यदि बारहवाँ बिन्दु बलवान है तथा वह पुनरुक्त खाना ५ या ६ या ११ में है तो पशु को रखने से लाभ होगा यदि खाना २ में पुनरुक्त हो तो फरोख्त (बेचने) से लाभ होगा यदि १२ वाँ बिन्दु कमजोर है और उसकी तकरार खाना ६ या ८ में है तो हानि उठानी पड़ेगी इसका उदाहरण पृष्ठ २५४ व २५५ पर दिया गया है ।

(१०) मेरा पशु (गाय भैंस बैल घोड़ा आदि) चोरी गया है ? मिलेगा या नहीं तथा किस तरफ गया है ?

दैवज्ञ को चाहिये बड़ी सावधानी से भगवानका ध्यान धरकर पाँसा छोड़कर प्रस्तार बना लें यदि खाना १२ में शक्ल खारिज ≐ या ∸ या ≑ या ⋮ हो तो पशु चला गया है । आवारा (छुट्टा) घूम रहा है यदि अशुभ खारिज यानी ∸ या ⋮ हो तो चोरी गया है यदि खाना २ की शक्ल दाखिल हो और खाना ८ की शक्ल खारिज हो तो मिलेगा यदि इसके विपरीत हो तो न मिलेगा ।

खांना १२ की शक्ल जिस दिशा से सम्बन्ध रखती हो उसी दिशा में पशु जाने की दिशा कह दो । यदि ≡ या ∸ या ⋮ या ≐ हो तो पूर्व तरफ गया है यदि ⋮ या ≡ या ⋮ या ÷ है तो पश्चिम तरफ गया है यदि ≡ या ⁚ या ÷ या ≡ हो तो दक्खिन तरफ गया है । यदि ⁞ या ≡ या ÷ या ÷ हो तो उत्तर तरफ गया है ।

यदि खाना १२ में शुभ साबित या शुभ खारिज हो तो निकट ही मिलेगा । यदि ≡ हो तो पशु बँधा हुआ या काँजीहौस में है यदि

शुभ मुनकलिब नहीं हो तो पशु छुटा है खुद चला गया है तलाश करने से मिल जायेगा। यदि अशुभ मुनकलिब हो तो चोरी गया है यदि खाना १२ में शक्ल पूर्व तरफ वाली हो तो पूर्व तरफ गया है यदि ÷ खाना ६ में हो तो किसी के द्वारा घर आ जावेगा बिन्दु चाल द्वारा लग्न से १२ वाँ बिन्दु देखो यदि बिन्दु खारिज शक्ल में है तो पूर्व तरफ यदि उपरोक्त शक्लों में है तो उसी अनुसार दिशा बताओ।

मूक प्रश्न निकालने का तरीका

पृष्ठ २५६–२५७–२५८–२५९ तथा २६० से मालूम करें।

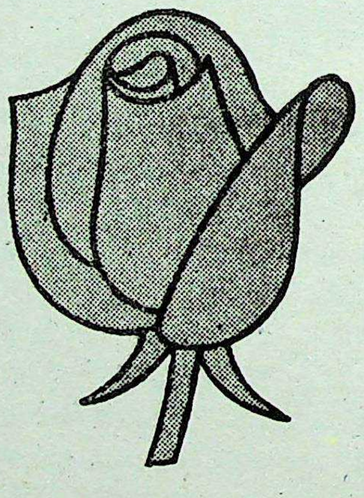

श्री गणपतये नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

रमल शास्त्र प्रेमियों के हेतु अब ऐसा सरल उपाय लिखते हैं जिनके द्वारा आप प्रत्येक प्रश्नों के गुप्त भेदों को भी सरलता पूर्वक निकाल सकेंगे।

रमल के प्रेमियों ने पाँसा फेंककर प्रस्तार अथवा जायचा बनाने का तरीका तो मालूम ही कर लिया है। अब हम केवल प्रस्तार बनाकर अपने प्रश्नों को किस प्रकार हल करेंगे वही सुगम उपाय लिखते हैं।

रमल की १६ शक्लें यह हैं।

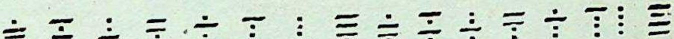

जब आप पाँसा छोडकर प्रस्तार बनायेंगे-तो खाना १५ में केवल यही आठ शक्लें आवेंगी 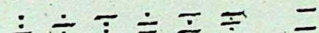 यानी खाना १५ में दो बिन्दु दो पाई अथवा चारो बिन्द या चारों पाई खाना १५में आवेगी तीन बिन्दु एक पाई अथवा तीन पाई व एक विन्दु की शकल खाना १९ में कभी न आवेगी जैसे 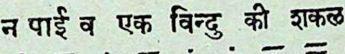 इत्यादि यह शकलें खाना १५ में जिसे फारसी में मीजान तथा हिन्दी में तुला कहते हैं यदि संयोग वश इस प्रकार की शक्ल तुला (मीजान) में आजावें तो समझ लो प्रस्तार बनाने में कहीं त्रुटी हो गई है। फिर संभाल कर अपना प्रस्तार ठीक कर लें।

यदि खाना १५ में या शकल मीजान में आ जावे तो उस प्रस्तारको अप्रमाणित समझे उनको असली मातृपंक्ति की शक्लों से गुणा करके दूसरा प्रस्तार बनाये मातृपक्ति की शकलैं क्रमानुसार यह है 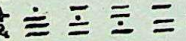 प्रस्तार परिवर्तन करने के लिए आपके प्रस्तार में जो शकल खाना १ में हों उस शक्ल को से गुणा करें और प्रस्तार

की खाना २ व-३ व-४ शकल को क्रमानुसार से गुणा करके हासिल चार शक्लों से दूसरा प्रस्तार बना लें।

अब चार्ट हाकिम शक्लों को समझो अग्नि बायु जल पृथ्वी चार (तत्व) होते हैं।

बिन्दु का हाकिम शक्ल तुला (मिजान)

शक्ल	स्वामी अग्नितत्व	स्वामी विन्दूतत्व	स्वामी जलतत्व	स्वामी पृथ्वीतत्व
	१	२	०	०
	५	०	३	०
	०	६	७	०
	९	०	०	४
	०	१०	०	८
	०	०	११	१२

उपरोक्त चित्र में शक्ल खाना १५ का बिन्दू जिस जिस घर घर स्वामी है इसी क्रम से लिखा गया है जब प्रस्तार बनावें तब निम्न रीती से त्रिकोण शक्ल बनावें।

(१) यदि प्रस्तार की खाना १५ में शक्ल आवे तो प्रस्तार की शक्ल १ को प्रस्तार की पाँचवीं शक्ल से गुणा करें फिर शक्ल खाना २ की शक्ल को प्रस्तार में आई हुई खाना ८ की शक्ल से गुणा करें फिर इन दोनों के गुणा से एक शक्ल बनालें हासिल त्रिकोण शक्ल बनेगी।

(२) यदि प्रस्तार की खाना १५ में शक्ल आवे तो प्रस्तार की शक्ल खाना ५ को शक्ल खाना ९ से गुणा करें फिर खाना ३ की शक्ल को प्रस्तार की खाना (९) से गुणा करें फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावें हासिल त्रिकोण होगा।

(३) यदि प्रस्तार में खाना १५ की शक्ल ⩦ आवे तो प्रस्तार की खाना ६ की शक्ल को खाना १० में बैठी हुई शक्ल से गुणा करें और खाना ७ व ११ की शक्लों को गुणा करें फिर दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावें यह तीसरा त्रिकोण होगा।

(४) यदि प्रस्तार की खाना १५ में ÷ हो तो प्रस्तार की नवीं तथा तेरहवीं (९×१३) शक्ल को गुणा करें और प्रस्तार की चार और आठ शक्ल को गुणा करै फिर दोनों हासिल को गुणा कर एक त्रिकोण बनालें।

(५) यदि खाना १५ में शक्ल ÷ आवे तो प्रस्तार की शक्ल १० को १४ से गुणा करै और ८ को १२ से गुणा करै फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनाले यह पाचवाँ त्रिकोण होगा।

(६) अगर प्रस्तार में तुला घर यानी खाना १५ में शक्ल ÷ आवे तो प्रस्तार की शक्ल ११ को १० से गुणा करै और खाना १२ को खाना १ से गुणा करै फिर इन दोनों की गुणा से एक शक्ल बनावें और छठा त्रिकोण बनाले।

(७) यदि दो शक्लें यानीं ⁞ और ≣ खाना-१५ में आवे इन को त्रिकोण बनाने का तरीका यही है कि असली मातृ पंक्ति की शक्लों से जिसका तरीका हम पहले लिख आये हैं कि प्रस्तार में मातृ पंक्ति में आई हुई शक्लों को क्रमशः १ व २ व ३ व ४ शक्लों में ≐ ⩦ ≑ ≣ से क्रमशः गुणा करके दूसरा प्रस्तार बनाकर नया त्रिकोण जैसा हम लिख आये हैं बनाले।

यही नियम है जो दो शक्लों की गुणा से शक्ल आवेगी इस हासिल शक्ल को दोनों शक्लो के बीच स्थान देवेंगे—मान लो खाना १५ की शक्ल में ÷ आई है तो जायचा की खाना ११ को १५ से गुणा करै और खाना १२ को १ से गुणा करेंगे। फिर दोनों शक्लों को गुणा कर एक शक्ल बनावेंगे तो गुणनफल दोनों शक्लों के बीच में ही रक्खा

जायेगा यही त्रिकोण होगा—फ़ारसी भाषा में त्रिकोण को मुसल्लस कहते हैं।

यह भी ध्यान रखना जरूरी होगा कि हासिल त्रिकोण को दायें बायें रखने का ध्यान जरूर रक्खें मान लो हमने दो शक्लों को यानी ≡ ≡ से गुणा किया तो हासिल शक्ल ÷ आई है तो इसका त्रिकोण इस प्रकार रक्खा जावेगा ≡ ÷ ≡ इसी प्रकार समस्त त्रिकोणो को बना सकेंगे।

एक उदाहरण देकर समझाते ताकि त्रिकोण निकालने में त्रुटी न हो जावे पाँसा डाला यह पस्तार बन गया इस प्रस्तार में खाना १५ में शक्ल ÷ आई है तो ऊपर लिखे हुये छठे नियम के अनुसार जायचा की ११ को १५ से गुणा किया ÷ ≡ तो हासिल आई और खाना १२ को १ से गुणा किया खाना ÷ में शक्ल ≡ है खाना १ में शक्ल है तो ≡ तथा ÷ को गुणा किया तो हासिल शक्ल ÷ आई अब हासिल शक्ल ÷ को ÷ से गुणा किया तो यह शक्ल ≡ आई अब इसको (÷ ≡ ÷) यह त्रिकोण बना।

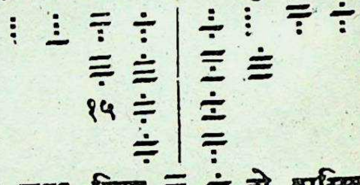

—०—

प्रथम गेही ≡ त्रिकोण शक्ल का फलादेश

⁝ ≡ ÷ इधर उधर की बेतुकी यात्रा हो विदेशी सकुशल लौटे, दावा की नौबत हो बहुत दिनों बाद मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

÷ ≡ ⁝ यात्रा में हानि हो, व्यापार में वृद्धि हो, भागा हुआ प्राणी शीघ्र आवे।

≡ ≡ ≡ क्रय विक्रय में लाभ, स्त्री का चाह में समय नष्ट हो, शादी आदि में सुविधा प्राप्त हो।

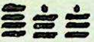 यात्रा कुशल पूर्वक होवे, यदि विदेशी आगमन का प्रश्न हो तो शीघ्र न आवे देर से आवे, विवाह में सफलता, क्रय विक्रय से लाभ हो।

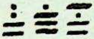 धन की प्राप्ति हो मित्रों से प्रेम हो, गायब वापस आवे कामनायें पूरी हों मगर कुछ समय के बाद विवाह के प्रति शुभ हो।

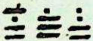 व्यापार में उन्नति हो, परिणाम शुभ हो, शासक वर्ग मेहरबान हो खोई वस्तु मिले, भागा हुआ प्राणी प्राप्त हो, विवाह शुभ हो।

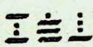 यात्रा से लाभ हो, अदालत जाना पड़े नष्ट वस्तु प्राप्त न हो विदेशी सकुशल लौटे।

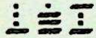 माल की इच्छा है तो पूरी हो, मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो यदि बीमार का प्रश्न है तो राहु केतु पूज्य हो, यदि यात्रा का प्रश्न है तो हानि हो।

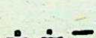 मित्र की आमद का समाचार मिले, यदि स्त्री के प्रति कामना है तो अपूर्ण हो, मामू के घर का माल प्राप्त हो यदि रोगी का प्रश्न है तो रोगी अच्छा हो जावे।

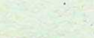 यात्रा से लाभ हो, क्रय विक्रय के प्रति यदि प्रश्न है तो लाभ हो, सुख शान्ती प्राप्त हो यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो भय हो।

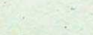 पशु आदि के प्रति यदि प्रश्न है तो भय हो, खोया हुआ या भागा हुआ का प्रश्न है तो न आवे गर्भवती को कन्या हो यदि झगड़े के प्रति प्रश्न है तो सुलह करो।

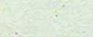 व्यापार की दशा डाँवा डोल हो रही है तथा मित्रों वा भाइयों में विरोध किसी चरित्र हीन स्त्री के प्रति मन मोटाव हो रोगी को कष्ट हो खोया प्राणी देर से मिले।

÷ ≐ ÷ आपका प्रश्न मान प्रतिष्ठा प्राप्ति तथा धन प्राप्ति तथा व्यापार की वृद्धि का हो तो, आशायें पूरी हो भाग्योदय निकट हो ।

÷ ≐ ÷ प्रत्येक कामनायें पूरी होवें, माल की प्राप्ति भी हो मित्रों द्वारा प्रेमी की प्राप्ति हो, यात्रा से लाभ होगा, गुरुजनों द्वारा आशिर्वाद प्राप्त होवें ।

÷ ≐ ÷ स्त्री द्वारा कष्ट उठावें, धन हानि की सम्भावना हों, दुष्ट स्त्री के चंगुल में न फँसे यदि यात्रा का प्रश्न है तो लाभ होगा यदि माल प्राप्ति की चाह है तो माल मिलेगा ।

÷ ≐ ÷ यदि आपकी कामना मित्रों द्वारा यश वैभव प्राप्त करने की है तो शुभ फल दायक होगी यदि रोगी का प्रश्न है तो मंगल की शान्ति करायें ।

द्वितीय गेही शक्ल ≐ त्रिकोण का फलादेश

≑ ≑ ≡ माल प्राप्त के पीछे कलह होगी—यदि प्राणी भाग गया है तो आने की आशा देर से करें इष्ट मित्रों द्वारा कलह होने का योग पाया जाता है पशु खरीद ने में हानि—मादक पदार्थ न सेवन करें ।

≡ ≑ ≐ यात्रा करना चाहते हो तो मत जाओ—लड़ाई होने की नौबत का योग आवेगा शासक वर्ग असन्तुष्ट हों धन हानि हो यह समय आप का शुभ फल दायक नहीं ।

÷ ≑ ≑ रंज कष्ट पैदा होगा—माल के पीछे कलह बढ़ेगी—यदि माल की प्राप्तो का प्रश्न है तो देरी से प्राप्त हो ।

≑ ≑ ÷ धन हानि की सूचना हो, अदालत की नौवत हो—यदि शादी की चाहना है तो शुभ होगी—यदि यात्रा करना चाहते हो तो मत जाओ यदि साझे में कार्य करने की इच्छा है तो लाभ होगा ।

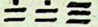 यदि कामना प्राप्ती की चाहना है—तथा व्यापार में उन्नती की चाहना है तो सफलता होगी—यदि यात्रा की कामना है तो शुभ फल दायक होगा जो कार्य करेंगे सफलता होगी।

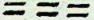 यदि यात्रा की चाहना है तो लाभ दायक यात्रा होगी—यदि प्रेमी को पाने की चाहना है—तो कामना पूरी होगी—व्यापारिक धंधा के प्रति जानना चाहते हों तो लाभ होगा।

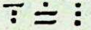 स्त्रियों द्वारा धन आगम की जो चाहना है पूरी होवें—समय शुभ आ रहा है—मादक वस्तु का त्याग करो—यात्रा लाभकारी होगा मंगल की शान्ती करायें विना जीवका में ठेस पहुँचेगी।

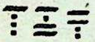 आशा पूरी होवे सफर लाभदाय होवे, स्त्री का चाहना है तो प्राप्त होवे. व्यापार की चाहना है तो लाभ होगा, प्रेमी की कामना है तो वह मिलेगी यदि नष्ट वस्तु को पूछते हो तो देर से प्राप्त होवे बाधा पड़ेगी।

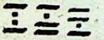 यात्रा करना चाहते हो तो न करो धन हानि उठानी पड़ेगी यदि बीमार की बावत् पूँछते हो तो बाधा निवारण का उपाय करायें, यदि झगड़ा का प्रश्न है तो कलह बढ़ेगी, स्त्री के प्रति कष्ट हानि उठावें।

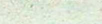 धन हानि का योग पड़ रहा है, मित्रों द्वारा कलह पैदा होगी, यदि विवाह की बावत पूछते हो तो वह स्त्री वद चलन होगी बात न करो।

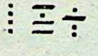 मित्रों द्वारा कलह पैदा होवे, धन की हानि भी होवे, राज सम्मान में हानि की नौबत आवे प्रत्येक कामनाओं में निराशा ही हाथ आवे।

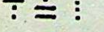 यात्रा की चाहना है तो मत करो। कोई भाग गया है तो देर से आवे। यदि पशु खोने का प्रश्न है तो देर से उत्तर

तरफ मिले यदि गर्भवती का प्रश्न है तो पुत्र होगा, अन्य प्रत्येक कामों में रुकावट हो।

⁝ ☰ ÷ यदि खरीदने तथा वेचने की बाबत प्रश्न है तो हानि होगी, यदि शादी का प्रश्न है तो अभी देर है। यदि नष्ट वस्तु को प्रश्न है तो शीघ्र मिले यदि विदेशी आगमन का प्रश्न है तो शीघ्र आवे।

÷ ☰ ⁝ यात्रा की बाबत हैरानी तथा कष्ट होगा, यदि खबर खुशी का प्रश्न है तो प्रसन्नता होगी, मित्रों द्वारा सम्मान होगा व्यापारिक धंधो में सफलता मिले। कामनायें पूरी हो।

÷ ☰ ≑ यदि गर्भवती के प्रति प्रश्न होगा तो पुत्र होगा, यदि क्रय विक्रय का प्रश्न है तो लाभ होगा, यदि व्याह का प्रश्न है तो शुभ फलदायक होगा, विदेशी आगमन का प्रश्न है तो शीघ्र आवे।

≑ ☰ ÷ आप की प्रत्येक कामनायें पूरी होंगी और सुख सौख्य के साथ समय व्यतीत होगा यदि यात्रा करना चाहते हो तो लाभ होगा।

तृतीय गेहे शक्ल ≐ त्रिकोण का फलादेश

≑ ≐ ⁝ यदि आप को वृद्ध पुरुषों महात्माओं से यश धन की इच्छा करते हैं तो कामना पूरी होगी, और विदेशी आगमन का प्रश्न करते हो तो शीघ्र आवेगा व्यापार में उन्नति होगी।

⁝ ≐ ≑ यदि क्रय विक्रय पशु आदि का प्रश्न करते हैं तो लाभ होगा, और यात्रा लाभदायक होवे, अफसरानों से लाभ होने का योग पड़ गया है।

≐ ≐ ☰ आपके व्यापारिक धंधे जो बन्द से हो रहे हैं वह सूर्य की

शान्ति कराने से लाभदायक सिद्ध होंगे मान प्रतिष्ठा बढ़ेगा पशु के क्रय विक्रय से लाभ होगा ।

≡ ≐ ≐ आपकी यात्रा लाभदायक होगी, यदि नष्ट वस्तु के प्रति प्रश्न है तो कठिनता से प्राप्त होगी अलबत्ता बड़े वृद्धों द्वारा लाभ होगा यदि साझे में व्यापार करना चाहते हो तो हानि होगी ।

÷ ≐ ⫟ आपका भाग्योदयका समय निकट आ गया है। यात्रा लाभकारी होगा कामनायें पूरी होंगी, यदि रोगी का प्रश्न है तो रोगी को लाभ होगा ।

⫟ ≐ ÷ धनोपार्जन के प्रति यात्रा लाभ कारी होगी, हाकिम वक्त से लाभ होवे यदि मन बहलाने के प्रति राग रंग के इच्छुक हो तो मर्त फँसो यदि किसी मित्र द्वारा कामना पूर्ती चाहते हो तो पूरी होगी ।

∓ ≐ ÷ हाकिम वक्त से लाभ की आशा न करो, पशु खरीदने में लाभ होगा, यदि स्त्री की चाहना का प्रश्न है तो मिलेगी, साझीदारों से लाभ होगा, धन की प्राप्ति का प्रश्न यदि है तो शनि पूजन के बाद ही लाभ होगा ।

÷ ≐ ∓ यदि किसी मित्र के आने का प्रश्न है तो उसका सन्देसा आवेगा यदि यात्रा का प्रश्न है तो लाभ होगा, यदि शादी की चाहना है तो कामना पूरी होगी, व्यापार में लाभ होवे, यदि रोगी का प्रश्न है तो वह निरोग होगा ।

≡ ≐ ÷ यों वृद्धों से लाभ होगा, मान प्रतिष्ठा बढ़ेगा, कुछ दिनों बाद मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, बिदेशी आगमन भी होगा, यदि यात्रा करेंगे तो लाभ होगा ।

÷ ≐ ≡ शासक वर्गों द्वारा भय की शंका है, स्त्री द्वारा तथा मित्रों

द्वारा लाभ होवे यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो भय की आशंका है, और गायब भी दुखित दशा में है।

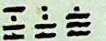 यदि नौकर की चाहना का प्रश्न है तो मिलेगा, स्त्री की चाहना है तो मिलेगी, पर आपकी कामना देर से पूरी होगी, यात्रा लाभदायक होवे।

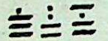 यात्रा, शत्रुता, तथा कलह मेटने का प्रश्न है तो मंगल पूज्य है, न्यायालय से विजय पावें, प्रेमी इच्छा अनुसार मिले, खोई वस्तु देर से मिले।

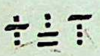 संसारी झमेलों में कलह कष्ट झगड़ा पैदा हो, पर कुछ समय बाद शान्ति भी होवे, धन प्राप्ति का यदि प्रश्न है तो मंगल का दान करने से कामना पूरी हो और गृहकार्य में सफलता प्राप्त हो।

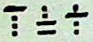 यदि पति पत्नी में कलह का प्रश्न है, अथवा नाना प्रकार के कष्टों से बचने का प्रश्न है तो मंगल की शान्ति करायें। लाभ होगा, प्रेमी मिलेगा।

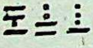 विजय प्राप्त चाहते हो तो विजय होगी, पर शत्रु भय से बचते रहें यदि बिदेशी आगमन का प्रश्न है तो ३५ दिन पर आवेगा।

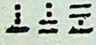 मान प्रतिष्ठा प्राप्त होवे, यदि नष्ट जायदाद का प्रश्न है तो कामना देर से पूरी होगी शत्रु परास्त होवें।

चतुर्थ गेही त्रिकोण शङ्क का फलादेश

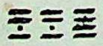 यदि आप का प्रश्न मान मर्यादा प्राप्त का है तो कामना पूरी होगी। स्त्री सुख की चाहना है तो वह भी पूरी होगी। यदि कृषि अथवा बीज निर्माण का प्रश्न है तो सफलता मिलेगी। यदि खाना १६ में हो तो प्रत्येक कामनायें पूरी हों।

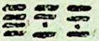 मित्रों द्वारा जो सन्देसा मिलेगा उससे प्रसन्नता होगी, यात्रा से लाभ होगा क्रय विक्रय प्रत्येक वस्तु से लाभ की आशा करें ।

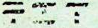 धन प्राप्ति का प्रश्न है अथवा पशु खरीद के व्यापार का प्रश्न है । अथवा स्त्री की चाहना है तो प्राप्ती होगी कामनायें पूरी होंगी । मित्रों द्वारा कलह हो धन हानि भी हो ।

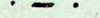 स्त्री द्वारा कलह बढ़े. साझेदारी कामों में धन हानि हो, पर विदेशी आगमन से प्रसन्नता भी हो, स्त्री का पत्र मिले, मित्रों द्वारा कलह हो, उच्चपदाधिकारी लोगों से भय हो ।

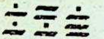 यदि पशु खोने का प्रश्न है अथवा यात्रा की चाहना है तो हानी हो पशु न मिले पर प्रेमी मिलन की चाहना में सफलता हो, रोगी रोग से छुटकारा पावे माल खरीदो लाभ होगा ।

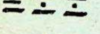 विषय वासना की यदि चाहना है तो गड़बड़ी पड़ेगी, सन्तान सुख में विघ्न पैदा हो, यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो रोगी रोग से छुटकारा पायेगा ।

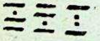 स्त्री सुख की चाहना यदि है तो वह पूरी होगी यदि खाना १६ या १३ में रूपी ÷ है तो हानि होगी बदनामी भी होगी ।

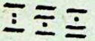 शरीर की दशा बिगडने, वीर्यपात से शरीर रोगी रहै है, नपुंसकता ने घर कर लिया है तो मंगल की शान्ति के बाद औषधि करायें लाभ होगा, यदि घर का प्राणी चला गया है तो देर से आवेगा ।

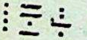 आप के बिगड़े काम सुधरेंगे व्यापारी दशा सुधरेगी, प्रेमी की चाहना है तो प्रेमी मिलेगा, मित्रों द्वारा आशा पूरी होगी, नष्ट वस्तु मिले ।

: ≡ ⁝ आपकी प्रत्येक कामनायें पूरी होंगी, यात्रा लाभ कारी होगी स्त्री सुख की चाहना है तो वह चाह पूरी होगी।

. ≡ ÷ विषय वासना में आप समय व्यतीत कर रहे हैं, चंचला स्त्रियों द्वारा धन हानि करा रहे हैं, घरेलू कलह बढ़े, स्त्री की बीमारी का यदि प्रश्न है तो आरोग्यता प्राप्त होगी।

÷ ≡ ÷ बेतुकी यात्रा पैदा होवे, शासक वर्गों से भय हो मान हानि की सम्भावना हो, सगे सम्बन्धी ही चुगुली करके बदनाम करें।

÷ ≡ ⁝ शासक वर्गों द्वारा यात्रा करनी पड़े, पर व्यापारी दशा सन्तोष जनक हो, पशु आदि द्वारा लाभ हो, यदि नष्ट वस्तु का प्रश्न है तो न मिले।

⁝ ≡ ÷ शासक वर्गों द्वारा लाभ हो मान प्रतिष्ठा बढ़े, स्त्री की चाहना है तो बदनाम होंगे, निजपत्नी से सुख प्राप्त होवें यदि गर्भवती का प्रश्न है तो पुत्र होगा।

: ≡ ÷ खोया हुआ माल हाथ आवे प्रत्येक कामनायें पूरी हों मान प्रतिष्ठा बढ़े, धन की प्राप्ति भी हो।

÷ ≡ ⁝ प्रत्येक कार्य में सफलता होगी, विदेसी आगमन से खुशीं हो झगड़े वाले मामिले शीघ्र सुधरें।

पञ्चम गेही शक्ल ÷ का फलादेश

≡ ÷ ÷ आप यात्रा के प्रति अथवा किसी व्यक्ति के भाग जाने के प्रति पूछते हैं तो हानि, तथा उसकी वापसी कठिन प्रतीत होती है, इष्ट-मित्रों में द्वेष हो रहा है। तथा धन हानि के प्रति पूछते हैं तो राहु की शान्ति करायें, समय खराब है।

÷ ÷ ≡ किसी इमारत के प्रति अथवा व्यापार में घाटा के प्रति पूछ

रहे हैं अथवा नष्ट वस्तु के प्रति पूछते हैं तो समय खराब है राहु की शान्ति करायें, प्रेमी न मिलेगा।

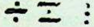 आप प्रेमी से विवाह के इच्छुक हैं तथा इष्टमित्रों के साथ में व्यापार के इच्छुक हैं तो कुछ दिन बाद सफलता मिलेगी। मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, पति-पत्नी में प्रेम होगा।

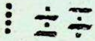 पति-पत्नी में परस्पर विरोध बढ़े, धन हानि हो, भागा हुआ प्राणी देर से मिले। यदि प्रस्तार में शक्ल ⁝ खाना ४ में होगी तो आगामी सोमवार से आपकी कामनायें पूरी होंगी।

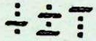 विद्या प्राप्ति तथा नूतन कार्य सिद्धि के प्रति पूछते हैं तो सफलता मिलेगी। यदि नष्ट वस्तु के प्रति पूछते हैं तो मिलेगी। पशु द्वारा लाभ हो। गृह कार्य में सफलता होवे।

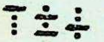 यदि अपनी कामनाओं की पूर्ति के प्रति पूछ रहे हों तो सफल मनोरथ होंगे। यदि यात्रा द्वारा लाभ की आशा करते हों तो लाभ होगा। यदि शक्ल ÷ खाना १ प्रस्तार में हो तो कार्य बनने में संदेह है।

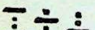 आपकी प्रत्येक कामनायें पूरी होंगी, नाना प्रकार से लाभ की आशा करें। यदि शक्ल ÷ खाना १ में है तो शुक्रवार को आप सफल मनोरथ हों, गर्भवती को पुत्र की आशा करें, व्यापारिक दशा में संतोषजनक लाभ हो।

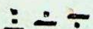 यदि वैवाहिक कार्य की चाहना है तो सफलता कुछ देर से मिलेगी, यदि विषय वासना की चाह करते हों तो कलह होगी, यदि स्त्री के प्रति प्रश्न है तो नाकामी हाथ आवेगी यदि कोई चला गया हो तो देर से आवे।

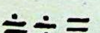 शत्रु पर विजय पावे, व्यापारिक मामिलों में संतोषजनक लाभ हो, यदि रोगी के प्रति पूछते हो तो आराम हो जावेगा,

विदेशी आगमन का प्रश्न है तो देर से आवेगा यदि नूतन मकान निर्माण की चाहना है तो सफलता मिलेगी।

≡ ÷ ≡ स्त्री की व्यथा से छुटकारा पावे, इष्ट मित्रों द्वारा लाभ हो, यदि रोगी के प्रति प्रश्न करते हो, तो राहु का दान करो एवं आराम हो जावेगा अन्य कामनायें आप की पूरी होती रहेंगी।

⁝ ÷ ≡ इष्ट मित्रों द्वारा द्वेष की आग भड़केगी, धन हानि की सम्भावना होवे मान प्रतिष्ठा में विघ्न पड़े किसी कलंक में फँस जाने का योग भी पड़ता है समय खराब है सन्तोष धारण करो।

≡ ÷ ⁝ बेतुकी यात्रा होगी, इष्ट मित्रों में कलह बढ़े, धन हानि की नौबत आवे। पशु द्वारा हानि होवे, व्यापारिक दशा डाँवा डोल रहे यदि कोई प्राणी चला गया है तो लौटने में सन्देह है।

÷ ÷ ≡ इष्ट मित्रो द्वारा सहानुभूति से प्रसन्नता स्त्री सुख से प्रमोद बढ़े आपके व्यापारिक मामिले में सफलता प्राप्त होवे, यात्रा लाभकारी हो यदि कोई प्राणी चले जाने की बावत पूछते हो तो वह शीघ्र लौटेगा शनि पूज्य है शान्ती करायें।

≡ ÷ ≡ बढ़े यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो सन्देह है शनि राहु पूज्य है यदि यात्रा करना चाहते हो तो जाओ लाभ होगा।

÷ ÷ ≡ आपके मान प्रतिष्ठा के गिरने की नौबत आ रही है शनि राहु मंगल की शांति शीघ्र करायें तभी बिगड़ी, दशा सुधरेगी, रोगी के प्रति यदि प्रश्न है तो भय है कोई प्राणी धोखा देवे।

≡ ÷ ÷ नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ेगा। यदि नौकर है तो अफसरान का भय नौकरी छूटनेका भय हो. इष्ट मित्रों में कलह बढ़े मंगल तथा शनि की शान्ती ही कल्याण मार्ग है।

छठी ऐसी शक्ल ⫶ त्रिकोण का फलादेश

÷ ⫶ ÷ इष्टमित्रों के सहयोग से मान प्रतिष्ठा बढ़े धन का लाभ होवे–यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो मंगल की शान्ति अनिवार्य है–यदि नष्ट वस्तु के प्रति पूछते हो प्राप्ती होगी–अन्य नार्यें पूरी होंवे।

÷ ⫶ ÷ मित्रों से प्रेम बढे- वैमनसा बढ़ी हुई शान्त हो जावे–सुखी जीवन हो लोग वदी करेंगे पर हानी अपनी न होगी–यदि रोगी के प्रति पूछते हो तो मंगल पूज्य है आराम होगा पर देर से।

≡ ⫶ ⫶ साझेदारी के कःर्मों में हानि हो–नष्ट वस्तु की प्राप्ती हो जावे –विदेशी अथवा मित्र की खबर की सूचना मिले जिस से प्रसन्नता हो। समय आपका सन्तोष जनक है।

⫶ ⫶ ≡ प्राय: अनेक कार्मों में उलझने पैदा होगी। दु:खका सामना करना पडेगा–राज दरबार से मान प्रतिष्ठा मिले कामनीय पूर्ण होगी पर कुछ देर लगेगी।

≡ ⫶ ⫶ विदेशी सकुशल वापस आवे–विवाह आदि कार्य सकुशल पूरे हो माना लाभदायक हो–यदि केतु की शान्ति अथवा दान करा दें तो सारी बिगडी दशा सुधर जावे।

⫶ ⫶ ≡ आप के भाग्यो का समय निकट आ गया सफलता मिलेगी जीवका लगेगी लाभ होगा। यदि अदालत करोगे विजय होगी। यदि रोगी का प्रश्न है तो वह आराम पायेगा।

≡ ⫶ ≡ यात्रा बेतुकी होगी। क्रय विक्रय से लाभ साधारण होवे। आपके व्यापारिक मामिलों में सफलता देर से मिलेगी। मंगल पूज्य है यदि प्रेमीको अपनाना चाहते हो तो बदनाम होगे।

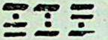
धन हानि उठानी पडेगी शरीर को कष्ट होवे। घरेलू झगडे पैदा होंगे, पर मंगल की शान्ति करा देने से बिगडी दशा सुधर जावेगी लाभ होगा लोगों में मान प्राप्त होगा।

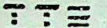
यदि पशु बिक्रय की चाहना है तो व्यापार करो लाभ होगा बिदेशी आगमन में देरी है। समुद्री यात्रा करना ठीक नहीं कष्ट होगा। धन हानि होगी मनसूवे फेल होंगे।

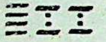
यदि मान प्रतिष्ठा की च हना है तो कामना परी होगी। स्त्री सुख भी प्राप्त होगा। अदालत में विजय होगी नूतन मकान बनाना शुभ होगा।

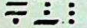
यात्रा लाभकारी हो व्यापारिक दशा सुधरे। समय सुख शान्ति से व्यतीत हो विषय वासना में न फसो। शत्रु पर विजय पाओगे। समय अनुकूल है।

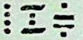
स्त्री के साथ यात्रा आपका हानि कारक होगा। यदि क्रय विक्रय करना चाहते हो तो व्यापार करो लाभ होगा। शत्रु पर विजय पाने का भी योग आ गया है।

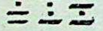
अर्थ लाभ की आशा अपूर्ण हो। यात्रा करना ठीक नहीं व्यापार सोच कर करो समय खराब है राहु का दान करने बाद आपकी कामनायें पूरी होंगी।

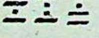
व्यापार करने में लाभ नौकरी प्राप्त की कामना पूरी हो। राज सम्मान में राहु बाधक होगा। यदि रोगी के प्रति पूछते हो तो देर से आराम पायेगा।

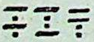
आपकी व्यापारिक दशा सन्तोषजनक रहेगी बिगडी दशा भी सुधरेगी राज सम्मान हो उच्च पद पावे समय सानुकूल है।

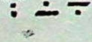
यदि यात्रा का विचार है तो करो लाभ होगा। यदि जीवका में लाभ की आशा करते हो तो करो लाभ होगा। घरेलू झगड़े दूर होंगे।

सप्तम गेही शक्ल त्रिकोण का फलादेश

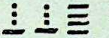 धन हानि होने का योग पाया जाता है। यदि घर में पशु हैं तो पशु कलह से जो बेचैन हो व्यापारिक दशा बिगड़े घरैलू कलह पैदा हो। यात्रा में हानि उठानी पड़े।

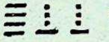 इष्ट मित्रों की फूट से कलह बढे स्त्री पुरुषों में अन बन हो यात्रा भी करना पडे लड़ाई झगड़ा बढता जावे।

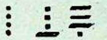 कोई प्राणी भग जावे सुन कर उदासी बढ़े, धन हानी भी होवै। यदि बीमारी की बावत प्रश्न है तो भय है। कोई अकारण लांछन भी लगेगा।

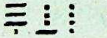 बेतुकी यात्रा होती रहे धन हानि हो यदि नष्ट वस्तु के प्रति प्रश्न है तो प्राप्ती की आशा न करें। व्यापारिक धन्धों में रूकावट पडे। सन्तान सुख में बाधा पडे शनि पूज्य है।

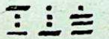 आप शान्ती चाहते हैं और अपनी कविता की पूर्ति चाहते हैं तो पूरी होगी धन की प्राप्ती होगी। मुकदमा में विजय मिलेगी नौकर इमान्दार मिलेगा मित्रों द्वारा सुख हो।

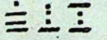 मित्रों के संगठन से बिगडा काम बनेगा। आपकी कामनायें अब पूरी होगी। स्त्री सुख की यदि चाहना है तो वह भी पूरी होगी। शासक वर्ग द्वारा मान प्रतिष्ठा मिले।

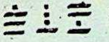 पति पत्नी के वियोग से मन में ग्लानि हो, शत्रुओं द्वारा बैर भाव बढे धन हानि हो, नाना प्रकार की चिन्तायें डेरा डाले रहें।

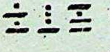 यात्रा से हानि हो यदि कोई पशु खो गया है तो मिलने की आशा न करें। यदि कोई प्राणी भाग गया है तो २ मास पर लौटेगा। किसी जायजाद को अपनाना चाहते हो तो राहु तथा मंगल का दान करो।

≡ ⋮ ≐ किसी राज कर्मचारी द्वारा यात्रा लाभकारी हो तथा व्यापार में लाभ हो मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो भाग्योदय का समय निकट आ गया है।

≐ ⋮ ≡ राज कर्मचारियों द्वारा मान प्रतिष्ठा मिले धन का लाभ होता रहे जीवका चले लोग प्रेम की दृष्टि से देखें प्रत्य कामनायें पूरी हो।

≡ ⋮ ÷ पशु पालन तथा क्रय विक्रय में लाभ हो। मित्रों द्वारा खुशी का समाचार मिले। शान्ति मिले घरैलू धन्धे सुलझ जावें।

÷ ⋮ ≡ व्यापारी धन्धों में उन्नति हो धन धान्य की बृद्धि हो राज सम्मान हो आपकी कामनायें सभी क्रमशः पूरी होती रहैं।

≐ ⋮ ÷ घरेलू कलह बढती जावे बना बनाया काम भी बिगड़ता जावे मंगल राहु ग्रह आपके कार्य को बिगाड रहे हैं।

÷ ⋮ ≑ अफसरों द्वारा लाभ हो वह प्रेम दृष्टि से देखै अन्त में मंगल ग्रह काम को बिगाड़ दें मंगल की शान्ति जरूर करावें।

⁝ ⋮ ≑ यदि यात्रा द्वारा लाभ उठाने की ठानी है तो मत जाओहानि उठानी पडेगी। यदि काम वासना से स्त्री की चाहना है तो सन्तोष करो। यदि गर्भवती के प्रति पूछने हो तो पुत्र होगा।

≑ ⋮ ⁝ यदि भाग्योदय के प्रति पूछते हो तो शनि का दान करा दो भाग्योदय शीघ्र होगा। व्यापारी दशा सुधरेगी यात्रा लाभदायक होगी। स्त्री सुख भी होगा।

अष्टम गेही शक्र ≡ त्रिकोण का फलादेश

⋮ ≡ ⁝ यदि यात्रा द्वारा लाभ की चाह करते हो तो मत जाओ सिवा परेशानी के कुछ हाथ आवेगा, सगे सम्बन्धियों से सचेत रहो।

⁝ ≡ ⋮ आपकी व्यापारिक दशा डाँवा डोल हो रही है, लोगों से

कलह न पैदा करो आपका समय खोटा है, यदि रोगी के प्रति पूँछते हो तो भय है। यात्रा मत करो, कष्ट होगा।

÷ ≑ ≡ अब समय सानकूल आ गया है व्यापार का धंधा करो लाभ होगा, क्रिय विक्रय से लाभ होगा, यदि विदेशी आगमन के प्रति पूँछ रहे हो तो शीघ्र वापस आवे।

≡ ≑ ÷ जीवका के प्रति यात्रा करो लाभ होगा शनि का दान तथा शान्ति करा दो बिगड़ी दशा सुधर जावेगी।

÷ ≑ ≡ धन प्राप्ति के प्रति जो प्रश्न है यदि शक्ल ≡ प्रस्तार में कई स्थानों पर आई है तब तो आपका समय भाग्य का अच्छा नहीं है मंगल की शान्ती कराने से धन का लाभ होगा।

≡ ≑ ÷ यात्रा में हानि उठावेंगे, स्त्री की चाहना है तो काम न बनेगा यदि व्यापार में लाभ उठाना चाहते हो तो शनि मंगल की शान्ती कराने से दशा सुधरेगी।

÷ ≑ ≡ व्यापारी दशा बिगड़ रही है, लड़ाई झगड़े व्यर्थ के लगे रहते हैं, दुष्ट स्त्री के चुंगुल में मत फँसो बदनामी होगी, बिदेशी देर से लौटेगा बीमारी के प्रति यदि पूँछते हो तो राहु मंगल शनि की शान्ती कराने से आराम होगा।

≡ ≑ ÷ समय आपका अनुकूल नहीं सभी से झगड़ा लगता रहे इष्ट मित्र भी मुख फेर ले, अदालती कामों में पराजय हो शनि मंगल पूज्य है।

≡ ≑ ≡ यात्रा करोगे तो हानि उठाओगे, व्यापार में घाटा रहेगा नाना प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

≡ ≑ ≡ दुष्ट लोग आपको अकारण परेशान करें, घर में कलह मची रहे स्त्री सन्तान सुख में बाधा हो शनि की शान्ती कराने से बिगड़ी दशा सुधरेगी।

≡ ≑ ≡ मुकद्दमों के सुलझाने में समय लगेगा धन हानि उठावो

पड़ेगी, किसी दुष्ट स्त्री के चुंगुल में फँस कर बदनाम होंगे शनि पूज्य है।

⫶ ≑ ⫧ भाग्योदय की शक्ल जो प्रश्न है वह आशा पूरी होगी बिगड़ी दशा सुधरेगी खोया हुआ माल या प्राणी मिले यात्रा का विचार न करो परेशानी होगी।

÷ ≑ ≡ किसी गायब मित्र का पत्र या सन्देशा मिलेगा, कारोबार की दशा सुधरेगी समय अनुकूल आ गया है सन्तान सुख भी होवे।

≡ ≑ ÷ व्यापारी दशा सुधरेगी बिगड़े काम बनेंगे, स्त्री की चाहना है तो मिलेगी सुख पाओगे सन्तान सुख भी होवे यात्रा करना चाहते हो तो जाओ लाभ होगा।

÷ ≑ ≡ आपने जो कामनाओं के प्रति कदम उठाया है उसमें सफलता मिलेगी हाकिम से भी लाभ उठाओगे व्यापारी दशा सुधरेगी समय अनुकूल आ गया है।

≡ ≑ ÷ अब आप की प्रत्येक कामनायें पूरी होंगी, इष्ट मित्रों द्वारा खुशी तथा लाभ होगा स्वास्थ्य सुधरेगा जो कामना चाहते हो वह पूरी होगी।

नवम गेही शङ्क ÷ त्रिकोण का फलादेश

÷ ÷ ≣ यात्रा की चाहना न करो, चित्त में व्याकुलता जो हो रही है वह शनि की शान्ती कराने से दूर होगी, साझे का काम न करो, विदेसी आगमन शीघ्र हो।

≣ ÷ ÷ यदि किसी प्रेमी की चाह में व्याकुल हो तो शनि की शान्ती करावें प्रेमी मिलेगा जीवका के प्रति यात्रा करो लाभ होगा, विदेसी का पत्र या सूचना मिलेगी।

⫶ ÷ ≡ यदि स्त्री की इच्छा करते हो तो चेष्टा करो कार्य बनेगा आपकी

कामना पूरी होगी क्रिय विक्रय से लाभ उठाओगे, काम वासना सता रही है इच्छाओं को रोको वर्ना भविष्य में हानि होगी ।

⋮ ÷ ⋮ यदि आपकी कामना मित्र द्वारा पूरी कराने की हैं तो वह पूरी होगी, आपका मन रोगी के प्रति तथा स्त्री चाहना की ओर अधिक है इसमें धन हानि होवे ।

⋮ ÷ ⋮ नष्ट वस्तु का मिलना कठिन है उद्योग व्यर्थ है, प्रेमी को चाहते हो तो मिलेगा यात्रा लाभदायक होवे अनायास गुप्त धन मिलने का योग पड़ता है शनि की शान्ती करा देयें ।

⋮ ÷ ⁏ विषय वासना में लुप्त होना चाहते हो तो जीवन खराब न करो, व्यापारी दशा सुधरेगी, शिक्षा प्राप्त होगी । हाकिम वक्त से हतात्साही मिलेगी ।

÷ ÷ ÷ यदि माल प्राप्ति की चाहना है तो माल मिलेगा, शासक वर्गों से झगड़ा न करो वर्ना हानि उठाओगे समय सानुकूल है आपकी सारी कामनायें पूरी होंगी ।

÷ ÷ ÷ खोये हुये प्राणी की बाबत यदि पूँछते हो तो ९० दिन सन्तोष करो, यात्रा करो तो लाभ होगा, प्रसन्नता होगी, विना किसी वसीला के कार्य आपका बनेगा ।

÷ ÷ ÷ शादी के प्रश्न में सफलता न मिलेगी, रोगी के प्रश्न में रोगी रोग से मुक्त होगा, यात्रा लाभकारी होगी, स्त्री से कलह मित्रों से लड़ाई होवे ।

÷ ÷ ÷ रोगी रोग से मुक्त पायेगा नष्ट वस्तु मिलेगी, व्यापार में घाटा उठायेंगे मान प्रतिष्ठा के प्रति प्रश्न शुभ फल दायक होगा ।

÷ ÷ ÷ काम धंधा की तलाश में हो उद्योग करो सफलता होगी, क्रिय विक्रय से लाभ होगा, स्त्री सुख होगा, गायब शीघ्र आवे ।

≛ ÷ ≡ शादी की चाहना न करो शनि काम बिगाड़ रहा है, यदि किसी हाकिम से मिलकर कामना पूर्ती चाहते हो तो सफल मनोरथ होगा बुराई का विचार न करो, मित्रों में कलह का योग है।

≡ ÷ ≟ खाली यात्रा या स्त्री की चाहना में जो लगे हो व्यर्थ परेशानी न उठाओ काम कुछ बनेगा नहीं, अन्य कामों में सफलता होगी राहु पूज्य है।

≟ ÷ ≡ विषय वासना में न फँसो परिणाम बुरा है, किसी प्रेमी का पत्र या खुद आवेगा प्रसन्नता होगी, लड़ाई झगड़े में न फँसो, नष्ट वस्तु प्राप्त होगी।

≡ ÷ ÷ प्रेमी की चाहना है तो प्राप्त होवे, नष्ट वस्तु मिले, शत्रु पर विजय पायेंगे खोया हुआ प्राणी यदि २८ दिन पर न आया तो जीवन की आशा नहीं।

÷ ÷ ≡ नाना प्रकार की चिन्ताओं में ग्रसित हो रहे हो, व्यापार धंधा चलता नहीं हो परेशान हो रहे हो मंगल शनि की शान्ती करायें बिगड़ी दशा सुधरेगी।

दशम गेही ÷ त्रिकोण का भविष्य फल

⁝ ≑ ≟ आप माल प्राप्ती के इच्छुक हैं और पशु जो हाथ से निकल गया है उसकी प्राप्ती के प्रति इच्छुक है राहु की शान्ति करावे दोनों कार्य पूरे होंगे समय खराब है विद्या प्राप्ती परीक्षा आदि में सफलता होगी।

≟ ≡ ⁝ यात्रा में कष्ट उठाना पडेगा यदि रोगी के प्रति प्रश्न है तो रोगी निरोग होगा। गर्भवती का प्रसव सुगमता पूर्वक होगा पुत्र को कष्ट न होगा, विदेशी आगमन की सूचना मिले।

≣ ÷ ÷ यदि दावा करोगे तो विजय होगी क्रय विक्रय में लाभ होगा मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो यदि शक्ल ÷ प्रस्तार में प्रथम घर में तो कामना रविवार को पूरी होगी इष्ट मित्रों द्वारा लाभ होगा

÷ ÷ ≣ यदि व्यापार द्वारा जिनका चाहते हो तो सफलता होगी नष्ट वस्तु शीघ्र मिलने का योग पड़ता है। प्रेमी मिलेगा यदि ÷ खाना ३ में है तो बुधवार को आपकी कामना पूरी होगी भाग्योदय होगा।

÷ ÷ ÷ विषय वासना में फँसो मत—मित्र मिलेगा कोई खुशी का समाचार मिलेगा ४५ दिन के बाद आपकी कामनायें पूरी होंगी।

÷ ÷ ÷ किसी के माल को हड़पना चाहते हो यह ठीक नहीं। अपने व्यापारी धन्धे को उठाओ सफलता होगा नौकरी आदि प्राप्त हो नष्ट वस्तु भी मिले यात्रा लाभकारी होंगे मान प्रतिष्ठा बढे

÷ ÷ ÷ चिरकाल के बिगडे काम बनेगे व्यापारी धन्धा सुधरेगा नौकरी आदि में उन्नति का योग आ गया है कामनायें पूरी हो रोगी को आराम होगा विदेशी आगमन पर प्रसन्नता हो।

÷ ÷ ÷ यदि अपने कार्य में पारलौकिक पाने के इच्छुक हो तो शनि की शान्ती करा दो। प्रत्येक कामनायें आपकी पूरी होंगी। लेन देन क्रय विक्रय से लाभ भी होगा।

÷ ÷ ÷ आपकी भाग्योदय का समय आ गया मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो, बिगडी दशा सुधरे। महात्माओं का आशिर्वाद मिले यदि रोगी के प्रति पूछते हो तो १० दिन के बाद आराम होगा।

÷ ÷ ÷ मान प्रतिष्ठा वयो वृद्धि तथा शासक वर्गों द्वारा प्राप्त हों नष्ट वस्तु तथा कार्य प्राप्त हो यात्रा लाभकारी हो सुख सौख्य मित्रों द्वारा प्राप्त हो, शत्रु परास्त हो, स्त्री की द्वेषता मिटेगी, विदेशी आगमन हो भाग्योदय होवे।

≡ ÷ ≡ आपका व्यापारी तथा जीवका का कार्य ठप हो गया है। किसी ने धोका देकर माल हड्प कर दिया है तो शनि मंगल की शान्ती करा दो यदि शक्ल ÷ खाना ७ में हो तो मंगलवार को आपकी कामना पूरी होगी।

≡ ÷ ≡ किसी उच्च पदाधिकारी के प्रति आपको क्लेश प्राप्त हुआ है तो मंगल शनि की शान्ति करायें बिगडी दशा सुधरेगी यदि खाना १४ में शुभ शक्ल है तो बिगडा काम बनेगा वर्ना शनि मंगल पूज्य है।

÷ ÷ ≡ आप प्रत्येक झंझटों से छुटकारा पावेंगे और राज्य संमान भी प्राप्त होवे। जीवका का धन्धा सुचारू रूप से चले। प्रेमी मिले भाग्योदय का समय आ गया है।

≡ ÷ ÷ व्यापार से लाभ, नौकरी आदि में उन्नति हो मगर नष्ट वस्तु का मिलना कठिन होगा। प्रेमी मिलेगा, स्त्री सुख होवे। समय सानुकूल आ गया।

∸ ÷ ÷ आप सन्तान की ओर से चिन्तित हैं तथा धन हानि आदि से व्याकुल हो रहे हैं तो मंगल तथा केतु की शान्ती करा दो बिगडी दशा सुधरेगी शत्रु परास्त होगा।

÷ ÷ ∸ यात्रा मत करो हानि उठाओगे योंही दशा डाँवा डोल हो रही है प्रत्येक काम बिगड़ रहे हैं केतु तथा मंगल की शान्ती कराने से दशा सुधरेगी।

एकादश नहीं ÷ त्रिकोण का फलादेश

÷ ÷ ≡ किसी शुभ कार्य व्याह आदि मे सम्मिलित होने का औसर प्राप्त हो, और मन में मोद हो यदि खाना ११ में अशुभ शक्ल हो तो झगड़ा भी पैदा हो धन हानि हो परेशानी उठानी पड़े।

≡ ÷ ÷ राज सम्मान में भय हो प्रेमी मिलन में रुकावट हो, धन

हानि भी हो किसी व्यभिचारी स्त्री द्वारा कलह उठानी पड़े।

≐ ÷ ≡ व्यापारी लाभ के प्रति यात्रा हो, नष्ट वस्तु की प्राप्ति हो, पशु क्रय विक्रय में हानि उठानी पड़े, लोगों से लड़ाई आक्रमण करनी पड़े।

≡ ÷ ≐ स्त्री सुख प्राप्त हो, विदेसी आगमन देर से हो यदि ≑ खाना २ में आई हो तो जीविका में लाभ हो विदेशी शीघ्र आवे धन का आगमन हो।

≡ ÷ ≑ धर्म के काम में पैसा खर्चा हो, धन की प्राप्ति भी हो विदेशी आगमन से प्रसन्नता हो, कामनाये शनि मंगल की शान्ती कराने से पूरी हो।

≑ ÷ ≡ किसी स्त्री द्वारा कलह तथा लड़ाई झगड़ा हो धन हानि हो अशुभ समाचार मिले, हैरानी परेशानी उठानी पड़े।

⁝ ÷ ≐ यदि बीमार के प्रति आपका प्रश्न है तो रोगी के लिये अशुभ है। यात्रा होवे, राज सामान तथा जीत्र का सम्बन्धी कार्य में काफी हानि उठानी पड़े।

≐ ÷ ⁝ अपनी कामनाओं के प्रति पूछते हो तो कामनायें पूरी होवें धन की प्राप्ति भी हो स्त्री सुख प्राप्त हो किस कार्य में लाभ हो।

≡ ÷ ÷ विदेसी आगमन हो, मान सम्मान मिले मगर बुरे कामों के करने में आपका मन उधर लगा रहे।

÷ ÷ ≡ किसी स्त्री द्वारा धन हानि हो कलह उठानी पड़े। व्यभिचार में लगे धन की हानि उठानी पड़े मंगल की शान्ती जरूर कराये।

≐ ÷ ⁝ नष्ट माल की प्राप्ति हो, विदेसी आगमन हो, झगड़े में 'अदालत की नौबत पहुँचे, यदि गर्भवती का प्रश्न हो तो प्रसव सुख पूर्वक हो, फल हो।

⁝ ÷ ≐ आपकी कामनायें शुभ कार्य के प्रति है पूरी होगी धन की

प्राप्ति होवे,' गायब शीघ्र आवे, ब्याह शुभ फलदायक होगा मगर राहु की शान्ती करावे।

≑ ÷ ≡ इष्ट मित्रों द्वारा राज सम्मान हो, व्यापारी दशा सुधरेगी, नौकरी दशा में लाभ उन्नति हो, स्त्री सुख में धन का खर्चा हो।

≡ ÷ ≑ आपकी सम्पूर्ण कामनायें पूर्ण हो यात्रा लाभकारी हो नष्ट वस्तु की प्राप्ति हो, मित्रों द्वारा लाभ खुशी हो।

≑ ÷ ⊥ धन आगमन के प्रति आपकी कामनायें पूरी होवें शासक वर्ग खुश रहे मगर केतु पूज्य है।

⊥ ÷ ≑ यात्रा लाभकारी हो, स्त्री से प्रेम हो कामवासना की वृद्धि हो शत्रु पर विजय हो, मित्र से कलह हो केतु पूज्य हैं।

द्वादश गेही शक्र ≑ त्रिकोण का फलादेश

≐ ≑ ⁝ यात्रा से लाभ उठाने के प्रति यदि प्रश्न है तो यात्रा से लाभ होगा। किसी प्रेमी का पत्र मिलेगा मान प्रतिष्ठा की चाहना है तो कामना पूरी होगी शत्रु पर विजय पाओगे।

⁝ ≑ ≐ कारोवार की वृद्धि हो, धन की प्राप्त हो रोगी को आराम मिले मगर मित्रों द्वारा कलह मिले वदनामी उठानी पड़े अन्त में विजई हो कलह मिटे।

≑ ≑ ≡ शुभ काम करके यश कमायें विदेशी आगमन से प्रसन्नता प्राप्त हो किसी उत्सव में सम्मिलित होकर धन का खर्च धर्म के कामों में करें पशु खरीद से लाभ हो।

≡ ≑ ≑ नेकी तथा यश प्राप्त हो स्त्री सुख हो बिगड़ी दशा सुधरे व्यापार में लाभ, नौकरी आदि में पदोन्नति हो सौख्य प्राप्त हो।

≑ ≑ ≡ कोई खुशी की सूचना मिले यदि कोई प्राणी किसी जुर्म में

फँस गया हो तो वह छूट जावे नष्ट वस्तु प्राप्त हो उन्नति के साधन प्राप्त हों।

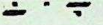 किसी गायब प्राणी के पहुँचने की सूचना मिले प्रसन्नता प्राप्त हो स्त्री की प्राप्ती हो, मगर यात्रा की इच्छा न करें हानिहोगी शनि पूज्य है।

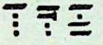 धन प्राप्त हो क्रय विक्रय में लाभ हो किस उत्सव में शामिल होवें मादक पदार्थ सेवन करना पड़े यदि गर्भवती के प्रति पूछते हो तो पुण्य होगा पर मंगल का दान करायें ताकि प्रसव सुख पूर्वक हो।

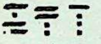 किसी नूतन कार्य का श्रीगणेश करें नवीन इमारत बनायें नष्ट वस्तु की प्राप्ती हो मित्रों द्वारा कामनायें पूरी हो।

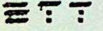 यात्रा करने से कष्ट हो विदेशी आगमन हो नष्ट वस्तु मिले किसी स्त्री के चुंगल में पड़कर बदनामी उठावें धन हानि भी हो मंगल की शान्ती कराने से बदनामी मिटे।

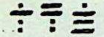 धन हानि हो किसी वयो वृद्धि के चले जाने से क्लेश तथा चिन्ता हो रोगी के प्रति भय हो माल के प्रति दावा करना पडे। विदेशी का आगमन हो।

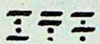 मित्रों का आगमन हो कोई शुभ काम करना पडे धन का खर्च शुभ काम में हो कामनायें परी हो व्यापार में लाभ रोगी निरोग होवे नष्ट वस्तु की प्राप्ती हो।

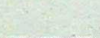 धन का आगमन हो स्त्री सुख बुजुर्गों का आशिर्वाद मिले कार्य सिद्ध हो यात्रा लाभकारी हो विदेशी आगमन हो।

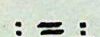 कारोबार की वृद्धि हो बिगड़ा काम सुधरे क्लेशों से छुटकारा पावे सुख सौख्य प्राप्त हो मान प्रतिष्ठा पावे।

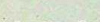 यात्रा में हानि उठावे अशुभ सूचनायें मिलने पर क्लेश हो

व्यापारिक दशा बिगडे चोरी का भय हो प्रत्येक कार्यों में हानि उठायें।

∸ ⩧ ÷ हैरानी तथा परेशानी होगी क्रय विक्रय से घाटा उठावें स्त्री की चाहना में धन हानि हो शनि राहु पूज्य है।

÷ ⩧ ∸ यात्रा करें नष्ट वस्तु से क्लेश हो धन का खर्च हो पति पत्नि में परस्पर विरोध हो राहु शनि पूज्य है।

त्रियोदश गेही ÷ त्रिकोण का फलादेश

÷ ÷ ≡ विवाह आदि में शुभ कार्य करें धन का खर्च शुभ काम में हो, व्यापार में उन्नती हो, राग रंग में समय नष्ट हो, कामनायें अपूर्ण तो मंगल पूज्य हो।

≡ ÷ ÷ यात्रा से हानि हो, कोई प्राणी के चले जाने से चिन्ता हो, स्त्री सुख में बाधा पड़े या किसी प्राणी के चले जाने से क्लेश हो।

∸ ÷ ⩧ माल नष्ट हो, रंज चिन्ता व्यथा को उठावें, व्यापारी दशा बिगड़े स्त्री के प्रति चिन्ता हो, कामवासना सतावे धन का खर्च हो शनि मंगल की शान्ती करावे क्लेश दूर हो।

⩧ ÷ ∸ स्त्री का वियोग सताये, हैरानी परेशानी उठानी पड़े। यात्रा से हानि हो, प्रत्येक कामनाओं की पूर्ति में बाधा पड़े राहु शनि भौम तीनों की शान्ती जरूरी है।

⩧ : ∸ धन प्राप्त के प्रति यात्रा करें, खोया हुआ प्राणी शीघ्र वापस हो मंगल तथा केतु की शान्ती कराने से बिगड़ी दशा सुधरे।

∸ ÷ ⩧ स्वास्थ सुधरे, बिगड़ी दशा सुधरे, खोया हुआ माल मिले यदि रोगी है तो आराम पावे, भागा हुआ प्राणी देर से आवे,

⁝ ÷ ⩧ धन की हानि हो, घरेलू तथा बाहरी कलह से परेशानी हो लड़ाई झगड़ा की नौबत आवे रोगी के लिये भी भय हो। खोया माल प्राणी अथवा माल कठिनाई से मिले।

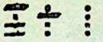 यात्रा की धुन लगी है, अगर जाने से धन हानि उठानी पड़ेगी इष्ट मित्रों द्वारा कलह हो प्रत्येक कामनायें अपूर्ण हों।

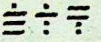 व्यापारी दशा सुधरे, नष्ट वस्तु की प्राप्त हो, कामनायें पूरीं हों कामवासना की प्रचुरता से धन का खर्च हो, स्त्री सुख हो।

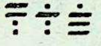 आशायें पूर्ण हो स्त्री सुख हो, यात्रा से भी लाभ होवे व्यापारिक दशा सुधरे शासक वर्ग भी प्रेम करै मान प्राप्त हो।

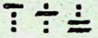 यात्रा में लाभ हो व्यापार में उन्नति हो, नौकरी पेशा वालों को अफसर गण मेहरवान हों उन्नति की आशा हो।

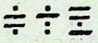 विषयवासना में समय नष्ट हो, मान मर्यादा में धब्बा लगे नौकरों द्वारा भी हानि तथा बदनामी हो, शनि मंगल की शान्ती कराने से दशा सुधरेगी।

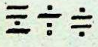 हानिकारी यात्रा हो, विषय वासना में लुप्त हो कलह बढ़े न्यायालय से हानि हो, आर्थिक समस्या बिगड़े।

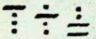 हाकिम वक्त से मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो, साधु महात्माओं के आशीर्वाद से सभी आशायें पूरी हो पर मंगल पूज्य है दान मंगल का कराये।

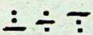 मान प्रतिष्ठा बढ़े, जीवका में उन्नति हो व्यापार में लाभ हो, अदालत से विजय प्राप्त हो शत्रु परास्त हो।

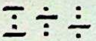 वेतु की यात्रा हो लाभ के वजाय हानि उठानी पड़े यदि खाना १३ में हो तो कलह बढ़े यदि खाना १२ में हो तो सारे बिगड़े काम बने।

चतुर्दश गेहौ त्रिकोण का फलादेश

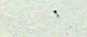 विवाह आदि शुभ कामों में समय नष्ट होवें, व्यापारी दशा सुधरे सैर सपाटा में दिल लगा रहे, मित्रों से मेल हो शत्रु परास्त हो।

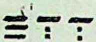 सफर लाभकारी हो क्रय विक्रय से व्यापारी दशा सुधरे नौकरी में सन्तोष दायक लाभ हो शासक वर्ग प्रसन्न हों।

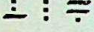 धन की प्राप्ति के लिये नाना प्रकार के प्रयत्न करें, खोया हुआ माल मिले, पति पत्नी में परस्पर प्रेम बढ़े। इच्छायें पूरी हो।

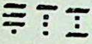 आपके काम में कोई आदमी बदी करके धन हानि करायेगा बदनामी घाते में होगी, किसी दुष्ट स्त्री द्वारा बदनामी उठायें शनि पूज्य है।

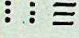 व्यापारी दशा सुधरे शासक वर्ग प्रेम से सहानुभूति का बर्ताव करें किसी माल के पीछे दावा करने की नौबत आवे पर विजय पावेंगे।

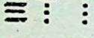 यदि यात्रा करते हैं तो हानि उठायें पशुओं द्वारा क्षति उठानी पड़े, खोया हुआ माल न मिले, पर क्रय विक्रय द्वारा लाभ हो।

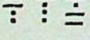 कलह लड़ाई झगड़ा बढ़े, पर स्त्री सुख प्राप्त होवे। धर्म के काम में धन का खर्च हो चोट लगने का भय है।

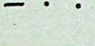 प्रेमी मिलने से चित्त में प्रसन्नता हो, आपकी कामनायें पूरी होवे। यदि शक्र खाना १२ में हो तो कलह की अग्नि बढ़े मंगल की शान्ती करावें।

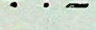 धन की प्राप्त हो, यात्रा लाभकारी हो, सुख शान्ती प्राप्त हो चिरकाल के बाद बिगड़ी दशा सुधरे।

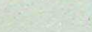 खोया हुआ माल मिले, रोजी रोजगार में बरकत हो शत्रु परास्त हो उन्नति के साधन प्राप्त हों।

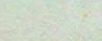 रंज कलह पैदा हो, नाना प्रकार के संकटों का सामना करना पड़े मित्रों द्वारा भी कलह हो अपने ही लोग बदी की चेष्टा कर।

÷ T ≟ अफसरों के आदेशानुसार यात्रा करनी पड़े मान प्रतिष्ठा बढ़े शत्रु परास्त हों, स्त्री तथा सन्तान सुख में मंगल बाधक हो।

⊥ T ≑ यदि रोगी है तो दशा उसकी सुधरे मगर घेरेलू चिन्तायें सतायें रहें, पशु आदि के नष्ट होने से क्लेश बढ़े शनि केतु पूज्य है।

≑ T ⊥ यात्रा करना पड़ेगी धन हानि होगी जो काम करें हानि हो घेरेलू कलह बढ़ती जावे स्त्री द्वारा कलह हो शनि केतु पूज्य है।

≟ T ÷ नाना प्रकार की हैरानी परेशानी उठावें भूमि के पीछे झगड़ा हो शत्रु व्याकुल करें राहु खराब है शान्ती करावें।

÷ T ≟ यदि रोगी है तो भय है वह परहेजी से बचाये राहु की शान्ती कराये व्यापार में घाटा हो शत्रु चारों ओर से सतायें।

पन्द्रहवे गेही शक्र ⁞ के त्रिकोण का फलादेश

≝ ⁞ T मान प्रनिष्ठा प्राप्त होवे शासक वर्ग प्रसन्न हो उन्नति प्राप्त हो लाभदायक यात्रा करें। यदि कोई प्राणी लापता है तो शीघ्र आवे।

T ⁞ ≝ धन का आराम सरलता हो विदेशी शीघ्र आवे रोगी को आराम मिले शत्रु परास्त पो वुद्धिका विकास हो धर्म के कामों में रूची हो।

⊥ ⁞ ≡ नाना प्रकार के संकट पैदा हो जो बेचैन हो आशायें अपूर्ण हो परस्पर विरोध ले समय आप के अनुकूल नहीं सन्तोष करो शनि केतु की शान्ती करायें।

≡ ⁞ ⊥ लड़ाई झगड़े में धन हानि हो और घर का माल भी नष्ट हो स्त्री कें प्रति कलह हो कोई प्राणी वदी की चेष्टा करे शनि केतु पूज्य है।

≑ ⁞ ≐ धन प्राप्त के हेतु यात्रा करने की नौबत आवे व्यापारी दशा

डाँवा डोल है रोगी का रोग बढ़े दवा काम न करै राहु की शान्ती कराने से दशा सुधरे ।

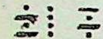 प्रत्येक कार्यों में सफलता मिले काम वासना में रुचि विशेष हो नष्ट वस्तु मिले यदि विजय चाहते हो तो राहु की शान्ती करायें ।

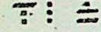 फ्लु व्यापार से लाभ हो शत्रु परास्त हो । नूतन इमारत बनने में विघ्न हो, मित्र भी शत्रुता करै घर खोया माल न मिले रोगी की दशा सुधरे ।

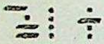 काम वासना में रूची विशेष हो, स्त्री प्रेम हो, स्वास्थ्य की दशा बिगड़े अकारण बदनामी आपको मिले पर साधु पुरुष का आशिर्वाद फली भूत हो ।

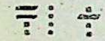 यदि शत्रु पर विजय पाने की इच्छा है तो विजय होगी गर्भ वती को पुत्र होगा । व्यापार में उन्नति होगी—स्त्री सुख सन्तान सुख भी हो धन धान्य की वृद्धि हो ।

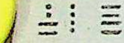 धन हानि होवे यात्रा का विचार न करै अशुभ भावनायें पैदा हो यदि खाना ४ में हो तो इसी स्थान पर लाभ होगा कामनाओं की पूर्ति हो ।

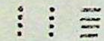 स्त्रियों के समूह से कलह तथा धन हानि हो व्यापार में लाभ हो, अफसरों द्वारा मान प्राप्त हो यात्रा लाभकारी हो शरीर कष्ट से बचें ।

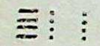 नाना प्रकार की चिन्तायें घेरे रहें शत्रु अकारण पैदा हो व्यापारिक दशा डाँवा डोल रहे । स्त्री द्वारा बदनामी का भय

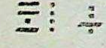 आपकी कामनायें पूरी होंगी नौकरी में पदोन्नति हो व्यापार में लाभ हो सन्तान सुख प्राप्त हो यदि रोगी है तो रोग से छुटकारा पावे ।

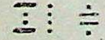 प्रेमी मिलन हो, स्त्री सुख हो बिगड़ा काम सुधरे गर्भवती के प्रति प्रसव सुख पूर्वक हो भाग्यशाली पुत्र हो ।

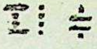 आपको व्यापार की दशा गडबडी सी चलेगी नुकसान की अशुभ दृष्टि से मानसिक चिन्ता पैदा हो रोगी प्रेत बाधा में ग्रसित हो शान्ती पाठ करायें ।

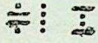 स्त्रियों का वृन्द हों कलह पैदा हो मित्र भी शत्रु बने धन हानि हो उन्नति में बाधा पडेगी शनि पथ्य है ।

सोल्हवे गेही शकल ≣ त्रिकोण का फलादेश

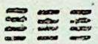 लडाई झगडे की नौबत आवे मित्रों की सहायता लेनी पड़ी उच मित्रों द्वारा कलह की शान्ती हो । बिगडी दशा सुधरे ।

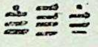 बिगडी दशा सुधरे व्यापोर में लाभ कृषि व्यापार में लाभ हो क्रय विक्रय से हानि अदालत का नौबत आवे स्त्री सुख हो यात्रा लाभकारी हो ।

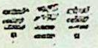 अकारण बना बनाया काम बिगडे मित्र भी शत्रु बने धनहानि होवे झूठा कलंक लगे परेशानि बढे शनि की शान्ती करना जरूरी है ।

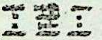 मित्रों द्वारा यश मान प्राप्त हो प्रेमी मिलन सुगमता पूर्वक हो राज सम्मान प्राप्त हो किसी विदेशी का पत्र मिले खुशी हासिल हो ।

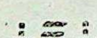 साधु पुरुष द्वारा मन को शान्ती हो राज सम्मान हो व्यापार में लाभ हो हाकिम मेहरबान हो रोगी रोग से छुटकारा पावे झगडो के सुलझाने में समय व्यतीत हो ।

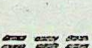 बहुत दिनों की बिगड़ी दशा सुधरे शत्रु परास्त हो व्यापार में उन्नती हो नूतन कारोबार में रूची हो राज दरबार से लाभ हो कामनायें पूरी हो ।

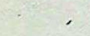 मित्र सहानुभूती का बर्ताया करें स्त्रियों का किलोल सुख पूर्वक हो धन धान्य की वृद्धि हो नूतन मकान बनानेमें सुविधा हो ।

≟ ≡ ≟ मक्कार स्त्री द्वारा कामना की पूर्ति हो पर अन्त में बदनामी हाथ आवे। भाइयों में विरोध से धन हानि हो समय का परिवर्तन हो मंगल पज्य है।

÷ ≡ ÷ आपकी कामना पूर्ति होवे स्त्री सुख हो गर्भवती पुत्रवती हो राग रंग में समय नष्ट होवे यदि शक्ल ÷ खाना ५ में हो तो काम वासना में फँसे रहें।

÷ ≡ ÷ रंज व कलह अकारण पैदा होवे धन की हानि होवे पशु खोने का भय है यदि सक्ल ÷ प्रस्तार में कई जगह हो तो संकटो का सामना करना पड़े।

÷ ≡ ÷ नष्ट वस्तु का मिलना कठिन है पर रोजी की जीवका में वृद्धि हो, कन्या की शादी में धन का खर्चा हो इष्ट मित्रों द्वारा सम्मान हो शनि पूज्य है बिगड़ी दशा सुधरेगी।

⁝ ≡ ⁝ यात्रा लाभकारी हो, मित्रों द्वारा सम्मान हो, रोगी को आराम देर से हो प्रसव गर्भवती के कन्या हो, कपड़ों की चोरी होने का नौबत आवे।

⊤ ≡ ⊤ क्रय-विक्रय में लाभ हो, व्यापार की दशा सुधरे पदोन्नति होवे। गड़ा धन प्राप्त हो, रोगी देर से आराम पावे, कामनायें पूरी हों।

⊥ ≡ ⊥ नाना प्रकार की चिन्ताय घेरे रहें, शरीर को कष्ट हो धन हानि हो व्यापार में क्षति उठानी पड़े, रोगी देर से आराम पावे केतु पूज्य है।

÷ ≡ ÷ आपका भाग्योदय हो, धन लाभ हो, व्यापार में वृद्धि हो, अफसरों की कृपा हो गर्भवती कन्या जने यदि ÷ खाना २ में हो तो विदेशी आगम हो।

÷ ≡ ÷ आपके व्यापार की दशा बिगडे धन की हानि हो गर्भवती के पुत्र हो लड़ाई झगडे लगे रहें। मान भंग हो राहु पूज्य है

—:०:—

ज्योतिष की पुस्तकें

कृपया आर्डर भेजकर वी.पी. द्वारा मंगावें।

[illegible]चिन्तामणि भाषा-टीका	५०.००
[illegible] भाषा-टीका	४०.००
[illegible] रहस्य भाषा-टीका	४०.००
[illegible]चन्द्रिका भाषा-टीका	३०.००
[illegible]	५०.००
[illegible] भाषा-टीका	३०.००
[illegible] मध्यपाराशरी	
[illegible] टीका सहित	३०.००
[illegible] (अवकहडाचक्र)	
[illegible] भाषा-टीका	३०.००
मुहूर्त[illegible] भाषा-टीका	३०.००
[illegible] भाषा-टीका	३०.००
[illegible] भाषा-टीका	१६.००
[illegible] भाषा-टीका	१६.००
[illegible] भाषा-टीका	१२.००
घाघ भड्डरी की कहावतें बड़ा	२०.००
चमत्कार चिन्तामणि	८.००
[illegible]चक्र भाषा-टीका	३.००

आर्डर द्वारा पुस्तके वी.पी. से मँगाने का पता-

ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी।